श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
स्थापित - 1906

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

नवम्बर 2024, पृष्ठ : 52, मूल्य 6:00 रूपये

।। श्रमण संघ जयवन्त हो ।।

।। श्रमण संघ हो अविचल मंगल ।।

जय आत्म | जय आनन्द | जय देवेन्द्र | जय शिव | जय महेन्द्र

चातुर्मास समापन पश्चात्

परम श्रद्धेय पूज्य संत - साध्वी जी महाराज सा.

एक स्थल से दूसरे स्थल, ग्रामों, शहरो में चरण स्पर्शना से धर्म - जागृति

शासन प्रभावना सतत् प्रेरणा से संघ समाज को

सन्मार्ग सत्कार्य प्रकाशमय मार्गों की ओर आरूढ़ रखेंगे

अतः श्रावक - श्राविकाओं का नैतिक कर्त्तव्य बनता है कि विहार, गोचरी

वैय्यावच्च सेवा का विशेष ध्यान रखें, उनके प्रति सदैव कृतज्ञ भाव रखते हुए

सकारात्मक साताकारी माहौल वातावरण निर्मित रखें यही सर्वश्रेष्ठ सेवा है...

वैय्यावच्च सेवा : सर्वोत्तम जिनशासन सेवा

काम किया है! काम करेंगे!!
कॉन्फ्रेंस का नाम करेंगे!
नीयत नीति साफ हमारी!
बात ये खुल्ले आम करेंगे!!

आपके विश्वास, आपके स्नेह
आपकी आशा के अनुरूप

सकारात्मक ऊर्जा और उत्साह के पर्याय

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद प्रत्याशी

दानवीर युवा समाजसेवी

भाई श्री अतुल जैन

को

आपका साथ
आपका समर्थन
आपका सहयोग
आपका आशीर्वाद
प्रदान कीजिए!

हमें विश्वास है, आप हमारे साथ हैं।
भाई अतुल के सिर पर आपका हाथ है।।

निवेदक

जैन एकता ग्रुप, समस्त मित्र एवं सहयोगी

Advt.

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 68 अंक - 11 नवम्बर - 2024 मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक
अतुल जैन, दिल्ली

सम्पादक मण्डल

संजय बाफना जैन, अहमदनगर
83298 28560

एन. गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई
93826 36363

केन्द्रीय कार्यालय
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
011-23363729, 23365420
+91 90197 31906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : www.jainconference.org

SHRI ALL INDIA S S JAINCONFERENCE
aissjc137342@cnrb
CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

अध्यक्षीय	- श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	09
निर्वाण कल्याणक पर...	- आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.	10-11
जैन कॉन्फ्रेंस के वर्ष 2025-27 के कार्यकाल चुनाव संबंधित अधिसूचना		12-14
जैन कॉन्फ्रेंस द्वितीय ज़ोन से राष्ट्रीय अध्यक्ष पद (2025-27) एवं पांचों ज़ोन (जैन 14 प्रांत) से 14 प्रांतीय अध्यक्षों एवं 192 राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों (2025-27) हेतु चुनाव प्रक्रिया संबंधित नियम-उपनियम कार्यकाल 2025-27		15-23
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस चुनाव (2025-27) राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रांतीय अध्यक्ष एवं प्रांतों से राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों के चुनाव हेतु प्रांतीय चुनाव अधिकारी व प्रांतीय सह-चुनाव अधिकारियों तथा सभी मतदान स्थलों का विवरण		23-31
आचारांग सूत्र	- युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा.	32-34
सुसंस्कार से जीवन ...	- उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म.सा. 'कमल'	35-39
जैन श्रमण संघ	- उपाध्याय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.	40-41
प्रवर्तक श्री शुक्लचंदजी म.सा.-	स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति	42-43
तत्त्वार्थ सूत्र	- प्रवर्तक श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.	44-45
विकट समस्याओं से...	- श्री जसवंत जैन, दिल्ली	46
नवम्बर माह में वैय्यावच्च योजना द्वारा किये गये कार्यों की रिपोर्ट		47
अल्पसंख्यक योजना द्वारा किये गये कार्यों की रिपोर्ट		48-50
समाचार प्रकाश		50
शोक समाचार		50

अस्वीकरण : *समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।*

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश',
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विनयमुनिजी म. सा. 'भीम'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना - चेयरमैन	98505 00015	07.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
02.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035	08.	श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा	94141 13056
03.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400	09.	श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर	92264 72284
04.	श्री प्रकाश बुरड़ जैन, बैंगलोर	98456 71449	10.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336	11.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
06.	श्री जसवंत जैन, नई दिल्ली	98104 35108	12.	श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत	98251 35744

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2021-24

राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई 98410 30035

राष्ट्रीय चेयरमैन

श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली 98100 45440

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री पारसमल मोदी जैन, मुंबई 98200 60530

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री अशोककुमार मेहता जैन, सूरत 98251 19082

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद 98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली 98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली 93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर 98930 32777
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक 94239 62818

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री प्रकाश धारीवाल जैन, घोड़नदी, पुणे 98222 42795
श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली 98111 97000
श्री रमेश भंडारी जैन, इंदौर 93021 03817
श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर 92264 72284
श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर 93412 32573

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री दिनेशकुमार भलगट जैन, चेन्नई 98402 64888

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री पन्नालाल कोठारी जैन, बैंगलोर 98440 11908
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, सिकंदराबाद 92463 61008
श्री सुरेशकुमार लुनावत जैन, चेन्नई 98842 21003
श्री सज्जनराज मेहता जैन, चेन्नई 94440 66089
श्री संजीव जैन, लुधियाना 98140 25325
श्री संदीप कुमार जैन, सिरसा, हरियाणा 92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुजफ्फरनगर 98370 67082
श्री प्रशांत जैन, नई दिल्ली 98101 21450
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली 99113 00888
श्री डिपिन जैन, इंदौर 78699 99222
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली 98113 58110
श्री सुरेश कुमार जैन, दिल्ली 98112 39872
श्री गुमानसिंह पीपारा जैन, कोलकाता 98300 30774
श्री राजेन्द्र नथमल मुथा जैन, जालना 70206 36161
श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन, मालेगांव 98239 55515
श्री बालासाहेब धोका जैन, पुणे 98220 39728
श्री किशोर खाबिया जैन, मुंबई 98200 48618
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, शिरूर-घोड़नदी 87882 35525
श्री रमेश कुमार पुनमिया जैन, पालघर 94030 09639
श्री शंभूलाल ललवाणी जैन, अहमदाबाद 99783 47800

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अतुल जैन, नई दिल्ली 98110 75336

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98841 67400

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष

श्री जसवन्त जैन, नई दिल्ली 98104 35108

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पुणे 98505 00015
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चन्द्रशेखर लुंकड़ जैन, पुणे 98903 01635

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेश मुथा जैन, बैंगलोर 93428 63447
राष्ट्रीय मंत्री : श्री ज्ञानचंद लोढ़ा जैन, बैंगलोर 98452 21302

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री हुकमीचंद कोठारी जैन, सूरत 70161 20162
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई 98201 11839

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय बाफना जैन, अहमदनगर 83298 28560
राष्ट्रीय मंत्री : श्री किशोरकुमार दलाल जैन, बैंगलोर 94480 81348

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर 99455 41200
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री जे. रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर 93425 97955
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु 98220 31788

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेन्द्र ओस्तवाल जैन, ब्यावर 98280 54770
राष्ट्रीय मंत्री : एडवोकेट डॉ. अर्पित छाजेड़ जैन, ब्यावर 92149 63701

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नन्दकुमार भटेवरा जैन, कोल्हार भगवती 98606 67000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनसुखलाल गुगले जैन, घोड़नदी (शिरूर) 98224 47166

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर 93412 21774
श्री महेन्द्र कुमार मुणोत जैन, बैंगलोर 98450 73276
श्री संपतराज कोठारी जैन, सिकंदराबाद 92461 58452
श्री धर्मीचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98410 59884
श्री राजेन्द्रकुमार बोहरा जैन, चेन्नई 98406 00003
श्री मुकेश कुमार जैन 'सांड', मोहाली 93185 93599
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना 98150 20661
श्री सुभाष जैन 'लिली', मुक्तसर 98146 99393
श्री रविंदर जैन, पानीपत 98960 92861
श्री पुष्कर जैन, मेरठ 94122 06374
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली 93509 16150

राष्ट्रीय मंत्री :

श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री अंबालाल लोढ़ा जैन, नाथद्वारा	95295 40800
श्री सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इंदौर	99818 50900
श्री वीरप्रकाश जैन, कोलकाता	93310 35450
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	92258 31765
श्री सुरेश गुंदेचा जैन, रत्नागिरी	98817 41101
श्री बंसीलाल सूर्या जैन, सूरत	93280 97429
श्री प्यारचन्द कोठारी जैन, सूरत	93745 35686

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री :

एडवोकेट श्री दिलीप खिंवसरा जैन, औरंगाबाद	94222 05434

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री गौतमचंद धारीवाल जैन, बैंगलोर	98451 49443
श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
श्री दीपक सूर्या जैन, भीलवाड़ा	98293 47007
श्री आनंद सुराणा जैन, जालना	94222 18747
श्री गणेश ओसवाल जैन, पुणे	99218 79613

राष्ट्रीय संगठन मंत्री :

श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री दिनेश सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री मदनलाल जैन 'शामड़ी', दिल्ली	98737 76896
श्री कांतिलाल जैन, उदयपुर	93220 90220
श्री प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	73877 86999

:: प्रांतीय अध्यक्ष ::

श्री पुखराज मेहता जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98446 77725
श्री सुरेन्द्र कुमार कटारिया जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98480 38094
श्री गौतमचंद कटारिया जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	96770 43212
श्री अरुण जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98155 66885
श्री विनय कुमार जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	83968 00000
श्री अमितराय जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	98373 94448
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री निर्मल पोखरना जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94141 67544
श्री ललित कुमार छल्लाणी जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	98260 27927
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मदनलाल कुंदनमल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	98223 76898
श्री सुनील बाफना जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	98505 67010
श्री जयंतिलाल कुकड़ा जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98251 35744

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री सुरेंद्रकुमार आंचलिया जैन (कर्नाटक)	98861 86528
श्री राजेश भंडारी जैन (तेलंगाना)	79871 61614
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री अजय जैन (हरियाणा)	94161 22219
श्री भास्कर जैन (उत्तर प्रदेश)	98972 33877
श्री संजय जैन (दिल्ली)	99900 22221
श्री शांतिलाल मारु जैन (राजस्थान)	94141 48875
श्री संतोष धारीवाल जैन (मध्य प्रदेश)	98060 44110
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री संतोष चोरड़िया जैन (महाराष्ट्र)	99225 44744
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन (मुंबई-पुणे)	93710 89896
श्री आकाशकुमार मादरेचा जैन (गुजरात)	94287 45537

-: आवश्यक सूचना :-

श्री ऑल इंडिया श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारी, समस्त योजना अध्यक्ष एवं मंत्रीजी, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री, समस्त प्रांतीय अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री आदि से नम्र निवेदन है कि जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ गतिविधियों के जो भी समाचार हों, वे आपके द्वारा अथवा आपके अधिकृत पदाधिकारी द्वारा प्रत्येक महीने की 30 तारीख तक समस्त जानकारी के साथ संक्षिप्तः रूप से भिजवाने का श्रम करें, अधिकृत रूप से प्रेषित सामग्री को जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ प्रमुखता दी जायेगी।

– सम्पादक मण्डल : जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क राशि

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1500/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 2500/-
पति या पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने के लिए	रु. 1000/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता 12 वर्ष	रु. 1000/-

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - महिला शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

सौ. पुष्पा कीमती जैन, हैदराबाद	99639 11219
सौ. रतनबाई मेहता जैन, बैंगलोर	93412 32857
सौ. नीलम ओसवाल जैन, दिल्ली	93112 45440
सौ. बेबीबेन डागलिया जैन, मुंबई	93203 39560

राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. पुष्पा राजेन्द्र गोखरु जैन, भीलवाड़ा	94141 84005

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. विमल सुदर्शन बाफना जैन, पुणे	88050 80002

राष्ट्रीय उपाध्यक्षा

सौ. जतनबाई कांकरिया जैन, हैदराबाद	92901 19207
सौ. संतोष आच्छा जैन, बैंगलोर	97406 17633
सौ. संतोष बोहरा जैन, बैंगलोर	99005 36047
सौ. पुष्पा संचेती जैन, चेन्नई	84282 24444
सौ. बबीता रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 92862
सौ. सुमित्रा जैन, दिल्ली	99715 65853
सौ. संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
सौ. इंदु जैन, कोटा	94608 50363
सौ. लाडजी मेहता जैन, भीलवाड़ा	87641 22999
सौ. संतोष सिंघवी जैन, भीलवाड़ा	94138 60891
सौ. आशा साम्भर जैन, नीमच	94066 59600
सौ. अंतरदेवी बाघमार जैन, कलकत्ता	93317 15789
सौ. अनिता लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	98816 88988
सौ. कल्पना धारीवाल जैन, नाशिक	82081 74668
सौ. लता पगारिया जैन, पुणे	90287 36831
सौ. सुरेखाजी कटारिया जैन, पुणे	94223 27041
सौ. स्वीटी चण्डालिया जैन, सूरत	94083 52726
सौ. प्रभावती मुथा जैन, पुणे	94220 79908
सौ. लाडजी सिंघवी जैन, मुंबई	90049 67285

राष्ट्रीय महामंत्री

सौ. आरती (प्रेमलता) बुरड़ जैन, बैंगलोर	99451 24476

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा

सौ. सुषमा धाकड़ जैन, पालघर	99878 52656

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्षा

सौ. मीना तातेड़ जैन, वलसाड़	81419 17775

राष्ट्रीय मंत्री

सौ. चन्द्रकला कोठारी जैन, हैदराबाद	97040 66066
सौ. प्रेमा बोहरा जैन, बैंगलोर	99001 38806
सौ. सपना सिंघवी जैन, बैंगलोर	99168 38735
सौ. पिंकी सुराणा जैन, चेन्नई	97907 44221
सौ. आरती सुराणा जैन, सिकन्द्राबाद	86883 60361
सौ. मोनिका जैन, लुधियाना	78886 65752
सौ. वीणा जैन, दिल्ली	78389 00380
सौ. मधु लोढा जैन, भीलवाड़ा	99284 59794
सौ. सुशीला लोढा जैन, ब्यावर	99500 21210
सौ. नैना नौलखा जैन, उदयपुर	94148 08250
सौ. पुष्पा बागरेचा जैन, कोटा	90790 88691
सौ. भारती चंगेड़िया जैन, इचलकरंजी	99223 59071
सौ. तृप्ति जैन, अहमदनगर	89999 18531
सौ. नन्दा कांकरिया जैन, औरंगाबाद	88888 91223
सौ. कंचन सिंघवी जैन, मुंबई	92243 31981
सौ. सुशीला लोढा जैन, मुंबई	99203 67337
सौ. मन्जू सिंघवी जैन, मुंबई	99307 55670
सौ. सूरज वीरवाल जैन, उदयपुर	94604 45044
सौ. अंजू सिरोया जैन, वापी	98241 40086

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

सौ. प्राची मुगदिया जैन, औरंगाबाद	82755 13888

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

सौ. ज्योति गांधी जैन, अहमदनगर	96578 67583
सौ. शोभा जैन, इन्दौर	91793 49386
सौ. बसंती चोपड़ा जैन, बैंगलोर	97396 73194
सौ. वन्दना छाजेड़ जैन, भीलवाड़ा	98280 82728
सौ. शुभ आराधना हिंगड़ जैन, अहमदाबाद	99249 93749

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

सौ. नगीना मण्डोत जैन, बैंगलोर	99002 81067
सौ. संगीता छल्लानी जैन, बैंगलोर	97311 06160
सौ. ममता वडाला जैन, मुंबई	98672 62323
सौ. सरोज ढेलावत जैन, निम्बाहेड़ा	94610 09650
सौ. मधु जैन, लुधियाना	84374 14111

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. मन्जू तातेड़ जैन, मुंबई	77381 69999
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. पिंकी नाहर जैन, मुंबई	97571 95533

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. आजाद सांड जैन, चंडीगढ़	93564 52299
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. सुमित्रा बनवट जैन, सूरत	96019 59035

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता लोढा जैन, नाथद्वारा	75973 47706
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. बरखा कोठारी जैन, सूरत	99049 30907

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. दर्शना तलेसरा जैन, विरार	80803 74525
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. प्रतिभा डांगी जैन, नवी मुंबई	98198 17719

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता राजावत जैन, मुंबई	99878 54838
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. मनीषा कागरेचा जैन, मुंबई	98920 11619

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. शिल्पा पामेचा जैन, उदयपुर	94146 82462
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. नयना सिसोदिया जैन, उदयपुर	91662 11412

विहार धाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. ज्योति गांधी जैन, नारायणगाँव, पुणे	98811 23552
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. लीला खरवड़ जैन, कलवा मुम्ब्रा, ठाणे	99696 02393

जैन प्रकाश मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख भेजने हेतु आग्रह

व्हाट्सएप्प नं. - 90197 31906 / 70197 31906 अथवा ई-मेल - aissjc1906@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - युवा शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री पद्म चन्द आच्छा जैन, बैंगलोर 99800 59421

निवर्तमान राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री सागर सांखला जैन, पुणे 88880 90999

राष्ट्रीय वरिष्ठ युवा उपाध्यक्ष :

श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद 93767 37111

राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष :

श्री राकेश लुंकड़ जैन, बैंगलोर	99802 84908
श्री भरत कोठारी जैन, बैंगलोर	93796 77127
श्री विशाल बोरा जैन, सिकन्द्राबाद	95500 02225
श्री विमल खाबिया जैन, चेन्नई	99403 25649
श्री श्रेयांस जैन, लुधियाना	98557 99909
श्री अंश रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 93861
श्री नितिन राय जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री लोकेश धाकड़ जैन, उदयपुर	98280 50143
श्री विकास जैन, सूरत	93770 41606
श्री दिनेश हंसमुख बंबकी जैन, दापोली	94223 82620
श्री अंकित अनिल संचेती जैन, नासिक	83800 00208
श्री प्रितेश प्रदीप गादिया जैन, शिरूर	98229 82244
श्री वैभव तातेड़ जैन, इन्दौर	98264 81900
श्री सागर प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	90289 59000

राष्ट्रीय युवा मंत्री :

श्री मुकेश बाबेल जैन, बैंगलोर	98444 13227
श्री नवीन कावड़िया जैन, हैदराबाद	98851 85598
श्री आशीष रांका जैन, चेन्नई	98400 85846
श्री कुणाल जैन, लुधियाना	99140 14010
श्री सुमित जैन, करनाल	98124 75000
श्री पुनीत जैन, गाज़ियाबाद	95013 67207
श्री पानिल पोखरणा जैन, उदयपुर	97722 67444
श्री अश्विन गांग जैन, रतलाम	94245 29556
श्री कमलेश मादरेचा जैन, अहमदाबाद	98258 08580
श्री किशोर बाफना जैन, बैंगलोर	98865 02636
श्री लोकेश जैन, दिल्ली	98682 03098
श्री विपुल ढाबरिया जैन, इन्दौर	94250 64243
श्री केतन दुग्गड़ जैन, पुणे	98605 56838
श्री सुनील कुमार बम्ब जैन, बैंगलोर	98455 53001
श्री सुभाष डंक जैन, हुबली	99002 69151

राष्ट्रीय युवा प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री अजय धोका जैन, बैंगलोर	96118 28888
श्री नीलेश कांकरिया जैन, वाघोली	97672 94085
श्री विनय जैन, लुधियाना	95010 03864

राष्ट्रीय युवा संगठन मंत्री :

श्री राकेश बोहरा जैन, बैंगलोर	98443 27580
श्री मुकेश जैन, लुधियाना	98156 09170
श्री गौरव कोठारी जैन, वडगांवशेरी	90284 43181

राष्ट्रीय युवा महामंत्री :

श्री प्रमोद सिंघी जैन, बैंगलोर 98441 17766

राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष :

श्री मनोज सोलंकी जैन, बैंगलोर 98441 62930

राष्ट्रीय युवा सह-कोषाध्यक्ष :

श्री प्रवीण सिंघी जैन, बैंगलोर 98443 31009

राष्ट्रीय युवा कानूनी सलाहकार मंत्री :

श्री विशाल छल्लाणी जैन, बैंगलोर 98861 84743

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - प्रवीण बोहरा जैन, सोजत सिटी 98295 00211
राष्ट्रीय मंत्री - श्री विवेक जैन, रोहतक 95412 12000

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विपुल जैन, दिल्ली 98117 40074
राष्ट्रीय मंत्री - श्री कपिल बडाला जैन, नाथद्वारा 94141 71246

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विशाल बोहरा जैन, बैंगलोर 89041 41411
राष्ट्रीय मंत्री - श्री अभिषेक डुंगरवाल जैन, बैंगलोर 89705 60900

प्रांतीय युवा अध्यक्ष :

श्री विकास कोठारी जैन, कर्नाटक	98458 50155
श्री पवन कटारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98491 59292
श्री आनंद बालेचा जैन, तमिलनाडु	98413 68579
श्री दीपांशु जैन, पंजाब	88470 11852
श्री प्रवेश जैन, हरियाणा	92116 00001
श्री सुविनित कुमार जैन, उत्तर प्रदेश	87917 03503
श्री दिनेश जैन, दिल्ली	99996 58350
श्री निर्मल सिंघवी जैन, राजस्थान	94141 63710
श्री संदीप गोखरु जैन, मध्य प्रदेश	94250 63976
श्री रोशन चोरड़िया जैन, महाराष्ट्र	94031 51617
श्री बाबूलाल बडोला जैन, मुंबई-पुणे	79776 61263
श्री मंजीत कोठारी जैन, गुजरात	93745 44138

प्रांतीय युवा महामंत्री :

श्री मनोज बोहरा जैन, कर्नाटक	98444 68490
श्री श्रेणिक राज डफारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98490 95411
श्री मनीष रांका जैन, तमिलनाडु	98402 74685
श्री अभय जैन, पंजाब	99156 01005
श्री अतिमुक्त जैन, हरियाणा	94660 51369
श्री विकास जैन, उत्तर प्रदेश	93193 13717
श्री विनीत जैन, दिल्ली	98993 64620
श्री मनीष दाणी जैन, राजस्थान	94148 31484
श्री प्रदीप छल्लाणी जैन, मध्य प्रदेश	98260 87909
श्री पवन कटारिया जैन, महाराष्ट्र	92267 58479
श्री मनोज मेहता जैन, मुंबई-पुणे	93211 11837
श्री आशीष पोखरणा जैन, सूरत	93745 44139

अध्यक्षीय उद्‌गार

सभी सहयोगियों का हृदय से आभार !

E-mail : rjachallani@gmail.com

- आनंदमल जवरीलाल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष - जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

आदरणीय पाठकगण, सादर जय जिनेन्द्र !

संपूर्ण देश में श्रमण संघीय चातुर्मास समापन की ओर हैं। वहीं श्रमण संघ की मातृ संस्था जैन कॉन्फ्रेंस का भी वर्तमान सत्र समापन की ओर है। यह संयोग भी कहा जा सकता है और नये संकल्प की भी भूमिका कहा जा सकता है। इस सुखद सहयोग का कारण स्पष्ट है कि हम संपूर्ण देश में एक आध्यात्मिक, एक सामाजिक क्रांति को सात्विक कार्यों के साथ, संकल्पित अनुष्ठानों के साथ जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी परंपरा के रक्षण हेतु इतना यशस्वी बनाना चाहते हैं, जिससे हमारे पूज्य साधु-साध्वीजी ही नहीं हमारे श्रावक-श्राविका भी गौरवान्वित अनुभव करें।

श्रमण संघीय चातुर्मासों के अनेक स्थानों पर मेरा जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। हमारे त्यागी तपस्वी, ज्ञान-ध्यानी साधु-साध्वीजी महाराज का मंगल आशीर्वाद सहित मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। अनेक बातें गुरु भगवंतों ने हमें प्रेरित करने हेतु कही, वहीं कुछ ऐसे पक्ष है जो हमने अपने श्रद्धा पुरुषों के समक्ष रखकर अपनी भावनाओं को स्पष्ट किया।

आनंद का विषय है कि हर चर्चा बड़े सौहार्दपूर्ण और वात्सल्य भाव के वातावरण में संपन्न हुई। जिस प्रकार के हमारे कार्य महापुरुषों ने देखे-सुने उसके प्रति जो साधुवाद हमें प्राप्त हुआ वह मेरे लिये ही नहीं, मेरी सारी टीम के लिये इतना फलदायी है कि हम इन आशीर्वादों के सहारे ही भविष्य में भी और नई उंचाईयाँ संघ-समाज में स्थापित कर सकेंगे ऐसा विश्वास हमारे हृदय में बना है।

जैसा कि आप जानते हैं कि श्रमण संघ और जैन कॉन्फ्रेंस के संबंध अन्योनाश्रित है। इन संबंधों में धर्म ही एकमात्र ऐसा रिश्ता है जो हमें जोड़ता भी है और हमें सिखाता भी है। धर्म की इसी प्रेरणा से हमारे मन में सेवा का वैय्यावच्च का, दान सहयोग का भाव पनपता है और हम इसे बेशक सामाजिक कार्य मानते हैं, लेकिन इसका आधार केवल धर्म ही होता है। अतः हम यह मानते हैं कि हम जो कुछ सेवा कर रहे हैं वह धर्मवृद्धि हेतु कर रहे हैं, धर्म के सुसंचालन हेतु कर रहे हैं, धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु कर रहे हैं।

प्रकारांतर में यदि विचार करेंगे तो प्रत्येक समाजसेवी जो जैन कॉन्फ्रेंस से जुड़ा है या जैन कॉन्फ्रेंस के माध्यम से सेवा कर रहा है, उसके मन में निश्चित रूप से प्रबल धर्म आस्था है। यह धर्म आस्था यदि नहीं होती तो न हम सामाजिक विकास के काम कर पाते, न हम शास्त्र सूत्र के संरक्षण हेतु प्रयास कर पाते। विगत् दिनों भारत सरकार ने प्राकृत भाषा को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्य किया और हमने इसका हृदय से स्वागत भी किया। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने शास्त्रों का जो जिनवाणी की आधार भाषा है उसी के संवर्धन हेतु भी योगदान देंगे तो जीवन का एक बड़ा लक्ष्य पूर्ण करने में एक सार्थक कार्य कर पायेंगे।

वर्तमान सत्र में अनेक ऐतिहासिक कार्यों को करते हुए दानवीरों के दान सहयोग से कुछ ऐसे कार्य भी हुए जो विगत् पाँच दशक में भी संपन्न नहीं हुए थे। हमने प्रत्येक समाजसेवी के आगे अपनी बात रखी और उन्होंने जब देखा तो उन्हें भी लगा कि जो कार्य हो रहा है वह सही दिशा में हो रहा है। अतः सहयोग करना चाहिए।

इस प्रकार हमें बिना कोई मिन्नत किये भरपूर सहयोग मिला और हम जैन कॉन्फ्रेंस की चमकदार छवि बनाने में समर्थ हुए। हमने विशेषकर मैंने यह अनुभव किया कि संसार में एक कहावत है कि **'चमत्कार को नमस्कार'** है। जब कार्य किये जाते हैं तो पारखी लोग उन्हें परख लेते हैं। वे अपने क्षेत्र में इतने सफल लोग हैं कि सफलता क्या है और असफलता क्या है? दिशा सही क्या है और दिशा कहाँ गलत है? इसको पलक झपकते ही पढ़ लेते हैं। मैं ऐसे सभी पारखी लोगों को मेरी ओर से और मेरी पूरी टीम को धन्यवाद देते हुए यही कहूंगा कि इसी प्रकार भविष्य में भी अपना दान सहयोग संस्था के हित में, समाज के हित में, योजनाओं के हित में बनाए रखें, सभी के लिए अनंत-अनंत आभार।

❖❖

निर्वाण कल्याणक पर सबसे बड़ी उपलब्धि

- आचार्य सम्राट्, पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

भगवान महावीर के 2550वें निर्वाण महोत्सव के समापन अवसर पर चतुर्विध संघ में एक भावना निर्मित हो कि हम सभी अपनी अनादिकाल की संसार यात्रा को समाप्त कर निर्वाण को प्राप्त करें, ये प्यास, अभीप्सा अगर प्रत्येक तीर्थवासी के भीतर जागृत हो जाएं तो हमारा निर्वाण कल्याणक मनाना सार्थक हो जाएगा। जैसे प्रभु महावीर के 2600वें जन्म कल्याणक पर सामाजिक एकता हुई। एक चिन्ह, एक झण्डा, एक ग्रन्थ, एक महावीर जयंती, सामूहिक क्षमापना आदि कार्यक्रमों में चारों सम्प्रदायों द्वारा एक मंच पर आकर आपसी सद्भावना, एकता बढ़ी।

निर्वाण कल्याणक पर आध्यात्मिक एकता करते हुए भगवान महावीर की मूल साधना आत्म-ध्यान, शुक्ल-ध्यान की साधना विधि जो जन-जन में उजागर हुई है उसे स्वीकार करें। जैसे जैन समाज अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त से प्रसिद्ध है, उसी प्रकार आत्म-ध्यान से आनन्द शांति सुख से परिपूर्ण होने की कला मानव मात्र तक पहुंचेगी तो विश्व पर उपकार होगा। "परस्परोपग्रहो जीवानाम्" यह सूत्र सार्थक होगा तथा हम निर्वाण कल्याणक के आराधक कहलाएंगे।

निर्वाण-निर्वाण अर्थात् जिसके बाद जीव आत्मा, जन्म मरण के चक्रव्यूह से मुक्त होकर सदाकाल के लिए अनंत सुख में स्थित हो जाए। अटल अवगाहना-सिद्धशिला में जा स्थिर हो जाएं। **तत्वार्थ सूत्र** में मोक्ष का स्वरूप बताते हुए आचार्य उमास्वाति जी फरमाते हैं -

"बन्ध हेत्व भाव, निर्जराभ्याम।। 2/10।।" बन्ध के कारणों के अभाव से पूर्व संचित कर्मों की निर्जरा से कर्मों का अत्यधिक क्षय होता है।

"कृत्स्न कर्म-क्षयो मोक्षः।। 3/10।।' सम्पूर्ण कर्मों का क्षय ही मोक्ष है।

प्रत्येक आत्मार्थी साधक को निर्वाण कल्याणक पर यह संकल्प करना चाहिए कि **मैं कर्म बन्धन के कारणों को जानकर, समझकर, नए कर्म बंधन नहीं बान्धुंगा एवं पूर्व के बन्धे कर्म जो कार्मण शरीर के रूप में अनादि काल से जीव के साथ चल रहे हैं, उन्हें क्षय कर मुक्त हो जाऊंगा।**

बन्ध - प्रश्न होता है कि कर्म बन्ध को कैसे रोकें? अरिहंत परमात्मा फरमाते हैं कि जिस जीव को मुक्त होना है उसे सर्वप्रथम अपने 'स्वरूप' को जानना चाहिए, अर्थात् **'मैं हूँ कौन?' मेरा सत्य क्या है?** अरिहंत वाणी से

(1) जड़ और जीव के स्वरूप को जानकर
(2) शरीर व आत्मा में भेद विज्ञान कर
(3) जीव अपने अस्तित्व का ध्यान करे, अर्थात् जीव का ध्यान करे,
(4) शरीर को गौण कर जीव को मुख्यता देवें।
(5) तो वह विभाव से स्वभाव में आ जाता है।

स्वभाव - (1) जीव का स्वभाव क्या है? जीव का स्वभाव ज्ञाता-दृष्टा भाव है।
(2) जीव अष्टगुणों से युक्त है।

स्वभाव से क्या

(1) स्वभाव से कर्मों की निर्जरा होती है।
(2) नये कर्म बन्धन रूकते हैं और जीव अपने अनंत सुख आदि गुणों को प्रकटाता हुआ, वर्तमान में अनंत सुख का अनुभव करता है।

विभाव क्या - (1) विभाव अर्थात् देह को अपना मानकर देह का चिंतन करना।
(2) देह की चिंता करना।
(3) देह से जुड़े संसार को लेकर चिंतित होना।
(4) व्यक्तित्व का ध्यान करना, अस्तित्व को गौण करना।
(5) प्रत्येक क्रिया के कर्त्ता बनना, कर्त्तापन के भ्रम में अहंकार आदि कशायों की उत्पत्ति होती है।
(6) समस्त कषाय विभाव है, मिथ्यात्व विभाव है।

भोक्तापन - (1) पुद्गलों का भोक्ता बनना।
(2) कर्म उदय आने पर उनका भोक्ता बनना, उदय से भयभीत होना।
(3) उदय में आए कर्मों को दबाना आदि पुरुषार्थ विभाव

का पुरुषार्थ है। संक्षेप में पुद्गलों का ध्यान विभाव है। हम सभी जीवों ने मिथ्यात्व मोह के वशीभूत अनादि काल में विभाव के अन्तर्गत कर्म बन्धन किए हैं।

प्यास - अब जीव मुक्त होना चाहे तो स्वभाव की साधना से बहुत ही सरलता से मुक्त हो सकता है।

इस साधना में पंचम काल बाधक नहीं है। कोई स्थिति-परिस्थिति बाधक नहीं है। आवश्यकता है संकल्पपूर्वक जीव को महत्त्व देने की।

आज तक क्या किया? तत्वार्थ सूत्र में आचार्य उमास्वाति फरमाते हैं आज तक हम देह की व धर्म की क्रियाओं में लगे दोषों की आलोचना, प्रतिक्रमण कर तृप्त हो जाते हैं। क्रियाएं सभी मन, वचन, काया के निमित्त से जीव की उपस्थिति में होती है। **"काय, वाङ्मनः कर्म योगः।।1/6।।** वहीं आश्रव है - **स आस्रव ।।2/6।।**

परिणामों को हमें सुधारना है। परिणाम से बन्ध है।

तीव्र-मंद-ज्ञाता- ऽज्ञातभाव-वीर्याऽधिकारण विशेष भ्यस्तद्विशेशः।।७/६।। तीव्र भाव, मंद भाव, ज्ञात भाव, अज्ञात भाव, वीर्य विशेष और अधिकरण विशेष के भेद से आस्रव की विशेषता होती है। अतः **स्वभाव की साधना से भाव बन्ध रूकेगा, कर्म क्षय की धारा चलेगी व अंततः सुख का वर्तमान में अनुभव होगा।**

काल का प्रभाव - भगवान के निर्वाण के पश्चात् काल के प्रभाव से शुक्ल-ध्यान, आत्म-ध्यान की साधना गौण होती चली गई और प्रार्थना, भक्ति, जड़ क्रियाओं पर अधिक बल देने से शुद्ध वीतराग धर्म गौण होता गया और कारण पंचम काल बताया गया।

साधक मुक्ति का पुरुषार्थ गौण करता गया, पुण्य को महत्त्व देता गया तथा धर्म प्रभावना के कार्यों में लगकर अपना समय व्यतीत करने लगा। आवश्यक क्रियाओं एवं स्वाध्याय तक इतिश्री होने लगी। ध्यान के नाम पर लोगस्स का ध्यान प्रारंभ हो गया।

निर्वाण महोत्सव पर उपलब्धि - अरिहंत कृपा से वर्तमान में आत्म-ध्यान के रूप में आत्म-ज्ञान, भेद-विज्ञान से स्वरूप बोध प्राप्त कर आत्म-ध्यान, शुक्ल ध्यान से सम्यक्त्व को परिपक्व कर क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त करने की विधि प्राप्त हुई। उससे अनादि का मिथ्यात्व क्षय कर मोह कर्म को क्षय करता हुआ जीव 90 प्रतिशत अपने कर्म वर्तमान भव में क्षय कर, एक भव मध्य में लेकर महाविदेह क्षेत्र से शीघ्र मोक्ष जा सकता है।

आत्म-ध्यान शिविरों एवं पर्व पर्युषण में आठ दिवसीय जो शुक्ल-ध्यान के विशेष प्रयोग प्राप्त हुए। उनमें शुद्ध वीतराग साधना विधि उपलब्ध है। आवश्यकता है चारों सम्प्रदाय के समस्त साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविकाओं को एकरूपता से इसे स्वीकार कर प्रयोग करने की। इस साधना को समग्र जैन समाज द्वारा अपनाना ही 2550वें निर्वाण कल्याणक की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी। इस विधि में आत्मबोध प्राप्त कर, मन को शांत कर, मन के पार जाकर आत्मा को आत्मा में स्थित करना होता है। एक समय से प्रारंभ कर साधक एक घड़ी निर्विचार, निर्विकल्प हो जाए तो वह उत्तम समाधि को प्राप्त करता है।

आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवर मुत्तमंदिंतु ये भाव प्रार्थना फलीभूत होती है। इस साधना से अनादि का मिथ्यात्व टूटता है और मोह क्षीण करता हुआ वह इस भव में एक मुहूर्त से कुछ न्यून तक पहुँच जाता है और काल के प्रभाव से केवल ज्ञान नहीं होने से जीव शेष कार्य के लिए एक भव और महाविदेह में लेकर मुक्त हो सकता है।

प्रत्येक साधक इस उपलब्धि का लाभ उठाकर अपने स्वरूप को जानकर, समझकर, इस पर श्रद्धाकर क्षायिक सम्यक्त्वी बनें। मोह को क्षय कर कैवल्य को प्राप्त करें व अंततः निर्वाण प्राप्त कर अपनी यात्रा पूर्ण करें।

वर्षाकालीन चातुर्मास समापन पर है चतुर्विध संघ वर्तमान चातुर्मास का प्रतिक्रमण कर शील कालीन चातुर्मास को साधनामय व्यतीत करे, यही मंगल भावना। ❖❖

जिस चीज को आप चाहते हैं,
उसमें असफल होना,
जिस चीज को आप नहीं चाहते
उसमें सफल होने से बेहतर है।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली – 110 001

फोन नं.: 011–23363729, 23365420, 23344380 / ई–मेल : aissjc1906@gmail.com

जैन कॉन्फ्रेंस के वर्ष 2025–27 दो वर्ष के कार्यकाल चुनाव संबंधित अधिसूचना

दिनांक : 07.10.2024

सम्माननीय सदस्यगण,

सादर जय जिनेन्द्र !

हम आशा करते हैं कि आप सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्नचि़ होंगे।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के **विश्वस्त मण्डल की सभा का आयोजन सोमवार, दिनांक 07 अक्टूबर 2024** को **दोपहर 02:15 बजे से विश्वस्त मण्डल** के **चेयरमैन श्री रमनलालजी लुंकड जैन** की अध्यक्षता में किया गया। इस सभा में जैन कॉन्फ्रेंस के आगामी वर्ष **2025–2027 (दो वर्ष)** के लिए जैन कॉन्फ्रेंस के संविधान, नियम–उपनियमों के अंतर्गत ज़ोन दो (2) से एक राष्ट्रीय अध्यक्ष पद एवं 14 प्रांतों से 14 प्रांतीय अयक्ष पद तथा 194 राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य पद हेतु अखिल भारतीय स्तर पर रविवार, 05 जनवरी 2025 को चुनाव कराने का सुनिश्चित हुआ है।

चुनाव पद	–	**राष्ट्रीय अध्यक्ष**	**प्रांतीय अध्यक्ष**	**राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य**
कुल संख्या	–	**01**	**14**	**192**

राष्ट्रीय अध्यक्ष पद, प्रांतीय अध्यक्ष पद तथा राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य पद हेतु चुनाव कार्यक्रम :

01 (क) नामांकन पत्र प्राप्ति, दिनांक समय एवं स्थान (राष्ट्रीय अध्यक्ष पद हेतु)	:	गुरुवार 28.11.2024 से शनिवार 30.11.2024 तक (प्रातः 10 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक) जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली – 110 001
(ख) नामांकन पत्र प्राप्ति, दिनांक समय एवं स्थान (प्रांतीय अध्यक्ष पद एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य पद हेतु)	:	गुरुवार 28.11.2024 से शनिवार 30.11.2024 तक (प्रातः 10 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक) 1. प्रांतीय चुनाव अधिकारी या प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी या 2. जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली – 110 001 या 3. राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा अधिकृत व्यक्ति के पास से ...

02 (क) नामांकन पत्र दाखिल, दिनांक, समय एवं स्थान (राष्ट्रीय अध्यक्ष पद हेतु)	:	सोमवार, 09.12.2024 से बुधवार 11.12.2024 तक (प्रातः 10 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक) उम्मीदवार स्वयं व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर रजिस्टर्ड कार्यालय जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली–110001 में राष्ट्रीय महामंत्री / राष्ट्रीय मंत्री / मुख्य चुनाव अधिकारी / सह चुनाव अधिकारी के समक्ष दोनों प्रस्तावकों व समर्थकों सहित (कुल 11 व्यक्तियों अधिकतम) के साथ आकर प्रस्तुत करना होगा।
(ख) नामांकन पत्र दाखिल, दिनांक, समय एवं स्थान (प्रांतीय अध्यक्ष पद एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य पद हेतु)	:	सोमवार, 09.12.2024 से बुधवार 11.12.2024 तक (प्रातः 10 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक) उम्मीदवार स्वयं व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर प्रांतीय चुनाव अधिकारी या प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी या राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा अधिकृत व्यक्ति को प्रस्तुत करना होगा।
03. नामांकन पत्रों की जाँच	:	गुरुवार 12.12.2024 एवं शुक्रवार 13.12.2024 (दोपहर 3:00 बजे तक)
04. (क) नामांकन पत्र जाँच के पश्चात् वैध प्रत्याशियों की सूची (राष्ट्रीय अध्यक्ष पद हेतु)	:	शुक्रवार 13.12.2024 सायं 5:00 बजे, रजिस्टर्ड कार्यालय – जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली–110001 के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित की जाएगी।
(ख) नामांकन पत्र जाँच के पश्चात् वैध प्रत्याशियों की सूची (प्रांतीय अध्यक्ष पद एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य पद हेतु)	:	शुक्रवार 13.12.2024 सायं 5:00 बजे, रजिस्टर्ड कार्यालय – जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली–110001 तथा संबंधित प्रांत में राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा अधिकृत स्थान के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित की जाएगी।
05. नामांकन पत्र के संदर्भ में शिकायत	:	शनिवार 14.12.2024 सायं 4:00 बजे तक, राष्ट्रीय चुनाव समिति, जैन भवन कार्यालय में लिखित रूप में या ई–मेल द्वारा निम्नलिखित ई–मेल : aissjc1906@gmail.com पर ।
06. राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा शिकायत की सुनवाई एवं निर्णय	:	**सुनवाई –** रविवार 15.12.2024 एवं सोमवार 16.12.2024

		को निर्धारित किये गये समयानुसार **निर्णय –** सोमवार 16.12.2024 दोपहर 3:00 बजे तक,
07. नामांकन पत्र वापसी	:	शनिवार 14.12.2024 से बुधवार 18.12.2024 (प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 03:00 बजे तक) 1. मुख्य चुनाव अधिकारी / सह–चुनाव अधिकारी, जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली – 110 001 2. प्रांतीय चुनाव अधिकारी / सह–चुनाव अधिकारी 3. राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा अधिकृत व्यक्ति के पास
08. (क) चुनाव हेतु प्रत्याशियों की अंतिम सूची (राष्ट्रीय अध्यक्ष पद हेतु)	:	गुरुवार 19.12.2024 – सायं 5:00 बजे रजिस्टर्ड कार्यालय – जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली–110001 के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित की जाएगी।
(ख) चुनाव हेतु प्रत्याशियों की अंतिम सूची (प्रांतीय अध्यक्ष पद एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य पद हेतु)	:	गुरुवार 19.12.2024 – सायं 5:00 बजे रजिस्टर्ड कार्यालय – जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली–110001 तथा संबंधित प्रांत में राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा अधिकृत स्थान के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित की जाएगी।
09. मतदान (यदि आवश्यक हुआ तो)	:	रविवार 05.01.2025 को प्रातः 9:00 बजे से सायं 05:00 बजे तक, राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा प्रांतों में निर्धारित मतदान केन्द्रों पर संपन्न करवाऐं जाएंगे।
10. मतगणना	:	रविवार 05.01.2025 मतदान पूर्ण होने के पश्चात् निर्धारित मतदान केन्द्रों पर ।
11. विजयी प्रत्याशियों की घोषणा राष्ट्रीय मुख्य चुनाव अधिकारी द्वारा	:	मतगणना समाप्ति के पश्चात्

(रमणलाल लुंकड जैन)
चेयरमैन–विश्वस्त मण्डल
जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली – 110 001
फोन नं.: 011–23363729, 23365420, 23344380 / ई–मेल : aissjc1906@gmail.com

जैन कॉन्फ्रेंस–द्वितीय ज़ोन से राष्ट्रीय अध्यक्ष पद 2025–2027 (दो वर्ष) एवं पांचों ज़ोन (14 प्रांत) से
14 प्रांतीय अध्यक्षों एवं 192 राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों 2025–2027 (दो वर्ष) हेतु चुनाव प्रक्रिया संबंधित नियम–उपनियम कार्यकाल : 2025–2027 (दो वर्ष)

राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रांतीय अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य हेतु अखिल भारतीय स्तर पर चुनाव रविवार, दिनांक 05 जनवरी 2025

01. राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रांतीय अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों हेतु निर्धारित संख्या के अनुसार सदस्यों का चुनाव प्रांतीय स्तर पर चुनावी कार्यक्रमानुसार राष्ट्रीय मुख्य चुनाव अधिकारी / राष्ट्रीय सह–चुनाव अधिकारी की निगरानी में राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा प्रत्येक ज़ोन / प्रांत में करवायें जायेंगे एवं चुनाव परिणाम निर्धारित समयानुसार घोषित कर दिये जायेंगे। चुनाव जैन कॉन्फ्रेंस के सभी आजीवन सदस्यों द्वारा गुप्त मतदान से होगा। किसी भी विवाद की स्थिति में राष्ट्रीय चुनाव समिति का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा। समस्त चुनाव प्रक्रिया राष्ट्रीय चुनाव समिति की देख–रेख में सम्पन्न होगी। इन तीन सदस्यीय राष्ट्रीय चुनाव समिति में एक राष्ट्रीय मुख्य चुनाव अधिकारी एवं दो राष्ट्रीय सह–चुनाव अधिकारी शामिल होंगे।

02. सभी ज़ोन – क्षेत्रों को प्रतिनिधित्व दिये जाने की दृष्टि से प्रांतों का निम्न वर्गीकरण किया गया है :

(1) प्रथम ज़ोन – प्रांत	:	(i)	**कर्नाटक**
		(ii)	**आंध्र प्रदेश व तेलंगाना**
		(iii)	**तमिलनाडु, केरल, पांडिचेरी व अंदमान निकोबार**
(2) द्वितीय ज़ोन – प्रांत	:	(i)	**पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर व लेह–लद्दाख**
		(ii)	**हरियाणा व चण्डीगढ़**
		(iii)	**उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड**
		(iv)	**दिल्ली**
(3) तृतीय ज़ोन – प्रांत	:	(i)	**राजस्थान**
		(ii)	**मध्य प्रदेश**
		(iii)	**छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड व उड़ीसा**
		(iv)	**पश्चिम बंगाल, असम, मणिपुर, सिक्किम, अरूणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, त्रिपुरा व मेघालय**
(4) चतुर्थ ज़ोन – प्रांत	:	(i)	**महाराष्ट्र (मुंबई, पुणे, गोवा, ठाणे, रायगढ़,**

रत्नागिरी एवं पालघर जिला छोड़कर)

(5) पंचम ज़ोन – प्रांत : (i) मुंबई, पुणे, गोवा, ठाणे, रायगढ़, रत्नागिरी एवं पालघर जिला ।

(ii) गुजरात व दमन–दीव

03. जैन कॉन्फ्रेंस के संविधान, नियम–उपनियमों के अनुसार इस वर्ष में द्वितीय (2) जोन क्षेत्र (पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू –कश्मीर, लेह–लद्दाख, हरियाणा व चण्डीगढ़, उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड, दिल्ली) के आजीवन सदस्य ही राष्ट्रीय अध्यक्ष पद हेतु नामांकन पत्र भर सकते हैं, तथा संबंधित प्रांत के आजीवन सदस्य ही संबंधित प्रांतीय अध्यक्ष पद एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य पद के लिए नामांकन पत्र भर सकते हैं। यदि किसी आजीवन सदस्य का ज़ोन स्थानांतरित होता हैं तो, उस आजीवन सदस्य को राष्ट्रीय अध्यक्ष के प्रत्याशी के लिये जरुरी वैधानिक योग्यताएं वर्तमान ज़ोन से ही पूरी करनी होगी। उस आजीवन सदस्य की पूर्व ज़ोन की वैधानिक योग्यताएं वर्तमान ज़ोन में लागू नहीं होगी। आधार कार्ड में जो पता अंकित हैं उस ज़ोन से ही वे राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के प्रत्याशी बन सकते हैं। नामांकन पत्र के साथ नामांकन शुल्क (Nomination Fees) जमा की रसीद एवं आधार कार्ड की फोटो कॉपी लगाना अनिवार्य हैं एवं नामांकन पत्र प्रस्तुत करते समय मूल (Original) आधार कार्ड दिखाना आवश्यक हैं।

04. राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के लिए प्रत्याशी को तीन (3) कार्यकाल का राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्य के रूप में या दो (2) कार्यकाल का राष्ट्रीय पदाधिकारी के रूप में अनुभव प्राप्त हुआ होना आवश्यक है और वे ही सदस्य इसकी पात्रता धारण कर सकते हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव उन्हीं प्रत्याशियों में से होगा जिन्होंने नामांकन पत्र भरे हैं और जिनके नामांकन पत्र वैध है। राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के प्रत्याशी को नामांकन पत्र भरते समय नामांकन पत्र पर दो (2) प्रस्तावकों व दो (2) समर्थकों के हस्ताक्षर होने चाहिए और वे सदस्य वर्तमान राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्य होने चाहिए। प्रस्तावक एवं समर्थक केवल एक प्रत्याशी के नाम की ही प्रस्तावना या समर्थन कर सकेंगे।

05. प्रांतीय अध्यक्ष पद के लिए प्रत्याशी को दो (2) कार्यकाल का राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति में या तीन (3) कार्यकाल का प्रातीय कार्यकारिणी समिति में सदस्य के रूप में अनुभव प्राप्त हुआ होन चाहिए या एक (1) कार्यकाल का राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति में या दो (2) कार्यकाल का प्रांतीय कार्यकारिणी समिति में पदाधिकारी के रूप में अनुभव प्राप्त हुआ होना चाहिए और वे ही सदस्य जो उपरोक्त योग्यताएं धारक है, प्रांतीय अध्यक्ष पद के प्रत्याशी बन सकते हैं।

प्रांतीय अध्यक्ष पद हेतु नामांकन पत्र दो (2) प्रस्तावकों एवं दो (2) समर्थकों के हस्ताक्षर से युक्त होना चाहिए और वे सदस्य वर्तमान प्रांतीय / राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्य होने चाहिए। प्रस्तावक एवं समर्थक केवल एक प्रत्याशी के नाम की ही प्रस्तावना या समर्थन कर सकेंगे। आधार कार्ड में जो पता अंकित हैं उस प्रांत से ही वे प्रांतीय अध्यक्ष पद के लिये प्रत्याशी बन सकते है। नामांकन पत्र के साथ नामांकन शुल्क (Nomination Fees) जमा की रसीद, आधार कार्ड की फोटो कॉपी लगाना अनिवार्य है एवं नामांकन पत्र प्रस्तुत करते समय मूल (Original) आधार कार्ड दिखाना आवश्यक है। प्रांतीय अध्यक्ष का चुनाव उन्हीं प्रत्याशियों में से होगा जिन्होंने नामांकन पत्र भरे हैं और जिनके नामांकन पत्र वैध हैं। यदि किसी आजीवन सदस्य का प्रांत स्थानांतरित होता है तो उस सदस्य को प्रांतीय अध्यक्ष / राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य पद के प्रत्याशी के लिये वैधानिक योग्यताएं वर्तमान प्रांत से ही पूरी करनी होगी। उस सदस्य की पूर्व प्रांत की वैधानिक

योग्यताएं वर्तमान प्रांत में लागू नहीं होगी। अगर किसी प्रांत का विभाजन होता है तो, नये प्रांत के प्रांतीय अध्यक्ष / राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य पद के लिये प्रत्याशी को पूर्व प्रांत की वैधानिक योग्यताएं लागू होगी।

06. राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति में सदस्य बनने हेतु राष्ट्रीय / प्रांतीय कार्यकारिणी समिति सदस्य या राष्ट्रीय / प्रांतीय युवा कार्यकारिणी समिति सदस्य या राष्ट्रीय / प्रांतीय महिला कार्यकारिणी समिति सदस्या / विभिन्न योजनाओं के राष्ट्रीय / प्रांतीय कार्यकारिणी समिति सदस्य के रूप में एक (1) कार्यकाल का अनुभव प्राप्त होना आवश्यक है और उपर्युक्त योग्यता प्राप्त आजीवन सदस्य ही राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य हेतु नामांकन पत्र भर सकते हैं। नामांकन पत्र पर एक प्रस्तावक एवं एक समर्थक के हस्ताक्षर होना अनिवार्य है। प्रस्तावक एवं समर्थक वर्तमान राष्ट्रीय या प्रांतीय कार्यकारिणी समिति के सदस्य होने चाहिए। वे निर्धारित प्रतिनिधित्व संख्या तक प्रत्याशी के नाम की प्रस्तावना या समर्थन कर सकते है। जो व्यक्ति स्वयं उम्मीदवार हैं वे स्वयं के अलावा शेष प्रतिनिधित्व संख्या के लिये प्रस्तावक या समर्थक हो सकता हैं। आधार कार्ड में जो पता अंकित है उस प्रांत से ही वे राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य के लिए प्रत्याशी बन सकते है। नामांकन पत्र के साथ नामांकन शुल्क (Nomination Fees) जमा की रसीद, आधार कार्ड की फोटो कॉपी लगाना अनिवार्य हैं एवं नामांकन पत्र प्रस्तुत करते समय मूल (Original) आधार कार्ड दिखाना आवश्यक है।

07. प्रत्येक ज़ोन / प्रांत से संविधान, नियम–उपनियम के तहत निर्वाचित होने वाले राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की संख्या निम्न प्रकार से रहेगी –

	प्रथम ज़ोन – प्रांत	
कर्नाटक	–	(16) तथा (01) प्रांतीय अध्यक्ष – कुल (17)
आंध्र प्रदेश व तेलंगाना	–	(04) तथा (01) प्रांतीय अध्यक्ष – कुल (05)
तमिलनाडु केरल, पांडिचेरी व अंदमान–निकोबार	–	(14) तथा (01) प्रांतीय अध्यक्ष – कुल (15)
	द्वितीय ज़ोन – प्रांत	
पंजाब, हिमाचल प्रदेश जम्मू कश्मीर व लेह लद्दाख	–	(15) तथा (01) प्रांतीय अध्यक्ष – कुल (16)
हरियाणा व चण्डीगढ़	–	(07) तथा (01) प्रांतीय अध्यक्ष – कुल (08)
उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड	–	(06) तथा (01) प्रांतीय अध्यक्ष – कुल (07)
दिल्ली	–	(18) तथा (01) प्रांतीय अध्यक्ष – कुल (19)
	तृतीय ज़ोन – प्रांत	
राजस्थान	–	(17) तथा (01) प्रांतीय अध्यक्ष – कुल (18)
मध्य प्रदेश	–	(10) तथा (01) प्रांतीय अध्यक्ष – कुल (11)
छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड व उड़ीसा	–	केवल (01) प्रांतीय अध्यक्ष – कुल (01)
पश्चिम बंगाल, असम, मणिपुर, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड त्रिपुरा व मेघालय	–	केवल (01) प्रांतीय अध्यक्ष – कुल (01)

चतुर्थ ज़ोन – प्रांत

महाराष्ट्र (मुंबई, पुणे, गोवा, ठाणे, रायगढ़, रत्नागिरी तथा पालघर जिला छोड़कर)	–	(40) तथा (01) प्रांतीय अध्यक्ष – कुल (41)

पंचम ज़ोन – प्रांत

मुम्बई, पूणे, गोवा, ठाणे, रायगढ़ रत्नगिरी व पालघर जिला	–	(32) तथा (01) प्रांतीय अध्यक्ष – कुल (33)
गुजरात व दमन दीव	–	(13) तथा (01) प्रांतीय अध्यक्ष – कुल (14)

08. नामांकन–पत्र निम्न निर्धारित राशि देकर निर्धारित दिनांक एवं स्थान से प्राप्त कर सकते हैं :–

राष्ट्रीय अध्यक्ष पद हेतु नामांकन–पत्र की राशि रु. 1,01,000/– (Non-Refundable)

प्रांतीय अध्यक्ष पद हेतु नामांकन–पत्र की राशि रु. 11,000/– (Non-Refundable)

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य हेतु नामांकन पत्र की राशि रु. 3,100/– (Non-Refundable)

उपरोक्त राशि RTGS / ड्राफ्ट : Shri All India S. S. Jain Conference के नाम से नई दिल्ली शाखा पर देय देकर संबंधित पदों हेतु नामांकन पत्र लिए जा सकते हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष पद हेतु नामांकन पत्र जैन कॉन्फ्रेंस के रजिस्टर्ड कार्यालय, जैन भवन, नई दिल्ली – 110 001 से प्राप्त होंगे। प्रांतीय अध्यक्ष पद एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य हेतु नामांकन पत्र संबंधित प्रांतीय अध्यक्ष या प्रांतीय महामंत्री या प्रांतीय चुनाव अधिकारी या प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी या राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा अधिकृत व्यक्ति के पास प्राप्त होंगे।

बैंक अकाउंट का विवरण निम्नलिखित है :–

A/c Name	:	**Shri All India S. S. Jain Conference**
Bank	:	**Central Bank of India**
A/c Number	:	**1026325740**
IFSC	:	**CBIN0280303**
Branch	:	**Gole Market, New Delhi**

09. संबंधित पदों के लिए निर्धारित की गई नामांकन शुल्क (Filling Fee) निम्न प्रकार से रहेगी : –

राष्ट्रीय अध्यक्ष पद हेतु नामांकन शुल्क – रु. 7,51,000 /– (रु. सात लाख 51 हजार मात्र)

प्रांतीय अध्यक्ष पद हेतु नामांकन शुल्क – रु. 1,01,000 /– (रु. एक लाख एक हजार मात्र)

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य हेतु नामांकन शुल्क – रु. 21,000 /– (रु. इक्कीस हजार मात्र)

उपरोक्त राशि RTGS / ड्राफ्ट : Shri All India S. S. Jain Conference के नाम से नई दिल्ली शाखा पर देय, नामांकन पत्र के साथ देना अनिवार्य होगा। नामांकन पत्र वापसी के निर्धारित समय तक नाम वापस ले लेने पर नामांकन शुल्क राशि 25% काट कर चेक द्वारा लौटा दी जाएगी। नामांकन पत्र के साथ 3 पासपोर्ट साईज फोटो देना आवश्यक होगा। वही प्राप्त फोटो मतपत्र पर छापा जाएगा।

बैंक अकाउंट का विवरण निम्नलिखित है :–

A/c Name	:	**Shrk All India S. S. Jain Conference**
Bank	:	**Central Bank of India**
A/c Number	:	**1026325740**
IFSC	:	**CBIN0280303**
Branch	:	**Gole Market, New Delhi**

10. प्रत्याशी यदि एक पद के लिए एक से अतिरिक्त नामांकन पत्र देता है तो, नामांकन–शुल्क राशि (Nomination Fees) एक ही बार देय होगी। अतिरिक्त नामांकन पत्र में उसी बैंक ड्राफ्ट का उल्लेख किया जा सकता है। बैंक ड्राफ्ट की फोटो कॉपी अतिरिक्त नामांकन पत्र के साथ संलग्न करनी होगी। प्रत्येक नामांकन पत्र पर प्रस्तावक व समर्थक अलग–अलग होना अनिवार्य हैं।

11. नामांकन पत्र जिस सदस्य के नाम से जारी किया गया है वह नामांकन पत्र नामांकित सदस्य के लिये ही वैध होगा।

12. राष्ट्रीय / प्रांतीय कार्यकारिणी समिति के सदस्य बनने हेतु आजीवन सदस्य की आयु कम से कम 30 वर्ष होनी आवश्यक है।

13. चुनावों के लिए निर्धारित स्थानों का निर्णय राष्ट्रीय चुनाव समिति करेगी। स्थानों के निर्णय हेतु राष्ट्रीय चुनाव समिति का निर्णय अन्तिम होगा।

14. गुरुवार 21 नवम्बर 2024 से केन्द्रीय रजिस्टर्ड कार्यालय में मतदाता सूची अवलोकनार्थ रखेंगे। इसकी एक प्रति प्रांतीय अध्यक्षों को भेजी जाएगी जिसे वे प्रांतीय कार्यालय में अवलोकनार्थ रखेंगे। मतदाता सूची में किसी भी प्रकार का संशोधन हो तो 15 दिसम्बर 2024 तक उसमें सुधार किया जा सकता है।

15. बुधवार 25 दिसम्बर 2024 सायं 4:00 बजे तक कोई भी सदस्य रु. 11,000/– (रु. ग्यारह हजार केवल) निर्धारित शुल्क राशि देकर मतदाता सूची की सी. डी. / पैन ड्राईव (CD / Pen Drive) रजिस्टर्ड कार्यालय, जैन भवन नई दिल्ली से प्राप्त कर सकते हैं।

16. राष्ट्रीय अध्यक्ष पद हेतु नामांकन पत्र गुरुवार, 28 नवम्बर 2024 से शनिवार, 30 नवंबर 2024 तक प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक जैन भवन, नई दिल्ली से प्राप्त कर सकते हैं।

17. प्रांतीय अध्यक्ष पद एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य पद हेतु नामांकन पत्र गुरुवार, 28 नवम्बर 2024 से शनिवार, 30 नवम्बर 2024 तक प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक प्रांतीय अध्यक्ष या प्रांतीय महामंत्री या प्रांतीय चुनाव अधिकारी या प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी या राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा अधिकृत व्यक्ति के पास से प्राप्त कर सकते हैं।

18. राष्ट्रीय अध्यक्ष पद हेतु नामांकन पत्र, सोमवार, 09 दिसम्बर 2024 से बुधवार, 11 दिसम्बर 2024 तक प्रातः 10:00 बजे से सायं 3:00 बजे तक उम्मीदवार स्वयं व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर रजिस्टर्ड कार्यालय–जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली – 110 001 में राष्ट्रीय महामंत्री / राष्ट्रीय मंत्री / राष्ट्रीय मुख्य चुनाव अधिकारी / राष्ट्रीय सह–चुनाव अधिकारी के समक्ष दोनो प्रस्तावकों व समर्थकों सहित कुल 11 व्यक्तियों (अधिकतम) के साथ आकर प्रस्तुत करना होगा। केन्द्रीय कार्यालय द्वारा नामांकन पत्र प्राप्ति की रसीद जारी की जायेगी।

19. प्रांतीय अध्यक्ष पद हेतु नामांकन पत्र, सोमवार 09 दिसम्बर 2024 से बुधवार, 11 दिसम्बर 2024 तक प्रातः 10:00 बजे से सायं 3:00 बजे तक, उम्मीदवार स्वयं व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर प्रांतीय चुनाव अधिकारी या प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी या राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा अधिकृत व्यक्ति के पास प्रस्तुत करना होगा। नामांकन पत्र प्राप्ति की रसीद वे जारी करेंगे।

20. राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य हेतु नामांकन पत्र, सोमवार 09 दिसम्बर 2024 से बुधवार, 11 दिसम्बर 2024 तक प्रातः 10:00 बजे से सायं 3:00 बजे तक, उम्मीदवार स्वयं व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर प्रांतीय चुनाव अधिकारी या प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी या राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा अधिकृत व्यक्ति

के पास प्रस्तुत करना होगा। नामांकन पत्र प्राप्ति की रसीद वे जारी करेंगे।

21. प्राप्त हुए नामांकन पत्रों की जाँच गुरुवार, 12 दिसम्बर 2024 एवं शुक्रवार, 13 दिसम्बर 2024 को दोपहर 3:00 बजे तक राष्ट्रीय चुनाव समिति एवं प्रांतीय चुनाव समिति के सदस्यों द्वारा की जाएगी।

22. नामांकन पत्र जाँच के पश्चात् वैध प्रत्याशियों की सूची (राष्ट्रीय अध्यक्ष पद हेतु) शुक्रवार, 13 दिसम्बर 2024 सायं 5:00 बजे रजिस्टर्ड कार्यालय श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली – 110 001 में सूचना पट्ट पर प्रदर्शित की जाएगी।

23. नामांकन पत्र जाँच के पश्चात् वैध प्रत्याशियों की सूची (प्रांतीय अध्यक्ष पद एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य पद हेतु) शुक्रवार, 13 दिसम्बर 2024 सायं 5:00 बजे रजिस्टर्ड कार्यालय श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, जैन भवन, 12. शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली 110 001 तथा संबंधित प्रांत में राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा अधिकृत स्थान के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित की जाएगी।

24. नामांकन पत्र के संदर्भ में शिकायत शनिवार, 14 दिसम्बर 2024 सायं 4:00 बजे तक राष्ट्रीय चुनाव समिति, जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली – 110 001 कार्यालय में लिखित रूप में या निम्नलिखित ई–मेल द्वारा aissjc1906@gmail.com पर कर सकते हैं।

25. अगर कोई शिकायत आती है तो राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा रविवार, 15.12.2024 एवं सोमवार, 16. 12.2024 को निर्धारित किये गये समयानुसार सुनवाई करेगी एवं उस शिकायत पर अपना निर्णय सोमवार, 16.12.2024 दोपहर 03:00 बजे तक प्रदान करेगी।

26. नामांकन पत्र वापसी सोमवार, 16 दिसम्बर 2024 से बुधवार, 18 दिसम्बर 2024 दोपहर 3:00 बजे तक (1) राष्ट्रीय मुख्य चुनाव अधिकारी / राष्ट्रीय सह–चुनाव अधिकारी जैन भवन, 12. शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली – 110 001, (2) प्रांतीय चुनाव अधिकारी प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी, (3) राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा अधिकृत व्यक्ति के पास प्रस्तुत कर सकते है।

27. राष्ट्रीय अध्यक्ष पद चुनाव हेतु प्रत्याशियों की अंतिम सूची गुरुवार, 19 दिसम्बर 2024 सायं 5:00 बजे से रजिस्टर्ड कार्यालय श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, जैन भवन, 12. शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली – 110 001 में सूचना पट्ट पर प्रदर्शित की जाएगी।

28. प्रांतीय अध्यक्ष पद एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य पद चुनाव हेतु प्रत्याशियों की अंतिम सूची गुरुवार, 19 दिसम्बर 2024 सायं 5:00 बजे से रजिस्टर्ड कार्यालय – श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली – 110 001 तथा संबंधित प्रांत में राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा अधिकृत स्थान के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित की जाएगी।

29. मतदान यदि आवश्यक हुआ तो रविवार, 05 जनवरी 2025 को प्रातः 9:00 बजे से सायं 5:00 बजे तक, राष्ट्रीय चुनाव समिति द्वारा प्रांतों में निर्धारित मतदान केन्द्रों पर संपन्न करवायें जायेंगे। मतदान केन्द्र पर सायं 5:00 बजे तक उपस्थित मतदाताओं को मतदान का अधिकार रहेगा। मतदान पूर्ण होने के पश्चात् निर्धारित मतदान केन्द्रों पर मतगणना शुरु की जाएगी। मतगणना समाप्ती के पश्चात् राष्ट्रीय मुख्य चुनाव अधिकारी द्वारा विजयी प्रत्याशियों की घोषणा की जाएगी।

30. निर्धारित राष्ट्रीय / प्रांतीय पदों के लिए जहाँ चुनाव होना है, वहाँ मतदाता को राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के लिए एक, प्रांतीय अध्यक्ष पद के लिए एक और प्रांतीय सदस्यों में से राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों के लिए निर्धारित व्यक्ति चुनने हेतु आवश्यकतानुसार मत पत्र दिये जायेंगे। मतदाताओं को उन मत पत्र पर ही मतदान

करना है। राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य के लिए उस प्रांत से जितने सदस्य राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के लिए नियमानुसार निर्धारित है उतनी संख्या तक या उससे कम संख्या तक मतदान करते है तो यह मत पत्र वैध होगा। यदि मतदाता उस संख्या से अधिक मत डालता है तो यह मत पत्र अवैध माना जायेगा। मत पत्र (बैलेट पेपर) पर किसी तरह की मार्किंग, हाथ से नाम लिखना या हस्ताक्षर करने पर मत पत्र अवैध माना जाएगा। मत पत्र (बैलेट पेपर) पर एक प्रत्याशी के सामने एक ही मुहर लगानी है।

31. चुनाव प्रक्रिया / मतदान के समय किसी भी प्रकार का विवाद उत्पन्न होता है या कोई शिकायत / आपत्ति आती है, तो संबंधित प्रांतीय चुनाव अधिकारी तुरंत जाँच करके राष्ट्रीय चुनाव समिति को तत्काल सूचित करेंगे। राष्ट्रीय चुनाव समिति का निर्णय अंतिम होगा, लेकिन किसी भी कारण से मतदान नहीं रूकेगा।

32. मतदान प्रक्रिया पूर्ण होने पर संबंधित राष्ट्रीय / प्रांतीय चुनाव अधिकारी घोषित कार्यक्रमानुसार प्रत्याशी या उसके एक नियुक्त प्रतिनिधि के समक्ष मतगणना करेंगे। जो व्यक्ति प्रतिनिधित्व करना चाहता है, उसे अपने प्रत्याशी द्वारा दिया गया फोटो युक्त नियुक्ति–पत्र मतगणना से पूर्व संबंधित राष्ट्रीय / प्रांतीय चुनाव अधिकारी को देना होगा। मतगणना निर्धारित प्रांतीय मतदान केन्द्रों पर होगी। प्रत्याशी द्वारा नियुक्त प्रतिनिधि जैन कॉन्फ्रेंस का आजीवन सदस्य होना अनिवार्य है।

33. मतगणना सर्वप्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के लिए होगी, उसके तुरंत बाद प्रांतीय चुनाव अधिकारी उस गणना की रिपोर्ट राष्ट्रीय चुनाव समिति को जैन कॉन्फ्रेंस के रजिस्टर्ड कार्यालय, जैन भवन, नई दिल्ली को फैक्स / ई–मेल/ एस.एम.एस. द्वारा देनी होगी। उसके बाद ही प्रांतीय अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य की मतगणना होगी।

34. नामांकन पत्र वापसी की तिथि के पश्चात् यदि प्रत्याशियों में कोई आपसी समझौता होता है तो भी मतदान अनिवार्य होगा। नामांकन पत्र वापसी की तिथि के पश्चात् यदि उनमें कोई आपसी समझौता होता है या कोई एक प्रत्याशी किसी अन्य प्रत्याशी के पक्ष में अपना नामांकन समर्पित करता है तो मतदान में समर्पण करने वाले प्रत्याशी को मिलने वाले वोटों को किसी भी स्थिति में किसी भी प्रत्याशी की मत संख्या में शामिल नहीं किया जाएगा।

35. चुनाव प्रक्रिया के दरमियान किसी समय ईश्वर ना करे यदि किसी प्रत्याशी की मृत्यु होती है तो उसकी जानकारी प्रांतीय चुनाव अधिकारी लिखित रुप में राष्ट्रीय चुनाव समिति को देंगे। यदि किसी मी पद के चुनाव में दो से अधिक प्रत्याशी है और उन प्रत्याशियों में से किसी एक प्रत्याशी की मृत्यु हो जाती है तो शेष प्रत्याशियों में से चुनाव घोषित कार्यक्रमानुसार सम्पन्न होंगे। किन्तु यदि किसी पद के लिये दो ही प्रत्याशी है और उन दो में से यदि किसी एक प्रत्याशी की ईश्वर न करें मृत्यु हो जाती है तो उस पद के चुनाव स्थगित हो जायेंगे। ऐसी विशेष परिस्थितियों में वर्तमान राष्ट्रीय चुनाव समिति के अंतर्गत, उनके निर्देशन में 14 दिनों के अन्दर स्थगित हुये पदों के लिये नामांकन पत्र जारी कर आगे की चुनाव प्रक्रिया शुरु की जायेगी।

36. राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के चुनाव में जैन कॉन्फ्रेंस के सभी ज़ोन / प्रांतों के आजीवन सदस्यों को मतदान में भाग लेने का अधिकार रहेगा। प्रांतीय अध्यक्ष एवं संबंधित प्रांत से राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति हेतु सदस्यों का चुनाव उसी प्रांत के आजीवन सदस्य अपने–अपने प्रांत में मतदान करेंगे।

37. संबंधित प्रांतीय चुनाव अधिकारी सभी प्रत्याशियों या उनके द्वारा अधिकृत प्रतिनिधि को फोटो युक्त पहचान–पत्र जारी करेंगे। प्रत्याशियों द्वारा उनके अधिकृत प्रतिनिधि को दिया हुआ फोटो युक्त नियुक्ति–पत्र मतदान शुरु होने से दो घण्टा पहले संबंधित प्रांतीय चुनाव अधिकारी को देना अनिवार्य होगा।

38. प्रत्येक मतदान स्थल पर राष्ट्रीय अध्यक्ष के प्रत्याशी स्वयं या उनके द्वारा नियुक्त (लिखित) अधिकृत दो प्रतिनिधि एवं अन्य पद के प्रत्याशी स्वयं या उनके द्वारा नियुक्त (लिखित) अधिकृत एक प्रतिनिधि, प्रांतीय चुनाव अधिकारी की अग्रिम आज्ञा से संबंधित मतदान केन्द्र पर उपस्थित रह सकते हैं। परन्तु वह किसी भी परिस्थिति में मतदान प्रक्रिया में हस्तक्षेप नहीं कर सकते।

39. प्रत्येक संस्था सदस्य का अध्यक्ष अथवा उनकी कार्यकारिणी समिति द्वारा मनोनीत एक प्रतिनिधि जैन कॉन्फ्रेंस के चुनाव में हिस्सा लेकर मतदान कर सकेगा। मनोनीत प्रतिनिधि की सूचना / अधिकार–पत्र चुनाव से 15 दिन पूर्व जैन कॉन्फ्रेंस के रजिस्टर्ड कार्यालय में भेजना अनिवार्य होगा। ऐसे मतदाताओं की सूची संबंधित मतदान केन्द्र पर उपलब्ध रहेगी। यदि कोई वर्णित नियमानुसार आजीवन सदस्य किसी भी संस्था का लिखित रुप से मतदाता बनने का अधिकार प्राप्त करता हैं तो उसे स्वयं का तथा संस्था का मत देने का अधिकार रहेगा।

40. जो सदस्य जैन कॉन्फ्रेंस या उसके द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं में किसी भी प्रकार का वेतन या भत्ता प्राप्त करता हो या जैन कॉन्फ्रेंस में किसी भी प्रकार की राशि बकाया होने पर वह सदस्य किसी भी प्रकार के चुनाव में प्रत्याशी नहीं हो सकता।

41. प्रांतीय चुनाव अधिकारी मतदान पूर्ण की सूचना राष्ट्रीय चुनाव समिति को देने के पश्चात् मतगणना करवाकर परिणाम की घोषणा राष्ट्रीय चुनाव समिति की मंजूरी के पश्चात् घेषित करेंगे। राष्ट्रीय चुनाव समिति की स्वीकृति के पश्चात् प्रांतीय चुनाव अधिकारी विजेता प्रत्याशियों को नियुक्ति–पत्र जारी करेंगे।

42. किसी प्रांतीय अध्यक्ष का चुनाव अगर किसी कारण वश चुनाव समय सीमा के अन्दर सम्पन्न नहीं होते है तो भी राष्ट्रीय चुनाव समिति उस प्रांत में राष्ट्रीय अध्यक्ष / राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों का चुनाव, चुनाव कार्यक्रमानुसार सम्पन्न करवाकर चुनाव के परिणाम घोषित करेंगे एवं उनका निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।

43. यदि कोई सदस्य किसी प्रत्याशी के संबंध में कोई लिखित शिकायत / आपत्ति करता है तो प्रांतीय चुनाव समिति उस शिकायत / आपत्ति की सूचना राष्ट्रीय चुनाव समिति एवं संबंधित प्रत्याशी को देंगे। प्रांतीय चुनाव अधिकारी उस शिकायत / आपत्ति के संबंध में की गई जाँच की रिपोर्ट, ई–मेल / इलैक्ट्रानिक मिडिया द्वारा जैन कॉन्फ्रेंस के रजिस्टर्ड कार्यालय में राष्ट्रीय चुनाव समिति को प्रेषित करेंगे। प्रत्याशी भी अपना स्पष्टीकरण ई–मेल / इलैक्ट्रानिक मिडिया द्वारा रजिस्टर्ड कार्यालय में राष्ट्रीय चुनाव समिति के नाम प्रेषित कर उसकी सूचना फोन द्वारा राष्ट्रीय चुनाव समिति सदस्य को देना आवश्यक होगा। कोई भी शिकायत / आपत्ति रजिस्टर्ड कार्यालय में निर्धारित दिन को निर्धारित समय पर पहुंचनी चाहिए। इसके बाद प्राप्त होने वाली किसी भी शिकायत / आपत्ति पर विचार नही किया जायेगा। राष्ट्रीय चुनाव समिति उसका निराकरण करने हेतु निर्धारित दिन को घोषित समय पर सुनवाई करके निर्णय लेगी और निर्णय की विधिवत सूचना संबंधित प्रांतीय चुनाव समिति को ई–मेल / इलैक्ट्रानिक मिडिया द्वारा दे दी जाएगी। सुनवाई के वक्त शिकायतकर्ता स्वयं उपस्थित रह सकते हैं। प्रत्याशी या उसका अधिकृत प्रतिनिधि उपस्थित रहकर अपना स्पष्टीकरण प्रस्तुत कर सकते हैं। सुनवाई के पश्चात् लिये हुये निर्णय की सूचना संबंधित प्रांतीय चुनाव समिति को दी जायेगी। उस निर्णय की सूचना संबंधित प्रांतीय चुनाव समिति, प्रत्याशी एवं शिकायतकर्ता को उसी दिन देने की कोशिश करेंगे एवं तत्काल संबंधित प्रांतीय चुनाव समिति कार्यालय व जैन कॉन्फ्रेंस के रजिस्टर्ड कार्यालय में नोटिस बोर्ड पर लगा देंगे। नोटिस बोर्ड पर लगे अंतिम निर्णय को संबंधित प्रत्याशी / शिकायतकर्ता को जानकारी

हो गई है, यह माना जाएगा।

44. मतदान के समय मतदाता / सदस्य अपनी पहचान सुनिश्चित कराने हेतु अगर मतदाता के पास जैन कॉन्फ्रेंस का परिचय–पत्र हो तो उस परिचय पत्र के साथ असली (Original) सरकारी मान्यता प्राप्त फोटो आई डी कार्ड जैसे इलैक्शन कार्ड, पासपोर्ट, ड्राईविंग लाइसेंस, आधार कार्ड आदि में से कोई एक परिचय–पत्र संबंधित चुनाव अधिकारी को दिखाना होगा। फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।

45. चुनाव में मतदाता को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी प्रकार का प्रलोभन, उपहार या भेटवस्तु देना पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा। मतदाता को लुभाने या मतदान को प्रभावित करने के लिए किसी भी प्रकार के धनबल व बाहुबल का प्रयोग नहीं किया जा सकता। किसी भी मतदाता को प्रलोभित किया हुआ पाये जाने की शिकायत / सूचना राष्ट्रीय चुनाव समिति जैन प्रकाश (मासिक) को लिखित में मिलने पर राष्ट्रीय चुनाव समिति उस शिकायत पर विचार–विमर्श कर, संबंधित प्रत्याशी को उनकी उचित बात रखने का मौका देने के पश्चात, निर्णय लेकर अपना आदेश जारी करेगी जो अंतिम व सर्वमान्य होगा। मतदाताओं को मतदान के लिए आवागमन की व्यवस्था एवं सादगीपूर्ण भोजन–खानपान की व्यवस्था करना प्रलोभन की परिभाषा में नहीं माना जायेगा।

46. चुनाव के दिन मतदान स्थल के 100 मीटर के दायरे में, किसी भी प्रकार के पोस्टर, बैनर, इश्तहारबाजी करना, पैम्फलेट, सर्कुलर द्वारा प्रचार या उपहार या अन्य किसी चीज का वितरण करना, किसी भी प्रकार की घोषणा, नारेबाजी या हल्ला–गुल्ला आदि करना प्रतिबंधित है। मतदान केन्द्र परिसर (कम्पाउंड) में किसी भी प्रकार का प्रत्याशियों का प्रचार–प्रसार करना प्रतिबंधित हैं। मतदान बैलेट पेपर के माध्यम से होगा।

47. उम्मीदवार की श्रमण संघ में निष्ठा एवं आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के प्रति सच्ची श्रद्धा होना अनिवार्य है।

48. राष्ट्रीय अध्यक्ष पद, प्रांतीय अध्यक्ष पद एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य पद पर नामांकन के लिये संविधान में लिखित अन्य नियम–उपनियम भी लागू होंगें।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस चुनाव 2025–27 (दो वर्ष) राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रांतीय अध्यक्ष एवं प्रांतों में राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों के चुनाव हेतु प्रांतीय चुनाव अधिकारी व प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारियों एवं मतदान स्थलों का विवरण

प्रांतीय चुनाव अधिकारी	प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी
ज़ोन – 1 (कर्नाटक – प्रांत)	
श्रीमान् एस. एफ. गौतमचंद जैन (एडवोकेट) GAUTAM ASSOCIATE, VISHVA SAGAR, NO. 60, II[ND] FLOOR, S. B. SAMAJ ROAD, OLD KANAKPURA ROAD, BASWANGUDI, BANGALORE - 560 004 (KARANATAKA) Mob. : 998862 09990 E-mail: office@goutamassociates.com	**श्रीमान् प्रवीण कुमार आई. (एडवोकेट)** GAUTAM ASSOCIATE, 'VISHAV SAGAR', NO. 60, IIND FLOOR, OLD KANAKAPURA ROAD, OFF: S. B. SAMAJ ROAD, BASAVANAGUDI, BANGALORE - 560 004 (KARNATAKA) MOB: 77952 50148 E-MAIL: office@goutamassociates.com

ज़ोन – 1 (कर्नाटक – प्रांत मतदान स्थल)

बैंगलोर सेन्टर

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ (मो. सा)
श्री हीराबाग जैन स्थानक
नं. 142, सेपींग्स रोड़, निकट कोल्स पार्क,
बैंगलोर – 560 001 (कर्नाटक)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी | **प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी**

ज़ोन – 1 (आन्ध्र प्रदेश व तेलंगाना – प्रांत)

श्रीमान् सज्जन राज गांधी
1-1-385/12,
S/O MITHALAL GANDHI, 1-1-385/12,
GANDHI NAGAR, NEAR ANDHRA
CAFE HOTEL, BAKARAM, MUSHEERABAD,
HYDERABAD, - 500 020 (TELANGANA)
Mob. : 93965 57077
E-mail: sajjan1008@gmail.com

श्रीमान् राजेश गुगलिया जैन
S/O JEEVRAJ JAIN, 7-1-729
MARKET STREET,
SECUNDERABAD - 500 003, DISTRICT
HYDERABAD (TELANGANA)
Mob. : 98850 16711
E-mail: rajeshgugaliya@gmail.com

ज़ोन – 1 (आन्ध्र प्रदेश व तेलंगाना – प्रांत मतदान स्थल)

हैदराबाद सेन्टर

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ
खेरताबाद, हैदराबाद – 500 003 (तेलंगाना)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी | **प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी**

ज़ोन – 1 (तमिलनाडु, केरल, पांडिचेरी व अंदमान–निकोबार – प्रांत)

श्रीमान् एन. ताराचंद दुग्गड़ जैन
"DUGAR TOWER"
7TH FLOOR, 34/123,
MARSHALLS ROAD, EGMORE,
CHENNAI - 560 004 (TAMIL NADU)
Mob. : 93830 09900
E-mail: dugarnt@dugar.in

श्रीमान् हरीश एल. मेहता जैन
OLD NO. 62, NEW NO. 20,
BURKIT ROAD,
T. NAGAR - 600 017 (TAMIL NADU)
Mob. : 94444 40428
E-mail: mehta_group@yahoo.com

ज़ोन – 1 (तमिलनाडु, केरल, पांडिचेरी व अंदमान–निकोबार – प्रांत मतदान स्थल)

चेन्नई सेन्टर

एस. एस. जैन भवन
अग्रहारम स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई – 600 003 (तमिलनाडु)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी **प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी**

ज़ोन – 2 (पंजाब, हिमालच प्रदेश, जम्मू–कश्मीर व लेह–लद्दाख – प्रांत)

लुधियाना सेन्टर

श्रीमती ललिता जैन (एडवोकेट)
CHAMBER NO. 3012, 3RD FLOOR,
PART - 2, DISTRICT COURT COMPLEX
LUDHIANA - 141 001 (PUNJAB)
Mob. : 99146 07719
E-mail: lalitaparas@gmail.com

श्रीमान् प्रमोद जैन
BZ - 8, RVH, OMAXE ROYAL RESIDENCY,
PAKHOWAL ROAD,
LUDHIANA - 142 022 (PUNJAB)
Mob. : 98145 37764
E-mail: parmodpjain@gmail.com

ज़ोन – 2 (पंजाब, हिमालच प्रदेश, जम्मू–कश्मीर व लेह–लद्दाख – प्रांत मतदान स्थल)

लुधियाना सेन्टर

इस मतदान केन्द्र पर लुधियाना, रायकोट, मालेरकोटला, अहमदगढ़, सुनाम, संगरूर, नाभा, बरनाला, मानसा, मलौट, फरीदकोट, पटियाला, राजपुरा, खन्ना, बनूड़, मोहाली, कुराली, रोपड़, नालागढ़, बद्दी, नादौन, परवानु, भटिण्डा, गीदड़बाहा, सरदूलगढ़, (मंगलदेश के पंजाब प्रदेश के हिस्से एवं अन्य संबंधित जिले जालंधर बूथ पर नहीं है, वह लुधियाना में शामिल है) इन जिलों के आजीवन सदस्य / मतदाता मतदान करेंगे।

लॉर्ड महावीरा होम्योपैथिक मैडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल
किचलू नगर चौक
लुधियाना – 141 001 (पंजाब)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी **प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी**

ज़ोन – 2 (पंजाब, हिमालच प्रदेश, जम्मू–कश्मीर व लेह–लद्दाख – प्रांत)

जालंधर सेन्टर

श्रीमान् उमेश जैन
244, ADARSH NAGAR,
JALANDHAR CITY - 144 008 (PUNJAB)
Mob. : 93166 64442
E-mail: umeshjain_244@yahoo.com

श्रीमान् प्रदीप जैन
30 - B, DEEN DAYA UPADHYAYA NAGAR
JALANDHAR CITY - 144 001 (PUNJAB)
Mob. : 98159 57590, 90413 33354
E-mail: p.kagencies@yahoo.com

ज़ोन – 2 (पंजाब, हिमालच प्रदेश, जम्मू–कश्मीर व लेह–लद्दाख – प्रांत मतदान स्थल)

जालंधर सेन्टर

इस मतदान केन्द्र जालंधर, जालंधर कैन्ट, अमृतसर, झंडियाला, पट्टी, सुल्तानपुर, होशियारपुर, फगवाड़ा, बंग्गा, नवांशहर, राहों, बालाचोर, मुकेरियां, टांड़ा, जम्मू एण्ड कमश्मीर, लेह–लद्दाख, कपूरथला इन जिलों के आजीवन सदस्य / मतदाता मतदान करेंगे।

महावीर भवन
कपूरथला रोड़, जालंधर –144 001 (पंजाब)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी	प्रांतीय सह-चुनाव अधिकारी

ज़ोन - 2 (हरियाणा व चण्डीगढ़ - प्रांत)

श्रीमान् साधुराम जैन
S/O RAM SARUP JAIN, 84-A,
SECTOR - 13-17, HUDA,
PANIPAT - 132 103 (HARYANA)
MOB.: 98961 10397
E-MAIL: jain.sr2017@gmail.com

श्रीमान् गौरव जैन
40, GANDHI MANDI,
PANIPAT - 132 103 (HARYANA)
Mob. : 98120 34228
E-mail: satpanipat@yahoo.com

ज़ोन - 2 (हरियाणा व चण्डीगढ़ - प्रांत मतदान स्थल)

पानीपत सेन्टर

एस. एस. जैन सभा
गांधी मण्डी, निकट जी.टी. रोड़
पानीपत - 132 103 (हरियाणा)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी	प्रांतीय सह-चुनाव अधिकारी

ज़ोन - 2 (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - प्रांत)

एडवोकेट श्रीमान् योगेन्द्र सिंह जैन
317 / 2, SANJAY MARG,
DASHINI BHOPA ROAD,
MUZAFFARNAGAR - 251 001
(UTTAR PRADESH)
Mob. : 94128 43738
E-mail: YSjain@gmail.com

श्रीमान् सुभाष जैन
10 - A, RAILWAY ROAD,
JAIN NAGAR
MEERUT - 250 002 (UTTAR PRADESH)
Mob. : 99974 05890
E-mail: bhaskar.1968@yahoo.co.in

ज़ोन - 2 (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - प्रांत मतदान स्थल)

मुजफ्फरनगर सेन्टर

श्री जैन स्थानक
निकट श्री वर्धमान जैन भवन
नई मण्डी, मुजफ्फरनगर - 251 001 (उत्तर प्रदेश)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी	प्रांतीय सह-चुनाव अधिकारी

ज़ोन - 2 (दिल्ली - प्रांत)

श्रीमान् जय भगवान जैन
B. U. 173
PITAMPURA - 110 34 (DELHI)
Mob. : 98915 83183
E-mail: jbjain1454@gmail.com

श्रीमान् सतीश कुमार जैन
H. NO. 542-43, PAOCKET - A -1,
SECTOR - 6, ROHINI - 110 085 (DELHI)
Mob. : 98101 99339
E-mail: satish300985@rediffmail.com

ज़ोन – 2 (दिल्ली – प्रांत मतदान स्थल)

दिल्ली सेन्टर

एस. एस. जैन मॉडल स्कूल
शालीमार बाग – 110 088 दिल्ली

प्रांतीय चुनाव अधिकारी	प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी

ज़ोन – 3 (राजस्थान – प्रांत)

उदयपुर सेन्टर

श्रीमान् हस्तीमल चोरड़िया जैन
C - 6, KUMBHA NAGAR,
CHITTORGARH - 320 001 (RAJASTHAN)
Mob. : 94141 09764
E-mail: hastimalchordia1944@gmail.com

श्रीमान् जी. एल. कोठारी जैन
32, AHIMSAPURI, FATEHPURA,
UDAIPUR - 313 001 (RAJASTHAN)
Mob. : 94141 43009,
whatsapp: 90240 86087

ज़ोन – 3 (राजस्थान – प्रांत मतदान स्थल)

उदयपुर सेन्टर

इस मतदान केन्द्र पर उदयपुर, रासमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, डुंगरपुर, कोटा, बून्दी, झालावाड़, सवाई माधोपुर, बांरा, टोंक, जोधपुर, सिरोहीं, आबूरोड़, पालीं इन जिलों के आजीवन सदस्य / मतदाता मतदान करेंगे।

देवेन्द्र धाम
भुवाना रोड़,
उदयपुर – 313 001 (राजस्थान)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी	प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी

ज़ोन – 3 (राजस्थान – प्रांत)

भीलवाड़ा सेन्टर

श्रीमान् प्रदीप चौधरी जैन
6 - B - 7, RC VYAS COLONY,
BHILWARA - 311 001 (RAJASTHAN)
Mob. : 94140 41350
E-mail: jainpradeep224@gmail.com

श्रीमान् रतनचंद कोठारी जैन
11, NEW HOUSING BOARD ROAD,
SHASTRI NAGAR,
BHILWARA - 311 001 (RAJASTHAN)
Mob. : 94139 46244
E-mail: ratan040242@gmail.com

ज़ोन – 3 (राजस्थान – प्रांत मतदान स्थल)

भीलवाड़ा सेन्टर

इस मतदान केन्द्र पर भीलवाड़ा, जयपुर, अजमेर, ब्यावर, नागौर, बीकानेर, जैसलमेर, भरतपुर, धौलपुर, दोसा, सीकर, अलवर, जालोर, बाड़मेर, चूरू, हनुमानगढ़, जुनजुनू, करौली, श्रीगंगानगर, (एवं अन्य सभी जिले जो उदयपुर एवं आस–पास नहीं आते है भीलवाड़ा में शामिल) इन जिलों के आजीवन सदस्य / मतदाता मतदान करेंगे।

श्री वर्धमान अम्बेश स्वाध्याय सेवा समिति (रजि.)

गली नं. 6, वर्धमान कॉलोनी, लव गॉर्डन रोड़, भीलवाड़ा – 311 001 (राजस्थान)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी | **प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी**

ज़ोन – 3 (मध्य प्रदेश – प्रांत)

श्रीमान् ज्योति कुमार जैन
D - 601, ELIGHT ANMOL,
BICHOLI HAPSI,
OPP. ADARSH SHISHU VIHAR SCHOOL,
INDORE - 452 016 (MADHYA PRADESH)
Mob. : 94259 12662
E-mail: jyoti.hiran@gmail.com

श्रीमान् अनिल बरड़िया जैन
SHIV MANDIR, AJ - 104,
SCHEEM NO. 71, SUDAMA NAGAR
INDORE - 452 009 (MADHYA PRADESH)
Mob. : 93021 22995
E-mail: anilbardia@gmail.com

ज़ोन – 3 (मध्य प्रदेश – प्रांत मतदान स्थल)

इन्दौर सेन्टर

जैन भवन

37, साउथ राज मौहल्ला, वैष्णव कॉलेज गर्ल्स हॉस्टल के सामने,

इन्दौर – 452 002 (मध्य प्रदेश)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी | **प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी**

ज़ोन – 3 (पश्चिम बंगाल – प्रांत)

श्रीमान् अशोक कांकरिया जैन
78, BABURAM GHOSH ROAD,
KOLKATA - 700 040 (WEST BENGAL)
Mob. : 98310 92992
E-mail: ak@coral.in, coralak@gmail.com

श्रीमान् बच्छराज बागमार जैन
CF - 285, SALT LAKE CITY, SECTOR - 1
KOLKATA - 700 064 (WEST BENGAL)
Mob. : 98300 25916
E-mail: brjain1984@gmail.com

ज़ोन – 3 (पश्चिम बंगाल – प्रांत मतदान स्थल)

कलकत्ता सेन्टर

महावीर सदन, 26/1, रमेश मित्र रोड़,

प्रथम फ्लोर, कलकत्ता – 700 025 (पश्चिम बंगाल)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी	प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी

ज़ोन – 4 महाराष्ट्र (मुंबई, पुणे, गोवा, ठाणे, रायगढ़, रत्नागिरी तथा पालघर जिला छोड़कर)

मनमाड़ सेन्टर

एडवोकेट श्रीमान् सुमतिलाल अमरंचद चोपड़ा
TARA NIWAS, MALEGAON ROAD,
MANMAD - 423 104
DISTRICT NASHIK (MAHARASHTRA)
Mob. : 94227 53964
E-mail: sumatilalchopada@gmail.com

एडवोकेट श्रीमान् रिखब जी. जैन
ANAND ASHISH, PLOT NO. 18,
SIDHIVINAYAK NAGAR,
NEAR PALLAVI MANGAL KARYALAYA
MANMAD-423 104 NASHIK (MAHARASHTRA)
Mob. : 98506 43751, 94201 64051
E-mail: jainrikhab31@gmail.com

ज़ोन – 4 (महाराष्ट्र मतदान स्थल)

मनमाड़ सेन्टर

इस मतदान केन्द्र पर नाशिक, धुलै, जलगांव, नंदुरबार, अकोला, बुलढ़ाणा, अमरावती, नागपुर, यवतमाल, वासीम, चंद्रपुर, गांदिया, वर्धा, गडचिरोली, भंडारा इन जिलों के आजीवन सदस्य / मतदाता मतदान करेंगे।

प्रकृति स्कूल
कीर्ति नगर, नांदगांव रोड
मनमाड़ – 423 104, जिला नाशिक (महाराष्ट्र)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी	प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी

ज़ोन – 4 महाराष्ट्र (मुंबई, पुणे, गोवा, ठाणे, रायगढ़, रत्नागिरी तथा पालघर जिला छोड़कर)

पाथर्डी सेन्टर

श्रीमान् सुनील मोहनलाल गांधी जैन
VAMANBHAU NAGAR, PATHARDI - 414 102
DIST. AHILYANAGAR (MAHARASHTRA)
Mob. : 94231 67400
E-mail: sunil.gandhi2016@gmail.com

श्रीमान् सुरेश सुगनचंद कुचेरिया
JAIN GALI, PATHARDI - 414 102
DISTT. AHILYANAGAR (MAHARASHTRA)
Mob. : 94224 53008
E-mail: sureshkucheriya62@gmail.com

ज़ोन – 4 (महाराष्ट्र मतदान स्थल)

पाथर्डी सेन्टर

इस मतदान केन्द्र पर अहमदनगर, औरंगाबाद, जालना, बीड़, उस्मानाबाद, लातूर, परभणी, नांदेड़, हिंगोली, सातारा, सोलापुर, सांगली, कोल्हापुर (एवं अन्य संबंधित जिले जो नाशिक में नहीं अहमदनगर में शामिल) इन जिलों के आजीवन सदस्य / मतदाता मतदान करेंगे।

श्री तिलोक जैन ज्ञान प्रसारक मंडल, पाथर्डी
धार्मिक अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था
ताः पाथर्डी, जिला अहमदनगर – 414 102 (महाराष्ट्र)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी	प्रांतीय सह-चुनाव अधिकारी

ज़ोन - 5 (मुंबई-पुणे, मुंबई, पुणे, गोवा, ठाणे, रायगढ़, रत्नागिरी व पालघर जिला - प्रांत)

शिरूर सेन्टर

श्रीमान् राहुल रमेशलाल बोरा जैन
1, SHREE PRESTIGE
BAGWAN NAGAR, SHIRUR
DISTRICT PUNE - 412 210 (MAHARASHTRA)
Mob. : 90110 46459
E-mail: borahul@rediffmail.com

श्रीमान् प्रमोद कांतिलाल गुगले जैन
E - 202, DSK CHANDRADEEP
MUKAND NAGAR
DISTRICT PUNE - 411 037 (MAHARASHTRA)
Mob. : 94220 32049
E-mail: pramodgugale@gmail.com

ज़ोन - 5 (मुंबई-पुणे - प्रांत मतदान स्थल)

शिरूर सेन्टर

इस मतदान केन्द्र पर पूना जिला संपूर्ण (पूना कार्पोरेशन को छोड़कर)
के आजीवन सदस्य / मतदाता मतदान करेंगे।

न्यू इंग्लिश स्कूल, शिरूर
रयत स्कूल, यशवंत कॉलोनी,
शिरूर - 412 210 जिला पूना (महाराष्ट्र)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी	प्रांतीय सह-चुनाव अधिकारी

ज़ोन - 5 (मुंबई-पुणे, मुंबई, पुणे, गोवा, ठाणे, रायगढ़, रत्नागिरी व पालघर जिला - प्रांत)

पूना सेन्टर

श्रीमान् सुनील के. वखारिया जैन
CHARTERED ACCOUNTANT,
MODI MANSION, 1ST FLOOR
HOTEL 7 LOVES CHOWK, SHANKAR SETH
ROAD, PUNE - 411 037 (MAHARASHTRA)
Mob. : 93710 16432
E-mail: vskcaoffice@gmail.com

श्रीमान् अरूण आनंदराम सिंघवी जैन
OFFIC NO. E - 201, IIND FLOOR
E-WING BUSINESS COURT,
MUKAND NAGAR,
PUNE- 411 037 (MAHARASHTRA)
Mob. : 94220 35461
E-mail: arunshingavi@gmail.com

ज़ोन - 5 (मुंबई-पुणे - प्रांत मतदान स्थल)

पूना सेन्टर

इस मतदान केन्द्र पर पूना शहर, पिंपरी चिंचवड़, मुंबई, गोवा, ठाणे, रत्नागिरी, रायगढ़, पालघर, मावल तालुका, पूना महानगरपालिका में जो आते है वह आजीवन सदस्य / मतदाता मतदान करेंगे।

श्री श्वेताम्बर सथानकवासी जैन श्रावक संघ
श्री रसिकलाल एम. धारीवाल स्थानक भवन
बिबवेवाड़ी, यशलॉंस, पुणे - 411 037 (महाराष्ट्र)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी	प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी

ज़ोन – 5 (गुजरात – प्रांत)

सूरत सेन्टर

श्रीमान् सुखलाल जैन
HEERA TEXTILE AGENCY
9-10, RESHAM WALA MARKET,
RIND ROAD, SURAT - 395 002 (GUJARAT)
Mob. : 94290 92995
E-mail: sukhlaljain36@gmail.com

श्रीमान् दलपत सिसोदिया जैन
202, ISMIT APPARTMENT,
NEW CIVIL ROAD, NEAR VIJAY SALES
BHATAR ROAD, SURAT - 395 017 (GUJARAT)
Mob. : 99740 02004
E-mail: dalpaatsisodia1963@gmail.com

ज़ोन – 5 (गुजरात – प्रांत मतदान स्थल)

सूरत सेन्टर

इस मतदान केन्द्र पर सूरत, भरूच, ढांग, नर्मदा, राजपीपला, नवसारी, तापी, व्यारा, बलसाड व दमन–दीव इन जिलों के आजीवन सदस्य / मतदाता मतदान करेंगे।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ
महावीर भवन चंदनवन सोसायटी, साउथ ज़ोन ऑफिस के सामने
उधना, सूरत – 394 210 (गुजरात)

प्रांतीय चुनाव अधिकारी	प्रांतीय सह–चुनाव अधिकारी

ज़ोन – 5 (गुजरात – प्रांत)

अहमदाबाद सेन्टर

श्रीमान् मूलचंद एच. शाह जैन (नाहर)
BUNGLOW NO. 1, GANGA SOCIETY,
OPP. GHEVAR COMPLES, SHAHI BAAG,
AHMEDABAD - 380 004 (GUJARAT)
Mob. : 93242 05872
E-mail: shrinath.jew@gmail.com

श्रीमान् प्रकाश सी. शाह जैन
BUNGLOW NO. 5, NAVRATAN SOCIETY,
SHANTI NAGAR, SINGHI HIGH
SCHOOL ROAD, VADAJ
AHMEDABAD - 380 013 (GUJARAT)
Mob. : 94260 84084
E-mail: rakeshshah540@gmail.com

ज़ोन – 5 (गुजरात – प्रांत मतदान स्थल)

अहमदाबाद सेन्टर

इस मतदान केन्द्र पर अहमदाबाद, वड़ोदरा, आनंद, पंचमहल, गोधरा, मेहसाणा, गांधीनगर, पाटन, अमरेली, जमनानगर, जूनागढ़, राजकोट, बानसकांठा, खेड़ा, नड़ियाद, छोटा उदयपुर, पोरबंदर, देवभूमि–द्वारका, गिर–सोमनाथ, अरवली, भावनगर, बोटाद, दाहौद, माईसागर, मोरबी, सांबरकांठा, हिम्मतनगर, सुरेन्द्रनगर (एवं अन्य संबंधि जिले अहमदाबाद में शामिल) इन जिलों के आजीवन सदस्य / मतदाता मतदान करेंगे।

श्री राजस्थान स्थानकवासी संघ
हटी सिंह जी की वाड़ी के सामने शाहीबाग, अहमदाबाद – 380 004 (गुजरात)

पृष्ठ क्रमांक 12, 13 एवं 14 पर प्रकाशित चुनाव संबंधित अधिसूचना के साथ निम्न ऑनलाईन प्रक्रिया भी लागू समझी जाएगी

क्र. 01 (क), (ख) तथा क्र. 02 (क), (ख) हेतु : –

उपरोक्त वर्णित क्रमांकों (चुनाव कार्यक्रमों) की सुविधाएं प्रत्येक चुनाव प्रत्याशी के लिए ऑनलाईन पोर्टल https://billbook.online/AISSJC पर भी उपलब्ध कराई गयी है। इस उपलब्ध कराई गई ऑनलाईन सुविधा के द्वारा भी राष्ट्रीय अध्यक्ष पद, प्रांतीय अध्यक्ष पद एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य पद के लिए नामांकन पत्र प्राप्त एवं दाखिल किये जा सकते हैं।

ऑनलाईन नामांकन पत्र की निर्धारित राशि जमा करके चुनाव कार्यालय में मोबाईल नं. 90197 31906 पर व्हाटस्ऑप द्वारा भेजने पर उम्मीदवार के मोबाईल नंबर पर आवेदन–पत्र का लिंक उपलब्ध कराया जाएगा।

ऑनलाईन फॉर्म उपलब्ध होने पर आपकी संपूर्ण जानकारी संविधान के अनुसार भरकर ऑनलाईन दाखिल करना होगा, जिसके साथ Nomination Fee जमा करना अनिवार्य होगा। अधूरी जानकारी प्राप्त होने पर नामांकन पत्र रद्द् हो सकता है।

ऑनलाईन आवेदन की प्रति प्रिन्ट करके, उसकी हार्ड कॉपी प्रत्याशी, अनुमोदक, प्रस्तावक के हस्ताक्षर करके स्पीड पोस्ट द्वारा केन्द्रीय कार्यालय, जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली – 110 001 पर भेजना अनिवार्य होगा।

(गतांक से आगे ...) *साभार :- !! आचारांग सूत्र - 1 !!*

बिइओ उद्देसओ : द्वितीय उद्देशक

- युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा.

पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा का निषेध

10. अट्टे लोए परिजुण्णे दुस्संबोधे अविजाणए। अस्सिं लोए पव्वहिए तथ्य तथ्य पुढो मास आतुरा परितावेंति।

10. जो मनुष्य आर्त, (विषय-वासना-कषाय आदि से पीड़ित) है, वह ज्ञान दर्शन से परिजीर्ण/हीन रहता है। ऐसे व्यक्ति को समझाना कठिन होता है, क्योंकि वह अज्ञानी जो है। अज्ञानी मनुष्य इस लोक में व्यथा-पीड़ा का अनुभव करता है। काम, भोग व सुख के लिए आतुर-लालायित बने प्राणी स्थान-स्थान पर पृथ्वीकाय आदि प्राणियों को परिताप (कष्ट) देते रहते हैं। यह तू देख! समझ!

11. संति पाणा पुढो सिआ।

11. पृथ्वीकायिक प्राणी पृथक्-पृथक् शरीर में आश्रित रहते हैं अर्थात् वे प्रत्येकशरीरी होते हैं।

12. लज्जमाणा पुढो पास। 'अणगारा मो' त्ति एगे पवयमाणा, जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्मसमारंभेणं पुढविसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसति।

12. तू देख! आत्म-साधक, लज्जमान है- (हिंसा से स्वयं को संकोच करता हुआ अर्थात् हिंसा करने में लज्जा का अनुभव करता हुआ संयममय जीवन जीता है।)

कुछ साधु वेषधारी 'हम गृहत्यागी हैं' ऐसा कथन करते हुए भी वो नाना प्रकार के शस्त्रों[2] से पृथ्वीसम्बन्धी हिंसा-क्रिया में लगकर पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करते है तथा पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा के साथ तदाश्रित अन्य अनेक प्रकार के जीवों की भी हिंसा करते हैं।

13. तत्थ खलु भगवता परिण्णा पवेदिता। इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदण-माणण-पूयणाए-जाई-मरण

-मोयणाए, दुक्खपडिघातहेउं। से सयमेव पुढविसत्थं समारंभति, अण्णेहि वा पुढविसत्थं समारंभावेति, अण्णे व पुढविसत्थं समारंभंते समणुजाणति।

तं से अहिआए, तं से अबोहीए।

13. इस विषय में भगवान स्वामी ने परिज्ञा/विवेक का उपदेश किया है। कोई व्यक्ति इस जीवन के लिए, प्रशंसा-सम्मान और पूजा के लिए, जन्म-मरण और मुक्ति के लिए, दुःख का प्रतिकार करने के लिए, स्वयं पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करता है, दूसरों से हिंसा करवाता है तथा हिंसा करने वालों को अनुमोदन करता है।

वह (हिंसावृत्ति) उसके अहित के लिए होती है। उसकी अबोधि अर्थात् ज्ञान-बोधि, दर्शन-बोधि, और चारित्र-बोधि की अनुपलब्धि के लिए कारणभूत होती है।

14. से तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुट्ठाए। सोच्चा खलु भगवतो अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेसिं णातं भवति-एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णिरए।

इच्चत्थं गढिए लोए, जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्मसमारंभेण पुढविसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसति।

14. वह साधक (संयमी) हिंसा के उक्त दुष्परिणामों को अच्छी तरह समझता हुआ, आदानीय-संयम-साधना में तत्पर हो जाता है। कुछ मनुष्यों को भगवान् के या अनगार मुनियों के समीप धर्म सुनकर यह ज्ञात होता है कि- 'यह जीव-हिंसा ग्रन्थि है, यह मोह है, यह मृत्यु है और यही नरक है।'

(फिर भी) जो मनुष्य सुख आदि के लिए जीव हिंसा में आसक्त होता है, वह नाना प्रकार के शस्त्रों से पृथ्वी-सम्बन्धी हिंसा-क्रिया में संलग्न होकर पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करता है और तब वह न केवल पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करता है, अपितु अन्य नाना प्रकार के जीवों की भी हिंसा करता है।

विवेचन - चूर्णि में 'आदानीय' का अर्थ संयम तथा 'विनय' किया है।

इस सूत्र में आये 'ग्रन्थ' आदि शब्द एक विशेष पारम्परिक अर्थ रखते हैं। साधरणतः 'ग्रन्थ' शब्द पुस्तक विशेष का सूचक है। शब्द कोष में ग्रन्थ का अर्थ 'गांठ' (ग्रन्थि) भी किया गया है। जो शरीर विज्ञान एवं मनोविज्ञान में अधिक प्रयुक्त होता है। जैन सूत्रों में आया हुआ 'ग्रन्थ' शब्द इनसे भिन्न अर्थ का द्योतक है।

आगमों के व्याख्याकार आचार्य मलयगिरि के अनुसार- 'जिसके द्वारा, जिससे तथा जिसमें बंधा जाता है वह ग्रन्थ है।'[1]

उत्तराध्ययन, आचारांग, स्थानांग, विशेषावश्यक भाष्य आदि में कषाय को ग्रन्थ या ग्रन्थि कहा है। आत्मा को बाँधने वाले कषाय या कर्म को भी ग्रन्थ कहा गया है।[2]

ग्रन्थ के दो भेद हैं- द्रव्य ग्रन्थ और भाव ग्रन्थ। द्रव्य ग्रन्थ दस प्रकार का परिग्रह है - **(1)** क्षेत्र, **(2)** वास्तु, **(3)** धन, **(4)** धान्य, **(5)** संचय-तृण काष्ठादि, **(6)** मित्र-ज्ञाति-संयोग, **(7)** यान-वाहन,**(8)** शयानासन, **(9)** दासी-दास और, **(10)** कुप्य।

भावग्रन्थ के 14 भेद हैं- **(1)** क्रोध, **(2)** मान, **(3)** माया, **(4)** लोभ, **(5)** प्रेम, **(6)** द्वेष, **(7)** मिथ्यात्व, **(8)** वेद, **(9)** अरति, **(10)** रति, **(11)** हास्य, **(12)** शोक, **(13)** भय और **(14)** जुगुप्सा।[3]

प्रस्तुत सूत्र में हिंसा को ग्रन्थ या ग्रन्थि कहा है, इस संदर्भ में आगम-गत उक्त सभी अर्थ या भाव इस शब्द में ध्वनित होते हैं। ये सभी भाव हिंसा के मूल कारण ही नहीं, बल्कि स्वयं भी हिंसा हैं। अतः 'ग्रन्थ' शब्द में ये सब भाव निहित समझने चाहिए।

'मोह' शब्द राग या विकारी प्रेम के अर्थ में प्रसिद्ध है। जैन आगमों में 'मोह' शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। राग और द्वेष-दोनों ही मोह हैं।[1] सदसद् विवेक का नाश[2], हेय-उपादेय बुद्धि का अभाव[3], अज्ञान[4], विपरीतबुद्धि[5], मूढ़ता[6], चित्त की व्याकुलता[7], मिथ्यात्व तथा कषायविषय आदि की अभिलाषा[8], यह सब मोह हैं।

ये सब 'मोह' शब्द के विभिन्न अर्थ हैं। सत्य तत्त्व को अयथार्थ रूप से समझना दर्शन-मोह, तथा विषयों की संगति (आसक्ति) चारित्रमोह है।[9] धवला (8।283।9) के अनुसार भाव ग्रन्थ के 14 भेद मोह में ही सम्मिलित हैं। उक्त सभी

प्रकार के भाव, हिंसा के प्रबल कारण हैं, अतः स्वयं हिंसा भी हैं।

'मार' शब्द मृत्यु के अर्थ में ही प्रायः प्रयुक्त हुआ है। बौद्ध ग्रन्थों में मृत्यु, काम का प्रतीक तथा क्लेश के अर्थ में 'मार' शब्द का प्रयोग हुआ है।[10]

'नरक' शब्द पापकर्मियों के यातास्थान[11] के अर्थ में ही आगमों में प्रयुक्त हुआ है। सूत्रकृतांगटीका में 'नरक' शब्द का अनेक प्रकार से विवेचन किया गया है। अशुभ रूप-रस -गन्ध-शब्द-स्पर्श को भी 'नोकर्म द्रव्यनरक' माना गया है। नरक प्रायोग्य कर्मों के उदय (अपेक्षा से कर्मोंपार्जन की क्रिया) को 'भावनरक' बताया है। हिंसा को इसी दृष्टि से नरक कहा गया है कि नरक के योग्य कर्मोंपार्जन का वह सबसे प्रबल कारण है, इतना प्रबल कि वह स्वयं नरक ही है। हिंसक की मनोदशा भी नरक के समान क्रूर व अशुभतर होती है।[12]

पृथ्वीकायिक जीवों का वेदना-बोध

15-से बेमि-

अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे,
अप्पेगे पादमब्भे, अप्पेगे पादमच्छे,
अप्पेगे गुप्फमब्भे, अप्पेगे गुप्फमच्छे,
अप्पेगे जंघमब्भे, अप्पेगे जंघमच्छे,
अप्पेगे जाणुमब्भे, अप्पेगे जाणुमच्छे,
अप्पेगे ऊरुमब्भे, अप्पेगे ऊरुमच्छे,
अप्पेगे कडिमब्भे, अप्पेगे कडिमच्छे,
अप्पेगे णाभिमब्धे, अप्पेगे णाभिमच्छे,
अप्पेगे उदरमब्भे, अप्पेगे उदममच्छे,
अप्पेगे पासमब्भे, अप्पेगे पासमच्छे,
अप्पेगे पिट्ठिमब्भे, अप्पेगे पिट्ठिमच्छे,
अप्पेगे उरमब्भे, अप्पेगे उरमच्छे,
अप्पेगे हियमब्भे, अप्पेगे हिययमच्छे,
अप्पेगे थणमब्भे, अप्पेगे थणमच्छे,
अप्पेगे खंधमब्भे, अप्पेगे खंधमच्छे,
अप्पेगे बाहुम्ब्भे, अप्पेगे बाहुमच्छे,
अप्पेगे हत्थमब्भे, अप्पेगे हत्थमच्छे,
अप्पेगे अंगुलिमब्भे, अप्पेगे अंगुलिमच्छे,
अप्पेगे णहमब्भे, अप्पेगे णहमच्छे,
अप्पेगे गीवमब्भे, अप्पेगे गीवमच्छे,
अप्पेगे हणुयमब्भे, अप्पेगे हणुयमच्छे,
अप्पेगे होट्ठमब्भे, अप्पेगे होट्ठमच्छे,
अप्पेगे दंतमब्भे, अप्पेगे दंतमच्छे,
अप्पेगे जिब्भमब्भे, अप्पेगे जिब्भमच्छे,
अप्पेगे तालुमब्भे, अप्पेगे तालुमच्छे,
अप्पेगे गलमब्भे, अप्पेगे गलमच्छे,
अप्पेगे गंडमब्भे, अप्पेगे गंडमच्छे,
अप्पेगे कण्णमब्भे, अप्पेगे कण्णमच्छे,
अप्पेगे णासमब्भे, अप्पेगे णासमच्छे,
अप्पेगे अच्छिमब्भे, अप्पेगे अच्छिमच्छे,
अप्पेगे भमुहमब्धे, अप्पेगे भमुहमच्छे,
अप्पेगे णिडालमब्भे अप्पेगे णिडालमच्छे,
अप्पेगे सीसमब्धे, अप्पेगे सीसमच्छे।
अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए।

15. मैं कहता हूँ- (जैसे कोई किसी जन्मान्ध[1] व्यक्ति को (मूसल-भाला आदि से) भेदे, चोट करे या तलवार आदि से छेदन करे, उसे जैसी पीड़ा की अनुभूति होती है, वैसी ही पीड़ा पृथ्वीकायिक जीवों को होती है।)

जैसे कोई किसी के पैर में, टखने पर, घुटने, उरु, कटि, नाभि, उदर, पार्श्व-पसली पर, पीठ, छाती, हृदय, स्तन, कंधे, भुजा, हाथ, अंगुली, नख, ग्रीवा (गर्दना), ठुड्डी, होठ, दाँत, जीभ, तालु, गले, कपोल, कान, नाक, आँख, भौंह, ललाट, और शिर का (शास्त्र से) भेदन-छेदन करे, (तब उसे जैसी पीड़ा होती है, वैसी ही पीड़ा पृथ्वीकायिक जीवों को होती है।)

जैसे कोई किसी को गहरी चोट मारकर, मूर्च्छित कर दे, या प्राण-वियोजन ही कर दे, उसे जैसी कष्टानुभूति होती है, वैसी ही पृथ्वीकायिक जीवों की वेदना समझना चाहिए।

विवेचन - पिछले सूत्रों में पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा का निषेध किया गया है। पृथ्वीकायिक जीवों में चेतना अव्यक्त होती है। उनमें हलन-चलन आदि क्रियाएँ भी स्पष्ट दिखती नहीं, अतः यह शंका होना स्वाभाविक है कि पृथ्वीकायिक जीव न चलता है, न बोलता है, न देखता है, न सुनता है, फिर कैसे माना जाय कि वह जीव है? उसे भेदन-छेदन करने से कष्ट का अनुभव होता है। ❖❖

सुसंस्कार से जीवन में निखार

- उपाध्याय मुनि श्री कन्हैयालालजी म.सा. 'कमल'

महानुभावों!

जिनवाणी श्रवण के लिए आप सभी के मन में जिस तरह से उत्तरोत्तर अभिरूचि बढ़ती जा रही है, यह संतोष का विषय है। मुझे आज इस बात की भी विशेष प्रसन्नता है कि आज की धर्म सभा में छोटे-छोटे बच्चों की उपस्थिति विशेष रूप से दिखाई दे रही है। अभिभावक जन, अपने बच्चों को धर्म प्रेरणाएँ प्रदान करें, सुस्कार दे एवं जब भी साधु-साध्वी जी म. का संयोग मिले तो उनके सान्निध्य में लेकर आएं यह अच्छी बात है।

बच्चों को आप जैसे संस्कार देंगें उसी रूप में इनका जीवन ढल जाएगा। आज जो बच्चे दिखाई दे रहे हैं, ये ही बच्चे आगे जाकर आपके परिवार, समाज और राष्ट्र की बागडोर को संभालेगें। बच्चों का मन बहुत ही कोमल, निर्मल एवं सहज होता है। इन्हें जैसा वातावरण प्राप्त होता है, वैसा ही ये ग्रहण करते हैं। मैं अक्सर कहा करता हूँ कि 'बच्चा' शब्द जो है वह शब्द ही इस ओर इशारा करता है। 'बच्चा' शब्द क्या कहता है। **"बच्चा"** अर्थात् बचा- अब यहाँ पर प्रश्न उभर सकता है कि किससे बचा? उत्तर स्पष्ट है- रोग द्वेष से बचा, क्रोध मान से बचा, कपट और लोभ से बचा। अव्रत, प्रमाद, कषाय आदि विकृतियों से बचा। जब हम इनसे बच्चे को बचाते हैं तो उसके जीवन में अनोखा निखार आता है। याद रखिये छोटी सी उम्र में ही जीवन बनता और बिगड़ता है। उम्र ज्यों-ज्यों बढ़ती है फिर सुसंस्कारों का बीजारोपण कठिन हो जाता है। अपनें राजस्थान की एक कहावत है कि **"पाका हांडा रे गार कोनी लागे"**। अर्थात् मिट्टी के बर्तन को पूरी तरह पक जाने के बाद उस पर कोई चाहे कि उस पर और मिट्टी लगा दें तो यह संभव नहीं है। इसी तरह बुढ़ापा आने के बाद क्या होना जाना है? बुढ़ापा आने पर तन और मन दोनों ही दृष्टियों से व्यक्ति का शरीर जीर्ण-शीर्ण हो जाता है। उस स्थिति में व्यक्ति क्या कर पाएगा? **बुढ़ापा** शब्द स्पष्ट चेतावनी देता है **'बु'** अर्थात् बुरी तर से **'ढा'** अर्थात् ढह जाना और **'पा'** अर्थात् पाप के कारण से। बुढ़ापे में तो बुरी तरह से ढह जाने के अतिरिक्त और शेष बचता ही क्या? तो मैं आपके समक्ष सुसंस्कारों की ओर सजगता रखनें की चर्चा कर रहा था।

भगवान महावीर की देशना का मंगल उद्देश्य ही यह था कि जन जीवन सुस्कारों से समृद्ध बनकर अपना आत्म हित संपादित करे। संस्कारों को हम दो रूपों में देख सकते हैं। सुसंस्कार और कुसंस्कार। सुसंस्कारों से सद्भावों की पौध पुष्ट संपुष्ट होती है। जीवन में विचारों का ऐक्य एवं आचारों का साम्य सधता है। विचार और आचार के ऐक्य एवं साम्य से निखार आता है, वरना विकार आता है। सुसंस्कार जीवन का सदुपयोग है सार्थकता है। जबकि कुसंस्कार जीवन का दुरूपयोग है, निरर्थकता है।

सुसंस्कारों की उपेक्षा, थोड़ी देर के लिए भी नहीं होनी चाहिए। आज इस दिशा में जैसी जागरूकता होनी चाहिए वह नहीं है। यह गहरी चिन्ता और चिन्तन का विषय है। परिवार समाज और राष्ट्र प्रत्येक क्षेत्र में सुसंस्कारों के पतन के कारण भीतर ही भीतर एक खोखलापन बढ़ रहा है। नैतिक धार्मिक मूल्यों के प्रति अनास्था का वातावरण बढ़ता जा रहा है। खान-पान में अशुद्धि बढ़ रही है। परम्परागत स्वाभाविक स्वच्छता नष्ट हो रही है। परिवार में धार्मिक वातावरण का अभाव, शिक्षा में अश्लीलता तथा भौतिकता की प्रधानता, सरकार की मद्य-मांस प्रचार योजना, दूरदर्शन टी. वी. आदि पर प्राचीन मूल्यों के ध्वसं का प्रसारण आदि कई कारण है जो सुसंस्कारों को समाप्त करने वाले सिद्ध हो रहे है। सद्संस्कार हीनता प्रकट अभिशाप है। यह अभिशाप गहरा है इस हेतु अपनें अपनें स्तर पर प्रत्येक व्यक्ति की जागरूकता अपेक्षित है।

आर्य संस्कृति और यहाँ के आर्यत्व से ओत प्रोत वातावरण की जो प्राचीन गरिमा रही है वह नितान्त असंदिग्ध है। किन्तु आज सुसंस्कारों का जिस तेजी से चतुर्दिक क्षय का दौर चल रहा है वह आर्यत्व के लिए गम्भीर चुनौती है। इस दिशा में अग्रगण्यों को सोचना चाहिए। निराशा किसी भी

समस्या का समाधान नहीं है। दिन प्रतिदिन बढ़ती अनैतिकता, भ्रष्टाचार और अप्रमाणिकता को रोकनें के लिए आर्यावर्त की जो आध्यात्मिक व्यवस्थाएँ हैं उन्हें अपनानें की ओर निष्ठायोग के साथ उनके अधिकाधिक प्रचार-प्रसार की खास जरूरत है। भारतीय मूलभूत आदर्शों के प्रति आत्मीय समर्पण रखकर आगे बढ़ा जाए तो विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि बुराईयों की बाढ़ रूक सकती है।

यह एक ज्वलन्त प्रश्न है कि आज का मासूम बालक जिस तेजी से विकृतियों का शिकार बन रहा है उसका कारण क्या है? यह पारिवारिक संस्कारों का प्रभाव है या वातावरण से प्रेरित बात का। वैसे इस बारे में प्रवचन के प्रारम्भ में ही मैं कुछ ईशारा कर चुका हूँ। यह स्पष्ट है कि पारिवारिक परिस्थितियाँ, संग का प्रभाव तथा सिनेमा और टेलीविजन आदि के माध्यम से दिन रात जो दिया-लिया जा रहा है, वह सुसंस्कार हीनता के संकट को गहरा और गहरा करता जा रहा है हिंसा, आंतक, तस्करियाँ और तोड़फोड़ को प्रश्रय देने के अतिरिक्त और प्राप्त हो ही क्या सकता है?

कई बार मैं यह कहा करता हूँ कि जो पिता अपने बच्चों के लिए अपार धन संपत्ति संचय कर छोड़ जाता है, उससे अधिक समझदार व विवेकशील पिता वह है जो अपनी संतान को संस्कार युक्त बनाता है। अत्यन्त कटु, किन्तु एकदम यह यथार्थ है कि वर्तमान अभिभावकों की आकांक्षाएँ इस कदर बढ़ गई है कि वे अपने बच्चों को जल्दी से जल्दी एक सफल व्यक्ति के रूप में देखना चाहते हैं। तीन साल का होते-होते तो वे अपने बच्चों को स्कूल में प्रवेश करा देना चाहते हैं। ये यही सोचते हैं कि कहीं आज के इस भागते दौड़ते समय में उनका बच्चा दूसरों से पीछे न रह जाए। ऐसे में अगर थोड़ा समय भी ऊपर हो जााता है तो माता-पिता अपनें बच्चों की वास्तविक उम्र कम लिखवाकर भी उसे प्रतिस्पर्धा में सबके साथ रखनें का प्रयास करते हैं।

माता-पिता की इसी महत्वकांक्षा के कारण ही बच्चे के हाथ से दूध की बोतल छूटे तब तक तो उसके कंधों पर बस्ते का बोझ आ चुका होता है। हांलाकि प्रत्येक व्यक्ति पाँच वर्ष की उम्र तक जितना सीखनें की क्षमता रखता है उतनी क्षमता आगे के जीवन में नहीं रखपाता लेकिन माता-पिता की यह महत्वकांक्षा बच्चे पर उसकी मानसिक एवं शरीरिक क्षमता से अधिक बोझ डालनें की है, जो कतई उचित नहीं है।

विद्यालय में प्रविष्टि आवश्यक है, समय पर इसे करना-कराना भी चाहिए पर इससे अधिक आवश्यक यह है कि घर आंगन का वातावरण इतना पवित्र रखनें की जागरूता रखी जाए कि बच्चे के मन पर सुसंस्कारों का रंग इतनी गहराई के साथ चढ़ जाए कि बच्चा फिर स्कूल बाजार, मौहल्ला, गाँव, गली अपने पराये किसी के बीच में जाए, आए, रहे, पर उसके मन को विकृतियों का अंश मात्र छू तक नहीं सके। कहा भी है-

दो अपनी संतान को, सदैव सुसंस्कार ।
सुसंस्कारों को कहा, प्रगति का आधार ।।

भारतीय वातावरण का यह वैशिष्ट्य ही मानना चाहिए कि यहाँ पर सुसंस्कारों के संपोषण, बीजारोपण का ध्येय सर्वदा सर्वाधिक रूप से प्रमुखता लिये हुए रहा है। पलनें में झूलनें वाले बच्चे को झुलाते हुए जो लोरियाँ, स्वर लहरियाँ, भारतीय सन्नारियों द्वारा सम्मुचारित हुआ करती थीं, वे उसे विकृतियों के दल दल से बचकर चलनें का आह्वान करती थी। मदालसा जैसी महान सन्नारियों के नाम सत्संस्कार प्रदान करने वाली महान् सन्नारियों की शीर्षस्थ पंक्ति में आज भी गौरव के साथ लिया जाता है।

प्राचीन भारत की ओर दृष्टिपात कीजिये तो सारे तथ्य तत्काल समझ में आ जाएंगे। प्रत्येक घर में माता, पिता, घर के बड़े बुजुर्ग, बूढ़ी दादी नानियाँ साँझ बढ़नें के बाद, रात्रि में शयन के पूर्व बच्चों को अपने पास बिठाकर व्यावहारिक नैतिक और आध्यात्मिक पहलू को ज्योतिर्मय बनाने के लिए संप्रेणाएँ प्रदान करती थी सद्गुणों से समृद्ध सत्पुरूषों एवं शील की प्रतिमूर्ति सती साध्वियों के जीवन प्रसंगों को छोटी-बड़ी कहानियों के रूप में प्रस्तुत करती थी। साथ ही छोटे-छोटे किन्तु अत्यन्त महत्वपूर्ण सुभाषितों, नीति वचनों व चिन्तन सुक्तों के द्वारा सभी के प्रति सद्भाव, बड़ों के प्रति पूज्य भाव का महत्व एवं हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील आदि से होने वाले दुष्परिणामों का इस तरह से विश्लेषण प्रस्तुत करती थी कि बच्चों के मन में सहजरूप से विशष्ट स्फुरणाएँ जागृत होती एवं वे सुसंस्कारों से समृद्ध बनकर एक ऐसे महनीय

व्यक्तित्व के रूप में उभर कर आते थे कि अशुभ अपावन जैसे विचार किंचित् मात्र भी उनके आस-पास आने का या उन पर छानें का साहस स्वप्न में भी नहीं कर पाते।

प्राचीन काल में धर्म स्थानकों एवं धर्म गुरुओं के चरणों में अपने संग बच्चों को भी लेकर जाने का जो क्रम रहा करता था वह सुसंस्कारों को पुष्ट करने वाला होता था आज कितनें ऐसे घर हैं जिनमें अभिभावक इस तरह की जागरूकता का निर्वहन करते हुए बच्चों को सुसंस्कार देते हैं। स्थितियाँ सचमुच बड़ी दयनीय है। स्वयं अभिभावकों का जीवन व्यवहार आज विकृतियों के चक्रव्यूह में कैद जैसा लगता है। जो स्वयं मर रहे हैं अथवा भटक रहे हैं वे अपने बच्चों को, परिमण्डल को, किस प्रकार जीवन अथवा दिशा बोध दे पाएंगे?

सुसंस्कारों के अभाव में, आज चारों ओर देखनें को मिलता है, कई मासूम बच्चे शराब, भांग, अफीम, धूम्रपान आदि नशे के शिकार बनते जा रहे हैं। अनेकों चोरियाँ करने लगते हैं। हँसने, खेलनें और पढ़ने-लिखनें की उम्र में कई छोटे-छोटे बच्चे अपने पेट के आग बुझानें के लिए होटलों में, पत्थरों की खादनों में, मामूली मजदूरी के बदले हाड़तोड़ मेहनत करने के लिए विवश बन जाते हैं। कई बार यह भी देखा जाता है और स्वयं मासूम बच्चों द्वारा भी सुना गया है कि भरपूर श्रम करने के बावजूद यदा कदा उन्हें मालिकों की फटकार भी सुननें को मिलती है तथा कई बार पिटाई भी हो जाती है। अनेक बार मिट्टी तोड़ते-तोड़ते हथोड़े से अंगुलियों में लग जाती है। पूरी तरह लहुलूहान हो जाते हैं फिर भी उन्हें कार्य करना ही पड़ता है।

इस तरह की नाजुक स्थिति के मूल में घर की आर्थिक हालत का दयनीय होना भी एक कारण हो सकता है जिसे नकारा नहीं जा सकता। पर एक प्रमुख कारण सुसंस्कारों का अभाव तो है ही यदि सुसंस्कार प्रारम्भ में ही दिये जाएँ तो बच्चा मानसिक दृष्टि से रुग्ण नहीं बनता, बौद्धिक विकृति से ग्रस्त नहीं होता। विकृतियों से प्रभावित होनें की भूल नहीं करता वह स्वयं अपनें लिए सुसंस्कारों के बल पर अनुकूल वातावरण निर्मित कर लेता है। बच्चा कभी भी गलत प्रवृत्तियों में लग जाए और माता पिता को इस बात का अहसास होने लगे तो तुरन्त उसे उधर से हटाने का प्रयत्न करना चाहिए। बच्चे को कुप्रवृत्ति को नजरअंदाज करना अथवा अभी यह नादान है यह सोचकर गौण कर देना या उसे हंसी में लेकर यूँ ही निकाल देना बच्चे के भविष्य को अंधकार से आच्छादित करना है।

एक कहानी हैं जिसे मैं कई बार सुनाया करता हूँ- पन्द्रह सोलह वर्ष का एक युवक हत्या के अपराध में पकड़ा गया। उसे राजा के सामने पेश किया गया। राजा ने कहा- अभी मात्र तुम्हारी पन्द्रह सोलह वर्ष की उम्र है और तुमने हत्या कर कर डाली सच सच बताओ, तुमनें हत्या किस प्रयोजन से की। उसनें हत्या का कारण आभूषण संपत्ति आदि अमुक से प्राप्त करना बताया। राजा द्वारा उसे फाँसी की सजा सुना दी गई, साथ ही पूछा गया कि तुम्हारी अंतिम इच्छा क्या है? बच्चे ने जवाब दिया- मैं एक बार अपनी माँ से मिलना चाहता हूँ बस यही मेरी अंतिम इच्छा है।

राजा की ओर से आदेश पाकर तुरन्त कुछ लोग गए और उसकी माँ को ले आए। राजा एवं मन्त्री तो वहाँ थे ही कई अन्य लोग भी उपस्थित थे। बालक से कहा 'जाओ अपनी माँ से मिल लो।' माँ रो रही थी। माँ ही बालक के लिए सर्वस्व होती है। उसनें बड़ी ममता के साथ बच्चे को अपनें हृदय से लगाना चाहा, तभी बच्चे ने माँ की नाक काट खाई। माँ चिल्ला पड़ी। उधर राजा के मन में भी बालक के इस व्यवहार पर बड़ा विचार पैदा हुआ उन्होंने बच्चे से कहा- तुम्हें फाँसी तो होनें वाली है, मगर जरा तुम मुझे यह बताओ कि आज तुमनें नाक क्यों खाया और वह भी माँ का।

उसनें जवाब दिया- "राजा साहब! मैं अपनी माँ की बहुत इज्जत करता हूँ। माँ के प्रति मेरे मन में पूर्ण सम्मान भाव है लेकिन आज मैं इस दशा में पहुँचा हूँ तो वह मेरी माँ के कारण ही पहुँचा हूँ।" राजा ने पूछा- ऐसी क्या बात हुई? बालक ने स्पष्ट किया - जब मैं छोटा था, मतलब आज से कुछ वर्षों पूर्व जब मैं आठ-नौ वर्ष का था। मैं घर से बाहर खेल रहा था। तभी उधर से कोई एक व्यक्ति निकला, उसकी जेब से अचानक बटुआ गिर पड़ा। बटुआ गिरनें का उसे ध्यान ही नहीं आया, उसके आगे बढ़ते ही मैंने चुपचाप उसे उठा लिया और खोलकर देखा तो उसमें बारह रुपये दिखाई

दिये, मैं घर पर पहुँचा और माँ को बटुआ दिया तो माँ ने बटुआ देखा और मुझसे पूछा कि 'तू कहाँ से लेकर आया।' मैंने सारी बात ज्यों की त्यों माँ को बतला दी।

उस समय माँ ने मुझे कहा- 'तेरे को किसी ने देखा तो नहीं।' मैंने कहा- 'कोई भी देखनें वाला नहीं था।' उस समय मेरी माँ बोली- 'देख! एक बात सुन, ले आया इस बटुए को तो कोई बात नहीं पर कभी कोई देख रहा हो तो हरगिज मत लाना।' राजन्! यह पहला अपराध मेरे द्वारा हुआ और इसमें मुझे मजा आनें लगा। मैंने सोचा- मैं रुपया लेकर आया और माँ खुश हुई। बस, उसी दिन से मेरी आदत पड़ गई, चोरियों में मुझे रस आनें लगा और उस आदत के ही फलस्वरूप आज मैं फाँसी के फंदे पर पहुँचा। अगर उस रोज माँ ने वो बारह रुपये लेनें के बजाय मुझे चाँटा मार दिया होता, मेरा कान मरोड़ा होता तो भले ही मैं रोता, चीखता-चिल्लाता ओर उस बटुवे को वापिस देनें के लिए मुझे यदि दौड़ाया होता तो आज मेरी यह दशा नहीं होती।

इसी तरह की एक और घटना है। जिसकी पिछले दिनों एक समाचार पत्र के माध्यम से मुझे जानकारी प्राप्त हुई। बच्चों के द्वारा बच्चों का अपहरण और हत्या की घटना जब मैंने पढ़ी तो मेरा अन्दर हृदय पीड़ा से द्रवित हो उठा। घटना इस प्रकार घटित हुई की सतरह और पन्द्रह वर्षीय दो बच्चों द्वारा पाँच और सात वर्षीय दो बालकों का अपहरण किया गया। अब यह प्रश्न उभरना स्वाभाविक है कि उन्होंनें ऐसा आखिर क्यों और कैसे किया? उन्होंनें घटना के एक दिन पहले "पाप की दुनिया" नामक एक फिल्म देखी थी। पाप की दुनिया फिल्म में उन्होंनें जो कुछ देखा समझा, उससे उनका मन उत्तेजित हुए बिना नहीं रह सका, मिल बैठकर उन्होंने एक योजना तैयार की ओर उसे मूर्त स्वरूप दे दिया। समाचार पत्र ने जो टिप्पणी की उसमें स्पष्ट कि बच्चों की हत्या करना उनका ध्येय नहीं था। वे बच्चों का अपहरण करके उनकी फरौती में कुछ रुपये प्राप्त करना चाहते थे। फिल्म में उन्होंने ऐसा करते हुए उन्होंने देखा तो उन अवयस्क बच्चों ने भी दो मासूम बच्चों को मौत के मुँह में पहुँचा दिया।

कई कहते हैं कि सिनेमा और टी.वी. पर रामायण, महाभारत, ओउम् नमः शिवाय आदि धार्मिक शिक्षाप्रद सीरियल का प्रसारण भी तो होता है। यह मैं मानता भी हूँ कि 'ऐसा हुआ है एवं आज भी हो रहा है। पर ऐसे सीरियल जो सुसंस्कार देते हैं वे कितनें से समय के लिए प्रसारित किये जाते हैं और जबकि उनके अतिरिक्त चौबीस घंटों में से अधिकांश घंटों में जो प्रसारण होता है वह कितना विषपूर्ण एवं घातक होता है, इस ओर हम कहाँ कितना ध्यान दे रहे हैं?

प्रस्तुत चर्चा के अन्तर्गत मैं फिर आपसे कहना चाहता हूँ कि सुसंस्कार हीनता का संकट सबसे बड़ा संकट है और साथ ही यह संकट बड़ा विकट भी है। आँख मूंद कर बैठना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। सुसंस्कारों का हनन जो हो रहा है उस पर विराम लगे ऐसे सकारात्मक प्रयत्न अनिवार्य है। अन्यथा सुसंस्कारों का हनन किसी भी व्यक्ति या समाज के लिये नहीं अपितु समूची मानव संस्कृति के लिए बड़ा खतरनाक है।

सुसंस्कारों को संतुष्ट करनें में सहायक सत्साहित्य का अधिकाधिक प्रचार प्रसार होना चाहिए व दूरदर्शन पर जासूसी एवं अश्लील प्रसारण की शिक्षा शैली में परिवर्तन कर नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों को संपुष्ट करने वाली पद्धति के समावेश के प्रयत्न अविलम्ब करने करवानें चाहिए। इसके साथ एक ठोस बात यह है कि जिस घर आंगन में बच्चा रहता है, उसका वातावरण पूर्णतः पवित्र व सुसंस्कार का आगार बन कर रहे। बालक के लिए प्रथम संस्कार केन्द्र तो उसका अपना घर ही है। घर के वातावरण के अनुरूप ही बच्चे का जीवन बनता बिगड़ता है। बालक का हृदय मूलतः निश्छल एवं निष्पापमय होता है। वह वही ग्रहण करता है जो उसे आसपास में उपलब्ध होता है। घर की दीवारों पर हीरों, हीराइनों, एक्टरों आदि के चित्रों को कतई स्थान नहीं दिया जाए। जासूसी उपन्यास एवं अश्लीलता भी जिससे शरमा जाए ऐसे उपन्यास एवं संस्कारों को विकृत बनानें वाला साहित्य घर में नहीं रखा जाए। ऐसे केसेट्स भी घरों में नहीं बजाए जाए। जिन्हें सुनकर बालक गलत दिशा में स्वयं को प्रयुक्त कर बैठे। प्रत्येक घर में नियमित रूप से पाँच मिनिट के लिए ही सही प्रभु प्रार्थना सामूहिक रूप से अवश्य की जाए। देव दर्शन, गुरु दर्शन की अनिवार्यता होनी चाहिए। घरों की

दिवारों को महापुरूषों के चित्रों एवं चिन्तन प्रधान अच्छे स्टीकरों से सजाई जाए। आगम साहित्य, प्रवचन साहित्य, जैन कथा उपन्यास साहित्य व सुसंस्कार वाली कैसेट्स का संग्रह घरों में रहे ही रहे।

अच्छे साहित्य का प्रभाव जीवन पर पड़ता ही है। आज अच्छे साहित्य की कोई कमी नहीं है। कमी है तो एकमात्र यही है कि हम सत्साहित्य से प्रमाद वश लाभ उठाना नहीं चाहते। आडंबर प्रधान प्रवृत्तियों से आप अपने धन को पानी की तरह बहा रहे हैं, पर जिधर ध्यान देना चाहिए, उधर कम ध्यान दे रहे है। मेरा आपको विशेष संदेश है कि आप सत् साहित्य के प्रकाशन एवं प्रचार प्रसार की ओर प्रमुख रूप से ध्यान दे। इसका प्रचार प्रसार भी संस्कारों के निर्माण में सहायक सिद्ध होगा। इस तरह कई विधायक प्रयत्न हों। जिनकी उपेक्षा क्षण भर के लिए भी नहीं होनी चाहिए।

मुझे मेरा बचपन याद है पूज्य श्री प्रतापमल जी म. अपनें प्रवचनों की अमृत वृष्टि करते हुए प्रायः फरमाया करते थे कि आपके क्रियाकलाप धर्ममय बनें, शुद्ध नैतिक आपका पुरुषार्थ हो उसके लिए प्रारम्भ से ही समुचित वातावरण और सात्विकता मूलक संस्कारों की ओर ध्यान देना आवश्यक हैं। बाल्यकाल के संस्कार तुरन्त समाप्त नहीं होते। व्यक्ति का निर्माण संस्कार और वातावरण पर निर्भर करता है। व्यक्ति, हिंसक या अहिंसक दोनों ही वातावरण और संस्कार से ही बनता है। संस्कार मात्र इस जन्म के ही नहीं पूर्व जन्म के भी काम आते हैं। संस्कारों का जीवन में कितना प्रभाव है इसका परीक्षण कदम-कदम पर आप स्वयं कर सकते हैं। संस्कार और वातावरण त्यागमय होना चाहिए। घर में वातावरण त्याग का मिले, माँ स्तनपान के साथ ही सदाचार का पाठ सिखा दे तो वह बच्चा भौतिक वातावरण में जाकर भी त्यागी बन सकता है। महात्मा गांधी को अपनी माँ से सुसंस्कार एवं सदाचार का पाठ मिला तो वे अमेरिका जाकर भी माँस मदिरा से दूर रहे।

बच्चों के अभिभावक, शिक्षक, धर्म गुरु और राजनेता जीवन में सुसंस्कारों के सृजन की दिशा में पूर्ण रूप से प्रयत्न करे ताकि संस्कार हीनता के संकट का उन्मूलन हो सके। मानव को पासविकता के चक्रव्यूह से मुक्तकर मानवीय ध रातल पर खड़ा किया जा सके। यदि इस ओर आपनें जागरूकता पूर्वक ध्यान दिया तो निश्चित रूप से एक नए वातावरण का निर्माण हमारे परिवार, समाज और राष्ट्र में हो सकेगा। सुसंस्कारों के महत्व पर मैंने काफी कुछ कह दिया है। अंत में इस एक दोहे के साथ आज की चर्चा को विराम दे रहा हूँ-

सुसंस्कारों को सदा, करते हैं जो पुष्ट ।
वे रहते हैं हर तरह, जीवन में संतुष्ट ।।

❖❖

कण्मडलु में भूमण्डल का अर्थशास्त्र

बात उस समय की है जब प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह वित्तमंत्री थे। वे प्रमुख दिगंबर जैन मुनि सिद्धांत चक्रवर्ती, श्वेतपिच्छाचार्य, श्री विद्यानंद जी मुनिराज के दर्शन हेतु जैन शोध संस्थान, कुंद-कुंद भारती पधारे।

मुनि विद्यानंद जी की ज्ञानाराधना की तुलना नहीं की जा सकती। उन्होंने सभी धर्मों, दर्शनों का गूढ़ अध्ययन किया है। ज्ञानचर्चा के दौरान डॉक्टर मनमोहन सिंह आचार्य विद्यानंद जी के कमण्डलु को गौर से देख रहे थे।

यह भांप कर विद्यानंद जी बोले - 'आपको मालूम है देखो हमारे कमण्डलु में संपूर्ण भूमण्डल का अर्थशास्त्र छिपा है।' डॉक्टर मनमोहन सिंह ने मंद-मंद मुस्कान के साथ पूछा - 'कैसे?' मुनि श्री ने कमण्डलु उठाकर कहा - 'देखो इसका आने का द्वार बड़ा है, पर जाने का छोटा, उसी प्रकार संपूर्ण अर्थव्यवस्था तभी उन्नति कर सकती है जब उसके आय के द्वार बड़े हों और व्यय के द्वार छोटे। प्राचीन शास्त्रों में भी उल्लेख है - **आयव्ययमुखयोर्मुनिकमण्डलुरेव निदर्शनम्।** (आचार्य सोमदेवसूरि, नीतिवाक्यामृत 8/6) अर्थात् आय और व्यय का सर्वोत्तम उदाहरण मुनि के कमण्डलु को समझना चाहिए।' वित्तमंत्री आचार्यश्री के अगाध ज्ञान पर आश्चर्यचकित हो गए। बोले - 'लगता है मैं तो अर्थशास्त्र का विद्यार्थी भर हूं, गुरु तो आप ही हैं।'

❖❖

(गतांक से आगे ...)

श्रमण संघ हो अविचल मंगल

जैन श्रमण संघ अतीत से आज तक

- उपाध्याय प्रवर पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.

प्रथम साधु-सम्मेलन अजमेर : समन्वय का शुभारम्भ

इस चुनौती से वातावरण तनावपूर्ण हो गया तो पुनः श्री जवाहरलाल जी म. ने कहा कि- "यदि कोई 11 अंग और 12 उपांग और अन्य को सत्य न माने, उसे न्यूनाधिक समझे या विपरीत प्ररूपणा करे तो मैं तो कभी उसकी छाया तक में नहीं रहना चाहता। यदि सूत्र छूटे तो हमारा जीवन छूटा। हम ऐसे मातृप्राय जीवन को जीना स्वीकार नहीं करते।"

इसके पश्चात् युवाचार्य श्री काशीराम जी म. ने कहा कि निर्णय पूर्वक व्यवहार को स्थिर रखा जा सकता है। हमें उस पक्खी संवत्सरी को मानने में कोई हानि नहीं है या जो कमेटी द्वारा निश्चित हो जाएगा उसे भी हम सर्वथा मानने को तैयार है।

इस वाद-विवाद का निर्णय करने के लिए एक कमेटी बना दी गई। 7 मुनिराज इस कमेटी के सदस्य बनाए गए जिनके नाम थे सर्वश्री शतावधानी रत्नचंद्रजी म., श्री मणिलाल जी म., श्री पन्नालाल जी म., उपाध्याय श्री आत्मराम जी म., गणि श्री उदयचंद जी म., युवाचार्य श्री कांशीराम जी म.।

पूज्य आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. को भी इसका सदस्य बनने का आग्रह किया गया। इस पर आपने अपना निश्चय दोहराया कि मैंनें पहले ही स्पष्ट कह दिया था कि **"मैं प्रतिनिधि नहीं हूँ"** अतः मेरा मेम्बर बनना भी अच्छा नहीं। फिर भी आप आग्रह कर रहे हैं तो मैं सम्मतिदाता हो सकता हूँ।" फिर भी कहूँगा कि संवत्सरी का निर्णय सर्वसम्मति से करा लीजिए तो सर्वप्रथम उसी निश्चय को मैं भी मानूँगा। पूज्य श्री जी के इन शब्दों में गुत्थी के हल होने का बल था।

कार्यवाहक शांतिरक्षक मुनि रत्नचन्द्र जी म. ने सारी बहस को समाप्त घोषित करते हुए सात मुनियों की कमेटी को सर्वोच्च अधिकार दे दिया। इसके बाद फिर आचार्य विषयक प्रस्ताव रखा गया। इस कमेटी में 22 मुनिराज बनाए गए जिनके नाम हैं - 1. गणि श्री उदयचंद्र जी म., 2. श्री अमोलक ऋषि जी म., 3. श्री छगनलाल जी म., 4. श्री उपाध्याय श्री आत्माराज जी म., 5. श्री पुरुषोत्तमलाल जी म., 6. श्री मणिलाल जी म., 7. श्री श्यामलाल जी म., 8. पं. श्री हर्षचन्द्र जी म., 9. शतावधानी श्री रत्नचंद्र जी म., 10. जैन दिवाकार श्री चौथमल जी म., 11. कवि श्री नानकचंद्र जी म., 12. युवाचार्य श्री कांशीराम जी म., 13. श्री ताराचंद्र जी म., 14. श्री पन्नालाल जी म., 15. श्री पृथ्वीचंद्र जी म., 16. श्री फूलचंद्र जी म., 17. श्री कुंदनलाल जी म., 18. श्री सौभाग्यमल जी म., 19. श्री समस्थमल जी म., 20. श्री मोहनऋषि जी म., 21. श्री हस्तीमल जी म., 22. श्री चौथमल जी म. मारवाड़ी आदि।

इस समिति ने प्रस्ताव का प्रारूप तो बनाया मगर कारण विशेष एवं पूज्य श्री ज्वाहरलाल मं. का स्वास्थ्य ठीक न होने से इसे पेश नहीं किया गया।

दीक्षा योग्यता एवं आयुष्य पर बहस

इस विषय में युवाचार्य श्री कांशीराम जी ने माता पिता की आज्ञा को अनिवार्य बताया। **उपाध्याय श्री आत्माराम म. ने 16 वर्ष की आयु की सम्मति दी, श्री अमोलक ऋषि जी म. ने 11 वर्ष की आयु ठीक बताई।** इस पर कई दिन तक शास्त्रार्थ चला और विवाद पर कोई निर्णय नहीं हो सका।

प्रातः 10 बजे के समय और संख्या 3 बजे सेवा वैय्यावच वाले जल आदि का प्रबंध कर दिया करते थे। शेष समय पर चर्चा एवं निष्कर्ष होता था।

कोरम का निर्णय पू. श्री चौथमल जी म. ने कम से 70 संतो की उपस्थिति अनिवार्य करके हल कर दिया। शतावधानी रत्नचन्द्र जी म. ने इसका अनुमोदन कर दिया। यही सम्मति श्री कजोड़ीमल जी म. की भी थी।

श्री हस्तीमल जी म. ने कहा कि उपस्थित संतों से सम्मति लेकर प्रस्ताव पास करा दो। श्री समरथमल जी ने कहा कि प्रस्ताव सबके सामने हो। श्री समरथमल जी ने कहा कि

प्रस्ताव सबके सामने हो। इसके बाद दीक्षा वय सम्बन्धी विवाद को समाप्त कर दिया गया। सदन में प्रस्ताव वापस ले लिया गया।

"श्री वर्धमान संघ" की स्थापना का प्रयास

अजमेर सम्मेलन में प्रथम बार सामाजिक व्यवधान की समाप्ति के लिए एक प्रस्ताव **'श्री वर्धमान संघ'** की स्थापना के लिए रखा गया। इस प्रस्ताव का संक्षिप्त प्रारूप था कि-यदि श्री वर्धमान संघ स्थापित कर लिया जावे तो संघ सर्वतोभद्र हो जाएगा। इससे सम्प्रदाय नहीं रह पाएगा, सबकी समान समाचारी हो जाएगी। आपस में झगड़े निपट जाएंगे।

इसकी स्थापना पर **संवत्सरी, दीक्षा आयुष्य संबंधी** प्रश्न और अन्य व्यवस्था पर संघाचार्य सुगमतया निर्णय कर सकेंगे। परन्तु संघ में प्रवेश एक प्रायश्चित के पश्चात् ही होगा। इसका निर्णय भी सर्वोच्च आचार्य द्वारा ही होगा। इस स्थिति में यदि कोई साधु-साध्वी वर्तमान संघाचार्य को अयोग्य समझकर अनुशासित न रहे तो उसे संघ में प्रवेशाधिकार भी न होगा।

इस मसौदे का अशय बड़ा ही स्पष्ट था कि एक आचार्य के नेतृत्व में समानधिकारी सोसायटी की तरह संघ व्यवस्थापन हो मगर आचार्य को सर्वाधिकार सम्पन्न (प्रधान) माना जाए। जिसके निर्देश पर ही दीक्षा, शिक्षा, परीक्षा और संघ का दायित्व रहे।

इस पर अधिकांश संत साध्वीजी म. ने मौन रखकर अपनी राय व्यक्त नहीं की, किन्तु अपने अधिकारों को सीमित होता देखकर समर्थन भी व्यक्त नहीं किया। फलस्वरूप जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा व्यक्त एकता का आग्रह सन् 1906 से सन् 1933 तक भी कोई फलश्रुति न पा सका।

कुल मिलाकर एक संघ की एक आचार्य के नेतृत्व की कल्पना आकार तो नहीं ले सकी, मगर इसने एकता की ललक को व्यक्त कर ही दिया। **जिस साधु समाज में सदियों से संगठन का अभाव रहा है। उसे एक ही सम्मेलन से जोड़ पाना असम्भव सी बात है। इस सत्य को स्वीकार करते हुए सम्मेलन की कार्यवाही आगे बढ़ती रही।**

एक आचार्य का प्रस्ताव

एक संघ की स्थापना करने संबंधी प्रस्ताव पर चर्चा के मध्य श्री मणिलाल जी म. (गुजराती) ने बड़े ही उच्च स्वर में कहा कि- **"जैन समाज की उन्नति उसी समय हो सकती है। जब 32 साम्प्रदायिक टुकड़ों को जोड़कर एकता के सूत्र में सबको पिरो लिया जाए। ये टुकड़े सिद्धांत पर नहीं अभिमान और कषाय भाव पर आधारित व्यक्तिगत मनौमालिन्य पर आधारित है। अतः समय की मांग है कि संत समुदाय एक हो जाएं।"**

इस भाव धारा से सहमत होते हुए पूज्यवर श्री जवाहरलाल जी म. सा. ने कहा कि- मुझे अपने समाज का तथा परमात्मा के शासन का अवनत होना बड़ा दुःखद प्रतीत होता है। इसी से मेरे मतानुंसार एक योजना बन सकती है। यद्यपि ये मेरा कथन है कोई ईश्वरीय वाक्य नहीं है।

"मैं कहता हूँ कि यदि लोक परलोक का भय है। आत्मा में सुधार की स्थापना का आग्रह है, जिन शासन को उज्जवल करने के भाव हैं तो होश हवाश तन्दुरूस्त करके प्रसन्नतापूर्वक श्री वर्धमान संघ को स्थापित करके उसी शरण में आ जाना चाहिये।" हमें यह समझना चाहिये कि-हम अपने आपके लिए एकता का, शांति का, सम्पन्नता व सुधार का द्वार खोल रहे हैं। यह संघ बलात थोपा नहीं जाएगा, यह तो प्रसन्नता का सौदा है। *(... क्रमशः)*

जीवन चरित

गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रमुख अनुयायियों में एक थे। एक बार किसी मित्र ने उनसे कहा – 'आप इतने लंबे समय तक स्वामी जी के घनिष्ठ संपर्क में रहे हैं। कितना अच्छा होता कि आप उनका एक जीवन चरित लिख डालते'। 'उनका जीवन चरित लिखने की मैं कोशिश कर रहा हूं। 'विद्यार्थी जी तपाक से बोले – 'वाह! कब तक पूरा होगा?' मित्र ने उत्साहित होकर पूछा – 'अभी देर लगेगी।' विद्यार्थी जी जरा संकोच से बोले – 'क्यों भला?' मित्र ने आगे पूछा। 'असल में मैं उसे कागज पर नहीं, अपने जीवन में लिखने की कोशिश कर रहा हूँ, विद्यार्थी जी ने स्पष्ट किया।' ❖❖

साभार :- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति ...

प्रवर्तक पंडित रत्न श्री शुक्लचंदजी महाराज

विशुद्ध शुक्ल चेतना के महापुंज प्रवर्तक पंडित रत्न श्री शुक्लचंद जी महाराज जैन गगन के तेजस्वी संत थे और उनका जीवन तप, संयम, क्षमा, मैत्री, अनुशासन व मर्यादा आदि गुणों से भरपूर था। वे इस युग के प्रकाश स्तम्भ व भेदभाव से ऊपर उठे मनस्वी लोक संत की महिमा से मंडित थे।

भाद्रपद शुक्ला द्वादशी वि.सं. 1951 में हरियाणा अंचल के 'दड़ौली' ग्राम के पंडित श्री बलदेवराज जी एवं श्रीमती महताबदेवी की गोद में इस अद्भुत चेतना का अवतरण हुआ। माता-पिता ने अपने कुल दीपक को संबोधित किया- 'शंकर' नाम से।

उत्तम संस्कारों से संस्कारित शंकर शैशव की देहरी पार करता हुआ किशोरावस्था को उपलब्ध हुआ। शिक्षा व विद्या से स्वयं को अनुशासित करते हुए यौवन के द्वार पर पहुँचे हुए शंकर का माता-पिता ने सुदर्शन व सुदक्ष कन्या से सगाई संबंध कर दिया।

यौवन के रंगीन व भविष्य के सुनहरे स्वप्नों में आकण्ठ डूबा शंकर अपने मित्र से हृदय की प्रसन्नता व्यक्त करने उसके घर पहुँचा। मित्र की माता का मुख देखकर शंकर पूछ बैठा -

"मातुश्री। आपके चेहरे पर यह विषाद कैसा?"

अपनी चिंता का कारण बताती हुई मित्र की मातेश्वरी से अवरूद्ध स्वर में कहा- "बेटा, तुम्हारी मंगेतर कभी तुम्हारे मित्र की मंगेतर थी। पिता श्री का साया सिर से उठ जाने के पश्चात् उन्होंने तुम्हारे मित्र से संबंध विच्छेद कर दिया। यह दुर्भाग्य हमारा था चूंकि हम असहाय हो गए थे।"

यह सुनते ही शंकर गम्भीर हो गया। मन ही मन विचार करने लगा कि मनुष्य कितना संकीर्ण व स्वार्थी है। बस यही घटना जीवन अभ्युदय वैराग्य की निमित्त बन गई। मित्र की माता के समक्ष शंकर के भीष्म प्रतिज्ञा की कि "मैं विवाह न करके आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करूँगा और अपने मित्र की मित्रता का निर्वाह करूँगा।"

आषाढ़ पूर्णिमा वि.सं. 1973 को 23 वर्ष की तरूणाई में जैनाचार्य पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज के सुशिष्य भारत केसरी श्री काशीराम जी महाराज के चरणों में स्वयं को समर्पित कर साधुता की महासम्पदा से सुशोभित होकर शंकर से मुनि शुक्ल बन गए।

मुनि बनते ही अपने आपको ज्ञान साधना में लगातार उतारते गए। क्रांतिकारी चेतना व सृजनशील व्यक्तित्व ने संघ व समाज को अभिनव दृष्टि के साथ-साथ अपने विचारों का अनमोल कोष साहित्य के रूप में प्रदान किया। जैन रामायण, जैन महाभारत, जम्बूकुमार, वीरमति, जगदेव आदि अनेक चारित्र, तत्त्वचिंतामणि, नवतत्त्वादर्श, धर्म-दर्शन संबंधी आपकी अनमोल रचनाएँ है, जो साहित्यिक दृष्टि से सरल एवं सुबोध है। पढ़ने में रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक है।

जाति के ब्राह्मण, संयम से आत्मनिष्ठ, विद्या के अभ्यासी, ज्ञान की सम्पूर्ण गरिमा व सूक्ष्म बुद्धि के कारण आप पण्डित कहलाए। आगे चलकर सरस्वती के अमृत पुत्र पण्डित जी महाराज के नाम से विख्यात हुए। सच्चे पाण्डित्य की बहती श्रुतगंगा में अनेक संत-साथियों व मुमुक्षुजनों ने ज्ञान का स्थान किया।

वि.सं. 2002 में भारत केसरी आचार्य काशीरामजी के निर्वाण के पश्चात् आपके कंधों पर संघ का सम्पूर्ण दायित्व आ पड़ा और वह समय आपके जीवन की अग्नि-परीक्षा का था। एक ओर था- सामाजिक विघटन, दूसरी और परिवारिक संक्लेश व तीसरी और स्थानकवासी परंपरा का विरोधात्मक रूप। इस प्रकार त्रिकोणात्मक संघर्ष में अपने जीवन के दीर्घकालीन अनुभवों के माध्यम से और पृथ्वी समान गंभीरता व सहिष्णुता के बल पर विजय पाई।

पंजाब के स्थानकवासी समाज के इतिहास में यह काल सबसे भयानक था। ऐसे समय में पंडितजी महाराज ने दूरदर्शिता से समाज को छिन्न-भिन्न होने से बचाया और तात्कालीन समाज ने आपको अपना भावी नायक स्वीकार किया व ससम्मान युवाचार्य पद प्रदान किया। वि.सं. 2003

से लेकर 2009 तक आपने इस पद को कुशलता से निभाया।

समस्त स्थानकवासी श्रमण परस्पर एकता के सूत्र में आबद्ध हो, एक अनुशास्ता के अनुशासन व आज्ञा में सभी ज्ञान-ध्यान व संयम-साधना करें, समाज साम्प्रदायिक कलह के विषाक्त वातावरण से मुक्त हो - यह भावना युवाचार्य शुक्लमुनि के मानव हृदय को आलोकित कर रही थी। वैशाख शुक्ला तृतीया रविवार वि.सं. 2009 ईस्वी सन् 1952 को सादड़ी सम्मेलन में संगठन का सपना साकार हुआ।

भारत के इतिहास में यह एक नया अध्याय जुड़ गया; जबकि विभिन्न सम्प्रदायों में बँटी हुई सारी स्थानकवासी साधु संस्था एक आचार्य के नियंत्रण में हो गई। इस संगठन को नाम दिया गया 'श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ'। पूज्य श्री शुक्लचंदजी महाराज ने आरम्भ से लेकर अंत तक पूर्ण सहयोग देकर वर्षों से जलती हुई ईर्ष्याग्नियों को शान्त किया।

सर्वानुमति से इस सम्मेलन में श्रमणसंघ के प्रथम अनुशास्ता आचार्य श्री आत्मारामजी महाराज मनोनीत हुए और उपाचार्य बने- श्री गणेशीलालजी महाराज। संघ के विकास के लिए मंत्री परिषद का गठन हुआ जिसमें 15 मंत्री नियुक्त किये गए व प्रधानमंत्री का दायित्व श्री आनन्दऋषिजी महाराज को सौंपा गया और शेष मंत्रिमंडल की व्यवस्था में आपको पंजाब श्रमणसंघ के मंत्री पद पर नियुक्त किया गया।

वैशाख शुक्ला त्रयोदशी 7 मई, सन् 1952 को एक बड़े समारोह के साथ इस संघ को मूर्त रूप दिया गया। दोनों आचार्य व उपाचार्य श्री को चादरें समर्पित की गई। आचार्य श्री आत्मारामजी महाराज वृद्धावस्था के कारण सम्मेलन में उपस्थित नहीं हो सके थे, उन्होंने श्री शुक्लचंदजी महाराज को अपना प्रतिनिधि घोषित किया और सम्पूर्ण पंजाब प्रान्त का दायित्त्व उनको सौंप दिया गया।

इसलिए सम्मेलन में आचार्य श्री की चादर आपको प्रदान की गई कि जब आप पंजाब पहुँचे तो यह चादर आचार्य भगवन्त को सौंप दी जाए। मार्गशीर्ष शुक्ला रविवार वि. सं. 2011 को लुधियाना के 'बाग खजान्वियों' के विशाल मैदान में आयोजित भव्य समारोह में आपने पंजाब व राजस्थान के स्नेही साथी मुनिराजों, साध्वीमंडल व अपार जनसमूह के मध्य आचार्य श्री आत्मारामजी महाराज को आचार्यत्व की प्रतीक चादर श्रद्धा-भक्ति व विनय सहित समर्पित की।

श्रमण संघ के प्रति गहरी आस्था व अथाह प्रेम आपके हृदय में विद्यमान था। संघ संगठन के लिए शरीरिक असमर्थता होते हुए भी सादड़ी, भीनासर व अजमेर सम्मेलन में पधारकर अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

ईस्वी सन् 1966 में आचार्य सम्राट श्री आनन्दऋषिजी महाराज के पंजाब पदार्पण पर अम्बाला में भव्य व ऐतिहासिक स्वागत समारोह आपश्री के सान्निध्य में हुआ। संघीय बैठक में आपने विशाल हृदय से श्रमण संघ के अभ्युत्थान के लिए अपना पद त्याग करने की उदारता प्रकट की।

आपश्री ने समाज को, अपनी बहु आयामी अभिनव दृष्टि देकर सेवा व शिक्षा के प्रति सचेत किया। लेखक, कवि और सफल वक्ता होने के साथ आपके हृदय में समाज के प्रति हित विद्यमान था। आपने केवल धर्मोपदेश ही नहीं दिया अपितु सामाजिक आवश्यकता को भी ध्यान में रखकर उसे पूर्ण करने का प्रयत्न किया। रचनात्मक संस्थानों के माध्यम से आप व्यक्ति को धर्म की ओर आकृष्ट करने का उपाय स्वीकार करते थे। अपनी प्रेरणाओं से शिक्षा निकेतन, पुस्तकालय, साहित्य, प्रकाशन, औषधालय और धर्म संस्थान आदि जन सेवा की प्रतीक संस्थाओं को स्थापित किया।

सत्य की खोज के साथ-साथ जीवनपर्यन्त भारत के सभी अंचलों पंजाब (पूर्वी पश्चिमी) दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र में पदयात्रा करके समाज में पनपी कुरीतियों व बुराईयों का उन्मूलन किया।

सहिष्णुता व शान्ति का मसीहा दिनांक 29 फरवरी 1968 को समाधिभाव से अपने पौद्गलिक देह का जलंधर शहर में विसर्जन कर अनन्त चेतना में विलीन हो गया।

आज पौद्गलिक शरीर से वे हमारे मध्य नहीं हैं, लेकिन यशस्वी शरीर से हमारे मध्य हैं। ऐसी पावन चेतना के प्रति उनको सश्रद्ध प्रणाम! ❖❖

साभार :- तत्त्वार्थ सूत्र ...

प्रथम अध्याय : ज्ञान

– विद्या वाचस्पति, आगम रत्नाकर, प्रवर्तक पू. श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.

1. नाम निक्षेप – जिस पदार्थ में जो गुण नहीं है लोक व्यवहार के लिए अपनी इच्छा से जो संकेत निश्चित कर दिए जाते हैं, वे नाम निक्षेप कहलाते हैं। जैसे किसी का नाम 'ज्ञानेन्द्र' रख दिया। परन्तु उसमें ज्ञान है ही नहीं। अतः वह नाममात्र से ज्ञानेन्द्र है, वास्तव में वह ज्ञानेन्द्र है नहीं। नाम निक्षेप में क्रिया अर्थ और गुण अर्थ नहीं देखा जाता, वहाँ तो केवल इस शब्द का संकेत किस अर्थ के साथ है, यह देखा जाता है।

2. स्थापना निक्षेप – इसमें जो पदार्थ विद्यमान नहीं है उसे, दूसरे जो पदार्थ उपस्थित हैं, उनके साथ सम्बन्ध या मनोभाव को जोड़कर आरोप कर दिया जाता है। इस प्रकार का आरोपण जहाँ होता है, वहाँ ऐसी मनोभावना होने लगती है कि 'यह वही है'। जैसे शतरंज के पासों को लोग घोड़ा, ऊँट, हाथी, बादशाह, वजीर, पैदल इत्यादि मानकर शतरंज-खेल खेलते हैं। इसी प्रकार किसी देव-देवी, महापुरुषों की मूर्ति, चित्र आदि बनाकर उसे देव-देवी, महापुरुष आदि मान लेते हैं। पहले प्रकार का स्थापना निक्षेप तदाकार है। स्थापना निक्षेप में सदृशता की अपेक्षा मनोभावों का होना आवश्यक है। जनसामान्य की मानसिक भावना जहाँ हो जाती है, वहीं स्थापना-निक्षेप माना जाता है।

3. द्रव्य निक्षेप। इस निक्षेप में भूत अथवा भविष्यकाल की घटनाओं या स्थितियों की प्रमुखता रहती है। किसी अनुपस्थित पर्याय की किसी पदार्थ में योग्यता देखकर उस अनुपस्थित पर्याय के नाम से उस पदार्थ को कहना द्रव्य निक्षेप है। उदाहरण के लिए राजगद्दी से उतर जाने वाले को भी राजा मानना, आगामी राजा बनने वाले राजपुत्र को राजा मानना, इसी प्रकार राजगद्दी के जिस व्यक्ति की तैयारी चल रही हो, उसे राजा कहना। इन तीन स्थितियों में एक भी स्थिति का सम्बन्ध वर्तमान में नहीं।

4. भाव निक्षेप। इस निक्षेप में वर्तमान पर्याय की प्रधानता रहती है। वर्तमान पर्याय से युक्त पदार्थ को भाव निक्षेप कहा जाता है। यानि किसी पदार्थ की पर्याय जैसे पूर्ण उपस्थित हो, वैसे अर्थ वाला उस पदार्थ का नाम यदि रखा जाए तो वह भाव निक्षेप है। जैसे- जल को जल कहना, जल को गर्म कर जब वह वाष्प रूप में आ जाए तब उसे वाष्प कहना, इसी प्रकार जल जब जम जाए तो उसे बर्फ कहना।

निक्षेप के चारों प्रकार ज्ञेय पदार्थ की अपेक्षा से हैं। इन निक्षेपों का प्रयोजन यह है कि पदार्थ के स्वरूप को समझते समय कोई नाम को ही भाव न समझ ले, या स्थापना को ही भाव न समझ ले, अपितु वह पदार्थ के यथार्थ स्वरूप को समझे।

प्रमाण और नय

प्रमाणनयैरधिगमः ।।6।।

अर्थ-प्रमाण और नयों को द्वारा जीवाजीवाढ़ि पढ़ार्थों का ज्ञान प्राप्त होता है।

विवेचन – तत्त्व को जानने-समझने के उपाय हैं- प्रमाण और नय। ये दोनों तत्त्व परीक्षा के प्रमुख साधन हैं। प्रमाण के माध्यम से सम्पूर्ण पदार्थों को, उनके अनेक अंशों को जानकर पदार्थ-स्वरूप को समझा जाता है। जबकि नय के द्वारा पदार्थ के एक अंश का बोध होता है। प्रमाण के दो भेद निरूपित हैं – **प्रत्यक्ष प्रमाण** और **अप्रत्यक्ष प्रमाण।** जो ज्ञान बिना मन-इन्द्रियों की सहायता से सीधा आत्मा से होता है, वह प्रत्यक्ष प्रमाण है। परोक्ष या अप्रत्यक्ष प्रमाण में मन, इन्द्रियों आदि की सहायता अपेक्षित होती है।

'नय' का यह लक्षण है कि वह प्रमाण द्वारा निरूपित पदार्थ के स्वरूप का विशेष कथन करता है। जैसे 'मनुष्य है' यह सामान्य कथन प्रमाण है लेकिन इस मनुष्य के हाथ, पाँव, आँख, नाक आदि अंगों-उपांगों की अपेक्षा विशेष-विशेष कथन नय के द्वारा ही सम्भव है। इस प्रकार के पदार्थ में जो अनन्त धम (गुण) होते हैं, उनमें से किसी एक धर्म (गुण) के द्वारा पदार्थ का निश्चय करना नय और अनेक धर्मों (गुणों) द्वारा पदार्थ का अनेक रूप से निश्चय करना प्रमाण है। इसे इस तरह से भी कहा जा सकता है कि नय पदार्थ को एक दृष्टि से ग्रहण करता है और प्रमाण अनेक दृष्टियों से पदार्थ

को ग्रहण करता है। इसे संक्षिप्त में इस प्रकार समझा जा सकता है -

पदार्थों को जानने के उपाय

प्रमाण	नय
* सच्चा ज्ञान	* श्रुतज्ञान का अवयव (अंश)
* पदार्थ के सर्वदेशों का बोध कराता है।	* पदार्थ के एकदेश का बोध कराता है।

निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणस्थितिविधानतः ।।7।।

अर्थ-निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण, स्थिति, विधान-इनके द्वारा सम्यग्दर्शनाढ़ि एवं जीवाढ़ि तत्त्वों का सविस्तार ज्ञान होता है।

विवेचन- इस सूत्र में प्रमाण और नय के द्वारा जाने गए जीवादि तत्त्वों को जानने का अन्य उपाय बताया है। पदार्थ का यथार्थ ज्ञान तो प्रमाण और नय से ही है किन्तु इनमें ये उपरोक्त छह उपाय उपयोगी होते हैं। इनसे उस पदार्थ की सम्पूर्ण जानकारी में सहायता मिलती है। पदार्थ को जानने के छह उपाय निम्नलिखित हैं-

1. निर्देश - इसमें पदार्थ के नाम का मात्र कथन होता है। जैसे यदि सम्यग्दर्शन को जाना जाए तो उसके विषय में निर्देश आदि छह उपाय घटित होने चाहिए। तत्त्व अथवा आत्म प्रतीति-रुचि सम्यग्दर्शन का स्वरूप है यानि तत्त्वार्थ की श्रद्धा सम्यग्दर्शन है, यह निर्देश है।

2. स्वामित्व - स्वामित्व का तात्पर्य अधिकारी से है। सम्यग्दर्शन का अधिकारी जीव है, अजीव नहीं। इसलिए सम्यग्दर्शन का स्वामित्व जीव है।

3. साधन - सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति का कारण साधन है। इसके दो भेद हैं- अंतरंग और बहिरंग। सम्यग्दर्शन के अन्तरंग कारण हैं-दर्शनमोहनीय कर्म (मिथ्यात्त्व आदि तीन प्रकृतियाँ) तथा चारित्रमोहनीय कर्म (अनन्तानुबंधी, क्रोध-मान-माया-लोभ-ये चार प्रकृतियाँ) का क्षय, उपशम, क्षयोपशम तथा बहिरंग कारण (साधन) है शास्त्र पढ़ना, गुरु-उपदेश सुनना, जातिस्मरण ज्ञान आदि।

4. अधिकरण। सम्यग्दर्शन का आधार तो जीव (आत्मा) ही है क्योंकि उसे ही सम्यग्दर्शन होता है। अतः जीव ही उसका अधिकरण है।

5. स्थिति। सम्यग्दर्शन की काल-मर्यादा स्थिति स्पष्टतः बतलाई गई है। औपशमिक सम्यग्दर्शन की स्थिति एक मुहूर्त्त मात्र है और क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन की उत्कृष्ट स्थिति छियासठ सागरोपम है। इसी प्रकार औपशमिक सम्यग्दर्शन सान्त है क्योंकि वह होकर भी स्थिर नहीं रहता और क्षायिक सम्यग्दर्शन अनन्त है क्योंकि वह एक बार प्राप्त होने पर कभी नहीं छूटता। वह मुक्त हो जाने पर भी जीव के साथ सिद्धावस्था में बना रहता है।

6. विधान। सम्यग्दर्शन के भेद आदि को विधान कहा गया है। सम्यग्दर्शन के अनेक भेद हैं- निसर्गज, अधिगमज, निश्चय, व्यवहार, द्रव्य, भाव, पौद्गलिक, अपौद्गलिक, क्षायिक आदि।

सम्यग्दर्शन को जानने के छह उपाय

निर्देश	स्वामी	साधन	अधिकरण	स्थिति	विधान
(स्वरूप) तत्त्व रुचि	(मालिक) जीव	(उत्पत्ति का कारण) दर्शनमोहनीय कर्म का उपशम, क्षयोपशम और क्षय	(आधार) जीव	(काल) जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट सादि अनन्त	(भेद) औपशमिक, क्षायोपशमिक और क्षायिक

इस प्रकार इन षड् उपायों से सम्यग्दर्शनादि तथा जीवादि तत्त्वों का ज्ञान-परिज्ञान होता है।

(... क्रमशः)

विकट समस्याओं से समाधान की ओर

– **जसवंत जैन,** राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष एवं विश्वस्त मण्डल सदस्य-जैन कॉन्फ्रेंस, दिल्ली

सूरत में युग प्रधान आचार्य ध्यान योगी, पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. ने जब जैन कॉन्फ्रेंस के विवाद को अपने सान्निध्य में हल कर दिया तो ज़ोन प्रथम से श्रीमान् आनंदमलजी छल्लाणी जैन को जैन कॉन्फ्रेंस का राष्ट्रीय अध्यक्ष घोषित किया गया। यह बात सितम्बर माह 2021 की है, तब जब आप पहली बार शपथ लेने के बाद जैन भवन पधारें तो मुझ सहित अनेक समाजसेवी आपके साथ थे।

जब हमने जैन भवन को चारों ओर से घूमकर देखा तो सिर पकड़ लिया। एक समस्या हो तो कहें, यहाँ तो समस्याओं का जाल बिछा हुआ था। जैन भवन जर्जर अवस्था में पहुंचा हुआ था। पद ग्रहण के पश्चात् यह निश्चय किया कि चाहे जो हो हम सबने मिलकर जैन भवन का ही नहीं जैन कॉन्फ्रेंस का भी कायापलट करना है। मुझे तब अच्छी तरह से याद है कि किस प्रकार की स्थिति में जैन कॉन्फ्रेंस फसी हुई थी। संस्था की छवि धूमिल हो चुकी थी। उस छवि को पुनः उभारने के लिये जो कुछ परिश्रम हम लोग कर रहे थे, उससे जो हमारे विपक्ष में खड़े हुये हमारे ही भाई थे वे प्रसन्न नहीं थे। उन्होंने पहले झूठी, सच्ची आलोचनाओं को अपनी चर्चा का आधार बनाया और यह तक कहा कि देख लेना जैन कॉन्फ्रेंस धूमिल हो जाएगी, ये टीम काम नहीं कर पाएगी। हम भी सुनते थे, क्योंकि समस्याएं ही इतनी थी। पग-पग पर हमें लग रहा था कि एक भी जगह चूके तो बाजी पलट जाएगी, लेकिन दानवीर आगे आए, हमने प्रयास किये और आदरणीय अध्यक्ष महोदय श्री आनंदमल जी छल्लाणी जैन और उनके बाद युवा नेता राष्ट्रीय महामंत्री भाई अतुल जी जैन ने हम सबको ऐसे काम में लगा दिया कि देखते-देखते कायापलट हो गई।

बदला कहा से परिदृश्य : सबकुछ ठीकठाक चल रहा था, हमने सद्भावना के नाते विधान में परिवर्तन करने की सूचना दी तो जिन लोगों को बाधा उपस्थित करनी थी, वे उसके खिलाफ कोर्ट में चले गये और वहाँ से नित-नई चुनौतियाँ देने लगे। हमने चुनौतियों को चिन्ता या चर्चा का विषय न बनाते हुए चिन्तन करना प्रारंभ किया और हर बात का शालीनता से जवाब दिया। एक के बाद एक कई मुकदमें हमने देखें। एक पूर्व माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष के द्वारा कोर्ट में जो भी चुनौतियाँ दी गई, उनका हमने शांतिपूर्ण जवाब दिया। जब वे अपने प्रयासों में सफल नहीं हो पाए तो हमने देखा कि जैन भवन के व्यवस्थापन में पुरानी देनदारियों संबंधी भी कुछ त्रुटियाँ है, जैसे सन् 2010 से बिजली, पानी के हजारों रुपये बकाया खड़े हुए थे, जिनका भुगतान ही नहीं किया गया था। प्रापर्टी टैक्स भी इसी प्रकार विकराल रूप लिये हुए सामने खड़ा था। आज हमें यह कहते हुए खुशी है कि हमारी टीम ने विकट समस्याओं का समाधान करते हुए सभी प्रकार के कुछ कर्जो को उतार दिया है।

एक और बात मैं अवश्य कहना चाहूँगा कि जब उन्हीं लोगों की सह पर कुछ अन्य लोगों ने भी अपने-अपने कारणों से हमें मुकदमों में उलझाने और हमारी गति को रोकने का भरपूर प्रयास किया, लेकिन हम आज यह बात देव-गुरु-धर्म की कृपा से कह सकते हैं कि सब प्रकार की समस्याएं ही नहीं विकट समस्याओं से समाधान पाते हुए हम कुछ ही दिनों बाद नये नेतृत्व, नये परिवर्तन, नई आशाओं के साथ समाज के समक्ष उपस्थित होंगे और जो कुछ किया है, उसे समाज के बच्चे-बच्चे को बताने के लिए तत्पर होंगे।

अंत में मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि बन्धुओं जैन कॉन्फ्रेंस न केवल हमारी है बल्कि आपकी भी है। इस संस्था का भविष्य हम सबको मिलकर संवारने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा न करके यदि हम बाहरी मुकदमे बाजी में उलझे रहेंगे तो आपकी ऊर्जा भी क्षीण होगी, संस्था को भी आर्थिक एवं प्रतिष्ठाजन्य नुकसान होगा और समाज के हित में जो विकास के कार्य होने चाहिए उनकी भी गति रूकेगी। चूंकि मैं कोर्ट कचहरी के मामलों में आदरणीय बन्धु श्री जयप्रकाश जी ललवानी के साथ प्रयासरत रहा हूँ इसलिए मैं यह कह सकता हूँ कि विवादों को खड़ा करना बहुत आसान बात है, लेकिन विकट समस्याओं से समाधान पाकर समाज के सामने अपनी उज्ज्वल छवि के साथ जाना बहुत बड़ी बात है, इसका स्मरण सभी को रखना चाहिए, इन्हीं शब्दों के साथ मैं आव्हान करूंगा कि आओ मिलकर साथ चलें और संस्था को उन्नत बनाने का कार्य करें। ❖❖

गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस 21 नवम्बर से 20 दिसम्बर 2024 तक

मंगलमय जन्म दिवस

साधकरत्न श्री फूलचंदजी म.सा.	26 नवम्बर
महामंत्री श्री सौभाग्यमुनिजी म.सा.	08 दिसम्बर
उप-प्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म.सा. 'वागीश'	10 दिसम्बर
युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा.	14 दिसम्बर
अध्यात्म योगी श्री ज्येष्ठमलजी म.सा.	18 दिसम्बर
आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा.	03 दिसम्बर
खद्दरधारी श्री गणेशलालजी म.सा.	09 दिसम्बर
पूज्य प्रवर्तक श्री अम्बालालजी म.सा.	09 दिसम्बर
प्रवर्तक श्री शांतिस्वरूपजी म.सा.	11 दिसम्बर

मंगलमय दीक्षा दिवस

आचार्य श्री काशीरामजी म.सा.	22 नवम्बर

पुण्य स्मृति दिवस

युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा.	22 नवम्बर
जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा.	09 दिसम्बर
स्वामीवर्य श्री बुधमलजी म.सा.	16 दिसम्बर

हम सभी गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस तप-त्याग एवं सामायिक आराधन, धर्माचरण, आयम्बिल-एकासना दिवस के रूप में मनाकर गुरु भगवंतों के श्रीचरणों में अपनी श्रद्धा भक्ति का परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण कर स्वयं के जीवन को सुरभित करें ।

नवम्बर 2024 माह में सम्पन्न कार्यों की प्रगति रिपोर्ट ...

जैन कॉन्फ्रेंस की साधु-साध्वीवृन्द की सेवार्थ गठित राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा समर्पण भावों के साथ जारी सेवा कार्यों का प्रेरणात्मक विवरण

बैंगलुरु (कर्नाटक) : जैन कॉन्फ्रेंस की अति महत्वपूर्ण वैय्यावच्च योजना द्वारा सेवा कार्यों को पूर्व की भांति नवंबर माह में सेवा प्रदान की है। हर प्रांत की वैय्यावच्च समितियों ने स्थानीय श्रीसंघ और उनके पदाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सम्पूर्ण देश में वैय्यावच्च गतिविधियों के माध्यम से पूज्य गुरु भगवंतों के लिए सेवा कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है।

वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, राष्ट्रीय योजना अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन के सामूहिक सद्प्रयासों से गुरु भगवंतों की वैय्यावच्च संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नवम्बर माह में विभिन्न सिंघाड़ों के सेवादारों को 1,55,000 रुपये की धनराशि मासिक वेतन के रूप में प्रदान की है। संत-सतीवृंद के स्वास्थ्य हेतु दवाइयों के रूप में 54,000 रुपये की धनराशि योजना के माध्यम से खर्च की है। इस प्रकार कुल 2,09,000 रुपये की धनराशि वैय्यावच्च गतिविधियों में नवम्बर माह में सेवार्थ खर्च की गई। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन, वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री मनोहरलालजी लोढ़ा जैन आदि की टीम की ओर से तहेदिल से आभार।

VAYYAVACCH YOJANA ACCOUNT

SHRI ALL INDIA S. S. JAIN CONFERENCE
CANARA BANK BRANCH
GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001
ACCOUNT NO - 0270101137280
IFSC CODE : CNRB0000270

❖❖

जैन कॉन्फ्रेंस अल्पसंख्यक योजना द्वारा किये गये कार्य

- राजेन्द्र कुमार ओस्तवाल

नई दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस के लिए बड़े ही हर्ष का विषय है कि हमें जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष आनंदमलजी छल्लाणी जैन के नेतृत्व में कार्य करने का मौका मिला। श्री आनंदजी ने जैन कॉन्फ्रेंस की तरक्की एवं उत्थान के लिए तन-मन-धन एवं समय लगाया है। आज नई दिल्ली में जैन भवन की जगमगाती इमारत दिख रही है। जैन कॉन्फ्रेंस की सभी योजनाओं के अध्यक्ष एवं मंत्री तथा उनकी पूरी टीम ने रात-दिन एक करके बखूबी कार्य किया है। आनंदजी ने जैन कॉन्फ्रेंस में आंतरिक रूप से तकनीकी एवं सभी योजनाओं के द्वारा एवं बाहरी रूप से जैन भवन को चमका दिया है। आने वाले दशकों में आने वाली पीढ़ी उनका यह कार्यकाल स्वर्णिम इतिहास के नाम पर रेखांकित पाएगी।

जैन कॉन्फ्रेंस अल्पसंख्यक योजना के अंतर्गत किए गए कार्यों के रूप में हमारी पूरी टीम ने पिछले 2 वर्षों तक बहुत कार्य किये, जो इस प्रकार है : -

1. जब से आनंद जी ने चेन्नई में 29-30 नवंबर को शपथ ग्रहण किया था तब से उन्होंनें सबसे पहले हमें जैन कॉन्फ्रेंस के आजीवन सदस्य बनने पर जोर दिया गया था, जिसमें राजेंद्र कुमार ओस्तवाल के नेतृत्व में ब्यावर में लगभग 136 सदस्य बनाए गए जो मेरे हिसाब से राजस्थान में सबसे ज्यादा बनाए गये हैं।
2. जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से आनंदमलजी के नेतृत्व में जो भी मीटिंग आयोजित की गई, उसमें लगभग 100 प्रतिशत मेरे और अर्पितजी की उपस्थिति रही एवं हर मीटिंग में भाग लिया चाहे ज़ूम ऐप पर या फेस टू फेस मीटिंग हो।
3. पिछले वर्ष मारवाड़ राजस्थान में जहाँ गुरु भगवन्त विराजमान हो वहाँ दर्शन हेतु गुरु दर्शन यात्रा का प्रवास किया गया, जिसमें श्रमण संघ के विराजित सभी साधु-साध्वी भगवन्तों का दर्शन किया एवं सेवा का लाभ लिया।
4. अल्पसंख्यक योजना के अंतर्गत राष्ट्रीय कार्यकारिणी विस्तार के अंतर्गत हमने हर ज़ोन और पूरे भारतभर में लगभग हर क्षेत्र से संविधान के नियम अनुसार कार्यकारिणी सदस्य बनाएं।
5. राष्ट्रीय स्तर पर युवा शाखा एवं महिला शाखा का गठन किया गया।
6. अल्पसंख्यक योजना का सामूहिक रूप से (श्रावक संघ शाखा, महिला शाखा एवं युवा शाखा) द्वारा संयुक्त रूप से लगभग तीन बार पूरी कार्यकारिणी गठित कर मीटिंग आयोजित की गई एवं भविष्योंन्मुखी कार्यों को करने के लिए योजनाएँ बनाई गई।
7. अल्पसंख्यक योजना द्वारा एक बुकलेट प्रकाशित किया गया, जिसमें अल्पसंख्यक योजना के सरकारी योजना का उल्लेख किया गया जिससे राज्य एवं केन्द्रीय सरकारी योजनाओं को बताया गया था, इसका व्हाट्सऐप पर पीडीएफ भी भेजा गया।
8. सभी सदस्य जो जैन कॉन्फ्रेंस के आजीवन सदस्य है उनके लिए जैन कॉन्फ्रेंस अल्पसंख्यक योजना के इतिहास में विस्तृत रूप से एक ऑनलाइन सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि अल्पसंख्यक योजना के चेयरमेन इकबालजी लालपुरिया एवं चीफ जस्टिस श्री नरेन्द्र कुमार जैन तथा श्री संदीपजी, श्री ललितजी गांधी (जैन अल्पसंख्यक योजना) से एवं इसके साथ ही हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष आनंद जी छल्लाणी स्वंय उपस्थित थे। उस सेमिनार में लगभग 320 व्यक्ति जुड़े हुए थे सभी ने अल्पसंख्यक योजना से मिलने वाली योजना के लाभ की जानकारी प्राप्त की।
9. सभी अल्पसंख्यकों योजना के पदाधिकारियों, श्रावक संघ एवं महिला शाखा, युवा शाखा के लिए एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें हमें किस प्रकार अल्पसंख्यक योजना का कार्य करके लोगों को लाभ दिलाने एवं जानकारी देने के लिए कराया था, जिसमें शिविर को भारती जैन संगठन के राष्ट्रीय माईनोरिटी संयोजक निरंजन

जी जुवां जैन ने संबोधित किया।

10. ब्यावर, उदयपुर, लुधियाना प्रमुख स्थानों पर अल्पसंख्यक योजना के प्रमाण पत्र बनाने के शिविर लगाए गए एवं उनका प्रमाण पत्र बनाकर लाभ दिया गया जिसे उन्हें सरकारी लाभ मिल सके।

11. जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा आयोजित आचार्य सम्राट आनंदऋषिजी म.सा. के सान्निध्य में पूरे भारत में आयोजन के अंतर्गत Çloj esHh250 आयम्बिल तप की अराधना एवं अल्पसंख्यक योजना द्वारा लगभग 750 पूरे भारत भर में कराए गए।

12. EWS के प्रमाण पत्र बनाने हेतु शिविर लगाया गया ताकि EWS के व्यापार, शिक्षा एवं चिकित्सा के लिए लोन मिल सके।

13. जैन कॉन्फ्रेंस अल्पसंख्यक योजना के अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार के लिए अल्पसंख्यक के लाभ के प्रचार के लिए सोशल मीडिया जैसे Youtube, Facebook, Whats App Group, Instagram, बैनर पोस्टर वीडियो बनाकर प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

14. जैन भवन में लगी हुई माइनोरिटी पोस्टर में नाम जो बाहर ही प्रदर्शित है यह जैन कॉन्फ्रेंस अल्पसंख्यक योजना द्वारा ही बनाया गया है।

15. कर्नाटक गज केसरी एवं खाद्दरधारी प्रेरक श्री गणेशीलालजी म.सा. की 62वीं पुण्यतिथि के अवसर पर 9 फरवरी 2024 को जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर पर उपवास तप की अराधना के अन्तर्गत ब्यावर में 28 उपवास एवं पूरे भारत भर में अल्पसंख्यक योजना द्वारा 124 उपवास व्रत की अराधना हुई।

16. भविष्य में और भी कार्यविधि एवं पद्धति चलती रहेगी।

हमारे कार्यों में किसी प्रकार की कमीं रह गई हो या हमारे किसी कार्य को करने में मन-वचन-काया से किसी के मन को ठेस पहुँची हो तो क्षमा माँगता हूँ।

मन की बात - जैन कॉन्फ्रेंस एंव जैन भवन के हुए विकास कार्य।

- डॉ. अर्पित छाजेड़, ब्यावर (राजस्थान)

मैं आनंदमलजी छल्लाणी जैन एवं उनकी पूरी टीम के लिए कुछ कहना चाहूँगा। श्री राजेंद्र ओस्तवाल जी जैन के नेतृत्व में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक योजना के अंतर्गत कार्यक्रम की जानकारी तथा श्री आनंदमल जी छल्लाणी जैन द्वारा एवं उनकी पूरी टीम के कार्यो के लिए मैं कुछ कहना चाहूँगा।

आनंद जी एवं उनकी पूरी कार्यकरिणी टीम ने अपने कार्यकाल में हुए सफल कार्यक्रम :

1. वैय्यावच्य योजना का सफलतम एवं अद्वितीय, ऐतिहासिक कार्य हुआ, **2.** CSR में जैन कॉन्फ्रेंस के रजिस्ट्रेशन का कार्य हुआ, **3.** माइनॉरिटी में रजिस्ट्रेशन का कार्य हुआ, **4.** QR कोड का कार्य हुआ, जिससे (डिजीटल पेमेंट की सुविधा सुचारू हो पाई।), **5.** संस्था की वेबसाइट का निर्माण का कार्य हुआ, **6.** कैलेंडर का प्रतिवर्ष प्रकाशन का कार्य हुआ, **7.** जैन भवन की दिशा एवं दशा का विकास हुआ, **8.** जीवदया योजना में ऐतिहासिक पूर्ण कार्य करके जीवदया के क्षेत्र को आगे बढ़ाया, **9.** मानव सेवा योजना, विहार सेवा योजना, जीवन प्रकाश योजना, सभी योजना में उमदा एवं जबरदस्त कार्य हुआ, **10.** अल्पसंख्यक योजना के द्वारा लोगों को सरकारी योजनाओं की जानकारी देकर जागरूक करना एवं लोगों को इसका फायदा पहुँचाये जाने का कार्य हुआ, **11.** महिला शाखा, युवा शाखा ने विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा जैन कॉन्फ्रेंस को जन-जन तक पहुँचाया, **12.** तकनीकी माध्यम से सभी कार्यों को System से करने का हुआ, **13.** जैन भवन एवं जैन कॉन्फ्रेंस को कानूनी रूप से मजबूत Documents बनाने का कार्य हुआ, **14.** संविधान का नवनिर्माण का कार्य हुआ, जोकि कोर्ट में अभी लंबित है, **15.** पूरी व्यवस्था को Systemmatic तरीके से पूर्ण करना का प्रयास हुआ, **16.** किराएदारी प्रक्रिया का कानूनी

रूप से जल्द निवारण का प्रयास जारी है, **17.** जैन प्रकाश पत्रिका का सुंदर एवं अच्छे लेखो के प्रकाशन का कार्य हुआ, **18.** इसके अलावा सबसे ज्यादा Donation इसी कार्यकाल में आया।

आज जैसे ही मैं जैन भवन में लगभग 6 महीने के अंतराल में आया तो देखा कि कोई 5 स्टार होटल में तो नहीं आ गया हूँ या फिर किसी दूसरे स्थान पर पर तो नहीं आ गया। जैन भवन की दशा-दिशा एवं दृश्य ही बदल गया है। यही सभी अंसभव का संभव कार्य आनंदमल जी छल्लाणी जैन, अतुल जी जैन एवं पूरी टीम तथा श्री जयप्रकाशजी ललवानी जैन, श्री जसवन्त जी जैन जी का पूरा योगदान है।

ऐसा राष्ट्रीय अध्यक्ष मिलना बहुत सौभाग्य की बात है कि इतने साधारण व्यक्तित्व के धनी हैं कि आप में से कोई भी छोटा कार्यकर्ता डायरेक्ट फोन से बात कर लेंगे एवं इतनी मधुर एवं शालीनता से बात करते हैं कि मैं अपने शब्दों में बयाँ नहीं कर सकता। आपके हनुमान जो इतनी कुशाग्रता से कार्य करते हैं कि जिस किसी भी कार्य को हाथ में लेते हैं उसे छोड़ने का नाम नहीं लेकर उसे सफलता के अंतिम छोर तक पहुँचा कर ही दम लेते हैं। ऐसे आनंद जी छल्लाणी के हनुमान श्री जयप्रकाशजी ललवाणी जैन, (चेन्नई) एवं अतुल जी जैन के हनुमान श्री जसवंतजी जैन, (नई दिल्ली) के लिए अनुमोदना।

समाचार प्रकाश

शिववाणी से लाभान्वित हो रहे हैं श्रद्धालु

सूरत (गुजरात) : दिनांक 1 अक्टूबर 2024 को सूरत के प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री आर.टी. वचानी दर्शन हेतु उपस्थित हुए। उनका शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन की ओर से स्मृति चिन्ह, माला, शॉल द्वारा स्वागत सम्मान किया। दिनांक 2 अक्टूबर 2024 को आचार्य भगवन के सान्निध्य में विश्व ध्यान दिवस आयोजित हुआ। विश्व ध्यान दिवस पर आचार्य भगवन, श्रमण संघीय मंत्री श्री शिरीषमुनिजी म.सा. द्वारा आत्म-ध्यान के विविध प्रयोग करवाए गये। अपने अंदर छिपे आनन्द ज्ञान सुख शांति का प्रयोगात्मक अनुभव साधकों को करवाया गया। विश्व ध्यान दिवस का लाईव प्रसारण पारस टीवी एवं जैनाचार्यजी यू-टयूब चैनल पर किया गया जिसका देश-विदेश में बैठे अनेकों श्रद्धालुओं ने लाभ लिया। दिनांक 3 अक्टूबर 2024 को गुड़गांव, भटिण्डा, श्री रमेश जैन अबोहर से सपरिवार आचार्यश्रीजी के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। दिनांक 5 अक्टूबर 2024 को योगाचार्य श्री राजकुमार शर्मा ने मधुबन अयोध्या से आचार्यश्रीजी के दर्शन लाभ प्राप्त किये। दिनांक 20 अक्टूबर 2024 को चेन्नई महासंघ के अध्यक्ष श्री सुरेश लुणावत अपने साथियों के साथ आचार्यश्रीजी के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। आचार्यश्रीजी के सान्निध्य हेतु निरंतर दर्शनार्थियों आवागमन चल रहा है, उनके ठहरने एवं भोजन की सुंदर व्यवस्था शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन की ओर से की जा रही है। प्रभु महावीर के निर्वाण कल्याणक एवं दीपावली के अवसर पर आचार्यश्रीजी दिनांक 29 अक्टूबर से चार दिवसीय मौन आत्म-ध्यान साधना में रहेंगे। दिनांक 2 नवम्बर को नव वीर निर्वाण संवत का मंगल पाठ किया गया।

शोक समाचार

श्रीमान् सुदेश कुमार जी जैन 'बिल्लू' का स्वर्गवास

फरीदकोट (पंजाब) : दिनांक 17 अक्टूबर 2024 को श्री फकीरचदंजी जैन 'बीजो वाले' के सुपुत्र श्रीमान् सुदेश कुमार जी जैन 'बिल्लू' का स्वर्गवास हो गया। आप देव-गुरु-धर्म के प्रति सच्ची निष्ठा रखते थे। आपके हृदय में मानवता कूट-कूट कर भरी थी। किसी असहाय का दुःख आपसे देखा नहीं जाता था। आप अपना घर आश्रम फरीदकोट में भी सेवाएं देते थे। आपका संपूर्ण परिवार आपके दिखाए सद्संस्कारों का भलीभांति अनुसरण करता है। भगवान आपकी आत्मा को शांति प्रदान करें।

आगामी कार्यकाल के लिए
आपकी सोच - हमारे संकल्प

हमारा काम, हमारा विगत कार्यकाल आपके समक्ष है। उसे आपने देखा है, जाना है और अपना स्नेह प्रदान किया है। हम इसी प्रगति और विकास को सतत बनाए रखना चाहते हैं।

- जैन कॉन्फ्रेंस की योजनाओं का संघ-समाज में प्रभाव सभी को ज्ञात है, इन्हें समर्थ बनाने हेतु एक विशाल फंड का संग्रह कर उसके इंटरेस्ट से योजनाओं का संचालन करेंगे, योजनाओं को समर्थ बनाएंगे।
- श्रमण संघ में स्वाध्याय और स्वाध्यायी की बढ़ोतरी के साथ ही ध्यान शिविरों का आयोजन करके भविष्य के धार्मिक, आध्यात्मिक विद्वानों को तैयार करना, विद्वानों का सम्मान करना हमारा लक्ष्य है।
- साधु-साध्वी हो या श्रावक-श्राविका, संयम यात्रा हो या जीवन यात्रा, हरेक को यथाशक्ति साता पहुंचाना, सहायता पहुंचाना हमारा संकल्प होगा।
- जैन कॉन्फ्रेंस अभी परिवर्तन, विकास और नई ऊंचाईयां छूने के कार्य कर रही है। हम इसे आपके सहयोग से और नई ऊंचाई पर ले जाना चाहते हैं।
- जैन धर्म में पांच पुण्यों का महत्व है। अन्न, औषधि, जीव दया, अनुकम्पा युक्त सहायता। हमारे जीवन का लक्ष्य प्रारम्भ से ये ही रहा है और यही रहेगा।
- ज्ञान प्रकाश, श्रुत संवर्धन वैसे तो एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। हमारा ध्येय वाक्य है 'पढमं नाण तवो दया'।
- श्रमण संघ में प्रचलित श्रमण भगवान महावीर की ध्यान पद्धति को आचार्य भगवन् के निर्देशानुसार घर-घर में पहुंचाना हमारा प्रथम लक्ष्य होगा।
- जैन कॉन्फ्रेंस की सदस्य संख्या 1,00,000 तक पहुंचाना, हर क्षेत्र के प्रतिभावान लोगों को खोजना, जोड़ना और उन्हें दायित्व देकर भविष्य का युवा नेतृत्व तैयार करना हमारा लक्ष्य है।
- महिला शाखा संगठन का विस्तार और सहभागिता अधिकारों सहित देकर जैन कॉन्फ्रेंस में प्रभावी बनाना हमारा लक्ष्य है।

उपरोक्त लक्ष्य हमारा ही नहीं, आपका भी सपना है। आओ इन्हें सच करें, साथ आएं, सहयोग और समर्थन प्रदान करें।

आओ संघ और समाज से कुटुम्बवाद, परिवारवाद, पक्षपात समाप्त करें।

जैन कॉन्फ्रेंस में एकाधिकार हटाओ, परिवर्तन लाओ।

Advt.

श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ

सूरत - आचार्य भगवंत पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज सा., मंत्री पूज्य श्री शिरीष मुनि जी महाराज सा. आदि ठाणा के दर्शनार्थ पधारे श्रद्धालुगण

चेन्नई : युवाचार्य भगवंत के चातुर्मास कृतज्ञता दिवस पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनन्दमल जी छल्लाणी चातुर्मास सह चेयरमैन भीकमचंदजी लुंकड का सम्मान करते हुए अन्य चित्र में चातुर्मास अध्यक्ष श्री सुरेशसा लुणावत आदि स्थानीय महानुभाव।

सादड़ी - श्रमण संघीय वयोवृद्ध महाश्रमणी श्री पुष्पवती जी म. के 100वें जन्मोत्सव शुभारंभ पर विश्वस्त मडल चेयरमैन श्री रमणलाल जी लुंकड, नेमीचंदजी चोपड़ा, अतुलजी जैन, सुनीलजी बाफना दिनेशजी भलगट, जेपी जी ललवाणी, श्रीमती पुष्पाजी गोखरु आदि जैन कॉन्फ्रेस वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

आनंदमल छल्लाणी जैन	अशोक मेहता जैन	अतुल जैन	पदमचंद कांकरिया जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक अतुल जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526 बेस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित